जेष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 153, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

# अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 30 जून 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

# महाराष्ट्र में आज ही फ्लोर टेस्ट

## सुप्रीम कोर्ट से उद्धव को राहत नहीं, जेल में बंद नवाब मलिक और अनिल देशमुख को वोटिंग की इजाजत

**नई दिल्ली: महाराष्ट्र** विधानसभा में कल फ्लोर टेस्ट होगा। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार शाम को 3 घंटे 10 मिनट तक चली सुनवाई के बाद यह फैसला दिया। शिवसेना ने फ्लोर टेस्ट के खिलाफ, जबकि शिंदे गुट और राज्यपाल के वकील ने फ्लोर टेस्ट के पक्ष में दलीलें पेश कीं। शाम 5 बजकर 18 मिनट से 8 बजकर 28 मिनट तक सभी पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। इधर, कोर्ट ने जेल में बंद महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री नवाब मलिक और अनिल देशमुख को भी वोटिंग में हिस्सा लेने की इजाजत दे दी।

कोर्ट ने कहा कि दोनों चुने हुए विधायक हैं और उन्हें विधानसभा में वोटिंग के बाद फिर जेल ले जाया जाएगा।

**राज्यपाल ने दिया था फ्लोर टेस्ट का आदेश:** महाराष्ट्र में 22 जून को सूरत से जिस राजनीतिक नाटक की शुरूआत हुई, उसके अहम डेवलपमेंट गुवाहाटी से लेकर गोवा में हुए, लेकिन क्लाइमैक्स अभी बाकी है। इस बीच महाराष्ट्र के राज्यपाल ने 30 जून को शाम 5 बजे तक फ्लोर टेस्ट कराने का आदेश दिया था। शिवसेना इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची थी।

**सिंघवी, कौल और मेहता ने रखीं दलीलें:** शिवसेना की तरफ से सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी कोर्ट में पेश हुए। वहीं, शिंदे गुट की तरफ से पेश हुए एडवोकेट नीरज किशन कौल ने पैरवी की। एडवोकेट मनिंदर सिंह कौल की दलीलों का समर्थन करने खड़े हुए। आखिर में राज्यपाल की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने दलीलें रखीं।

**शिवसेना फ्लोर टेस्ट के खिलाफ, शिंदे गुट समर्थन में:** इससे पहले सिंघवी ने फ्लोर टेस्ट पर आपत्ति जताते हुए दलील दी कि 16 बागी विधायकों को 21 जून को ही अयोग्य घोषित किया जा चुका है। ऐसे में इनके वोट से बहुमत का फैसला नहीं किया जा सकता। सिंघवी ने मांग की है कि या तो बहुमत का फैसला स्पीकर को करने दें या फिर फ्लोर टेस्ट टाल दें। वहीं, कौल ने कहा कि महाराष्ट्र में सरकार ही नहीं, उद्धव की पार्टी भी अल्पमत में आ चुकी है। ऐसे में हॉर्स ट्रेडिंग रोकने के लिए फ्लोर टेस्ट कराना ही सबसे बेहतर विकल्प है। इसे टाला नहीं जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शिंदे के साथ गए विधायकों ने शिवसेना नहीं छोड़ी है। बहुमत उनके साथ है, इसलिए वही असली शिवसेना हैं।

**सुप्रीम कोर्ट में नबाम रेबिया केस का जिक्र**

2016 में सुप्रीम कोर्ट ने अरुणाचल प्रदेश के बर्खास्त सीएम तुकी की अगुआई वाली कांग्रेस सरकार को बहाल करने का आदेश दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने गुवाहाटी हाईकोर्ट का फैसला बरकरार रखा।

हाईकोर्ट ने कांग्रेस के 14 बागी विधायकों को अयोग्य ठहराने पर रोक लगाई थी।

सीएम नबाम तुकी ने राज्यपाल को 14 जनवरी 2016 को विधानसभा सत्र बुलाने को कहा था, जबकि राज्यपाल ने दिसंबर 2015 में ही सत्र बुला लिया। इससे संवैधानिक संकट पैदा हो गया था। सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल के इस फैसले को गलत ठहराया।

विधानसभा अध्यक्ष नबाम रेबिया ने राज्यपाल के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

**शिंदे गुट गुवाहाटी से गोवा रवाना**

एकनाथ शिंदे अपने गुट के साथ गुवाहाटी से गोवा चले गए हैं। वहां होटल ताज कन्वेंशन में 71 कमरे बुक हैं। गुरुवार को ये लोग मुंबई निकलेंगे। उससे पहले, भाजपा ने बुधवार शाम अपने विधायकों की बैठक बुलाई, ताकि फ्लोर टेस्ट की तैयारी कर सके।

**सीएम उद्धव ने जताया सबका आभार**

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने बुधवार को कैबिनेट मीटिंग बुलाई। इसमें औरंगाबाद का नाम बदलकर संभाजी नगर करने का फैसला लिया गया। हालांकि, इस मीटिंग में उद्धव की बॉडी लैंग्वेज से ऐसा लगा कि वे चला-चली की बेला में हैं। उन्होंने अपने सहयोगियों को ढाई साल तक साथ रहने के लिए धन्यवाद भी दिया।

### फ्लोर टेस्ट पर सुप्रीम कोर्ट ने पहले क्या कहा था?

महाराष्ट्र के सियासी संकट पर सोमवार को भी सुप्रीम कोर्ट में करीब 2 घंटे सुनवाई हुई थी। सुनवाई के बाद कोर्ट ने महाराष्ट्र पुलिस, केंद्र सरकार, शिवसेना और डिप्टी स्पीकर को नोटिस जारी किया। सुनवाई में कोर्ट ने शिंदे गुट को कुछ राहत दी है, जबकि फ्लोर टेस्ट की मांग पर कोर्ट ने कुछ भी कहने से इनकार किया। शिवसेना के वकील देवदत कामत ने फ्लोर टेस्ट का जिक्र किया था, जिस पर कोर्ट ने कहा इस पर हम कुछ नहीं कह रहे हैं। अगर, ऐसा कुछ हुआ तो आप कोर्ट आ सकते हैं। शिंदे ने 16 विधायकों को सदस्यता रद्द करने के नोटिस और डिप्टी स्पीकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के मुद्दे को लेकर याचिका दाखिल की थी।

## कैबिनेट ने प्राथमिक कृषि ऋण समितियों के कम्प्यूटरीकरण को दी मंजूरी

**नई दिल्ली:** केंद्र सरकार ने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यरत 63 हजार प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) के कम्प्यूटरीकरण के लिए कुल 2,516 करोड़ रुपये के बजट परिव्यय को मंजूरी दी। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने कैबिनेट बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमण्डलीय समिति ने प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) की दक्षता बढ़ाने तथा उनके संचालन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही लाने और पैक्स को अपने व्यवसाय में विविधता लाने व विभिन्न गतिविधियां और सेवाएं शुरू करने की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) के कम्प्यूटरीकरण को मंजूरी दे दी है। इस परियोजना में कुल 2516 करोड़ रुपये के बजट परिव्यय, जिसमें भारत सरकार की हिस्सेदारी 1528 करोड़ रुपये की होगी, के साथ पांच वर्षों की अवधि में लगभग

63,000 कार्यरत पैक्स के कम्प्यूटरीकरण का प्रस्ताव है। उन्होंने कहा कि इससे 13 करोड़ किसानों को फायदा होगा, जिनमें अधिकांश छोटे और सीमांत किसान हैं। इस परियोजना में साइबर सुरक्षा और डेटा भंडारण के साथ क्लाउड-आधारित सामान्य सॉफ्टवेयर का विकास और पैक्स को हार्डवेयर सहायता प्रदान करना शामिल है। इससे मौजूदा रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण भी होगा। प्राथमिक कृषि सहकारी ऋण समितियां (पैक्स) देश में अल्पकालिक सहकारी ऋण (एसटीसीसी) की त्रि-स्तरीय व्यवस्था में सबसे निचले स्तर पर अपनी भूमिका निभाती हैं, जहां लगभग 13 करोड़ किसान इसके सदस्य के रूप में शामिल होते हैं और जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित होती हैं। देश में सभी संस्थाओं द्वारा दिए गए केसीसी ऋणों में पैक्स का हिस्सा 41 प्रतिशत (3.01 करोड़ किसान) है और पैक्स के माध्यम से इन केसीसी ऋणों में से 95 प्रतिशत (2.95 करोड़ किसान) छोटे व सीमांत किसानों को दिए गए हैं। अन्य दो स्तरों अर्थात राज्य सहकारी बैंकों (एसटीसीबी) और जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों (डीसीसीबी) को पहले ही नाबार्ड द्वारा स्वचालित कर दिया गया है और उन्हें साझा बैंकिंग सॉफ्टवेयर (सीबीएस) के तहत ला दिया गया है। हालांकि, अधिकांश पैक्स को अब तक कम्प्यूटरीकृत नहीं किया गया है और वे अभी भी हस्तचालित तरीके से कार्य कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप उनके संचालन में अक्षमता और भरोसे की कमी दिखाई देती है। कुछ राज्यों में, पैक्स का कहीं-कहीं और आंशिक आधार पर कम्प्यूटरीकरण किया गया है। उनके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे ।

## बिहार में ओवैसी को बड़ा झटका

**पटना:** बिहार की सियासत से बड़ी खबर आ रही है कि असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी में बड़ी टूट हो गई है। बताया जा रहा है कि एआईएमआईएम के पांच में से चार विधायक राजद में शामिल हो गए हैं। वहीं ओवैसी की पार्टी के चारों विधायकों के राजद में शामिल होने की खबर पर बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने भी मुहर लगा दी है। वहीं इस घटनाक्रम से पहले आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने बिहार विधानसभा के अध्यक्ष विजय सिन्हा के कमरे में एआईएमआईएम के चार विधायकों के साथ पहुंचकर मुलाकात की थी। इस दौरान जो पांचवें विधायक मौजूद नहीं थे वे थे ।

## उदयपुर: भारी भीड़ के बीच कन्हैया का अंतिम संस्कार हुआ

### पत्नी बोली- हत्यारों को फांसी दो, नहीं तो वे कई लोगों को मारेंगे

**उदयपुर:** राजस्थान के उदयपुर में टेलर कन्हैयालाल का बुधवार दोपहर अंतिम संस्कार कर दिया गया। शहर में कर्फ्यू के बाद उनकी अंतिम यात्रा में भारी भीड़ जुटी। लोगों ने हत्यारों को फांसी दो...फांसी दो के नारे लगाए। पूरा शहर कन्हैया की हत्या के विरोध में बंद रहा। किसी भी हालात से निपटने के लिए भारी संख्या में सुरक्षाबल तैनात किया गया था। इससे पहले पोस्टमार्टम के बाद जब उनका शव घर ले जाया गया, तो घर में कोहराम मच गया। बिलखती पत्नी ने कहा कि हत्यारों को फांसी की सजा दी जाए, नहीं तो ये लोग कई लोगों को मारेंगे।

**कन्हैया की हत्या कैसे और क्यों हुई?-** 10 दिन पहले नूपुर शर्मा के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट डालने वाले कन्हैयालाल का तालिबानी तरीके से मर्डर कर दिया गया। गौस और रियाज मंगलवार को दिनदहाड़े उसकी दुकान में घुसे। तलवार से कई वार किए और उसका गला काट दिया। दुकान में ईश्वर समेत दो और कर्मचारी मौजूद थे। पुलिस ने मंगलवार को दोनों आरोपियों गौस मोहम्मद और रियाज जब्बार को राजसमंद से अरेस्ट किया था। इनके अलावा 3 अन्य लोगों को भी पुलिस ने पकड़ा है। हत्याकांड की जांच अब एनआईए ने अपने हाथ में ले ली है और दोनों हत्यारों के खिलाफ अनलॉफुल एक्टविटी एक्ट समेत आईपीसी की कई धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। दोनों आरोपियों को मंगलवार शाम उदयपुर से सटे राजसमंद जिले के भीम इलाके से गिरफ्तार किया गया है।

## 'लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ रहा हूं राष्ट्रपति चुनाव'

**नई दिल्ली:** विपक्ष की ओर से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय वित्त और विदेश मंत्री रहे हैं। यशवंत सिन्हा भाजपा के वरिष्ठ नेता रहे हैं और उनके बेटे जयंत सिन्हा भाजपा के सांसद तथा पिछली मोदी सरकार में राज्यमंत्री रहे हैं। इन सबके बावजूद पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वह देश में लोकतंत्र को बचाने के लिए चुनाव मैदान में उतरे हैं।

**जीवन में कठिन संघर्ष किया, कभी परवाह नहीं की:** यह पूछने पर कि जब विपक्ष के कई बड़े नेताओं ने जब यह प्रस्ताव ठुकरा दिया, तो आपने यह हिम्मत कैसे दिखाई? पूर्व केंद्रीय मंत्री ने

बड़े सहज भाव से कहा कि मैंने बराबर जीवन में कठिन संघर्ष किया है। कभी यह चिंता नहीं की है कि स्थितियां मेरे अनुकूल हैं या नहीं।

**मेरी लड़ाई भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए है:** अपने बेबाक जवाब के लिए मशहूर रहे यशवंत सिन्हा ने कहा कि राष्ट्रपति का चुनाव लड़कर वह देश के लोकतंत्र की रक्षा करना चाहते हैं।

### उदयपुर मर्डर से चुनौती बढ़ी; जवान डेढ़ गुना बढ़ाए, आसमान से हमला हुआ तो हवा में ही सफाया

## अमरनाथ यात्रा में स्टिकी बम का खतरा

**नई दिल्ली:** 3,888 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बाबा अमरनाथ की यात्रा पर इस बार मिनटों में तबाही मचाने वाले स्टिकी बम का खतरा है। 43 दिन लंबी चलने वाली यह यात्रा दो साल बाद हो रही है। जम्मू-कश्मीर से धारा-370 के हटने के बाद भी यह पहली यात्रा है। कश्मीर के इंस्पेक्टर जनरल विजय कुमार ने भास्कर को कन्फर्म किया कि इस साल स्टिकी बम और ड्रोन अटैक दो बड़े खतरे हैं, लेकिन इन दोनों से बचने का पूरा प्लान भी तैयार है। ड्रोन का जवाब तो हवा में ही दिया जाएगा। मौके पर तैनात आर्मी अफसर ने ये

भी कहा कि उदयपुर की घटना के बाद चैलेंज बढ़ गया है, लेकिन अभी सब कुछ कंट्रोल में है। 30 जून से 11 अगस्त तक चलने वाली अमरनाथ यात्रा के लिए अब तक 3 लाख से ज्यादा लोग रजिस्ट्रेशन करवा चुके हैं। यात्रा दो साल बाद हो रही है, इसलिए श्रद्धालुओं का आंकड़ा पुराने रिकॉर्ड तोड़ते हुए 8 लाख तक पहुंच सकता है। पलहगाम से अमरनाथ तक यात्रियों को एक तरफ से करीब 46 किलोमीटर का सफर करना पड़ता है। इसमें तीन रातें रास्ते में बितानी होती हैं। वहीं बालटाल वाले दूसरे रूट से बाबा बफार्नी की गुफा तक की दूरी लगभग 14 किलोमीटर है। हालांकि इस रूट में बारिश और बर्फबारी का रिस्क होता है।

**खतरों से निपटने के लिए तैयारी क्या है:** अमरनाथ यात्रा में पहली बार केंद्र की 350 कंपनियां तैनात की गई हैं।

### रियाज जब्बार और गौस मोहम्मद नेपाल के रास्ते कराची गए, मौलाना से ट्रेनिंग ली

## उदयपुर: तालिबानी मर्डर का सामने आया पाक कनेक्शन

**जयपुर:** उदयपुर में हुए तालिबानी मर्डर के तार पाकिस्तान से जुड़ रहे हैं। नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए ) ने 8 से 10 मोबाइल नंबर ट्रेस किए हैं। इनकी लोकेशन पाकिस्तान से लेकर भारत में आ रही है। इन्हीं नंबरों पर रियाज जब्बार और गौस मोहम्मद की लगातार बातचीत भी हो रही थी। इस इनपुट ने खुफिया तंत्र के कान खड़े कर दिए हैं। प्रदेश के गृह राज्यमंत्री राजेंद्र सिंह यादव ने भी इस मामले को लेकर खुलासा किया है कि दोनों पाकिस्तान और अरब

देशों के लोगों से कॉन्टैक्ट में थे। इनके मोबाइल में पाकिस्तान और अरब देशों के नंबर मिले हैं। रियाज और गौस की पाकिस्तान के नंबरों पर खूब बातचीत होती थी। राज्यमंत्री ने इनके कराची में ट्रेनिंग लेने का भी दावा किया है। बताया गया कि दोनों ने 2014-15 में करीब 15 दिन की ट्रेनिंग ली थी। पाकिस्तान के आका के बुलावे पर दोनों वहां गए थे।

**फैला रहे थे नफरत की आग:** मंगलवार को उदयपुर में कन्हैयालाल की हत्या के बाद राजस्थान पुलिस के साथ ही खुफिया एजेंसियों में खलबली मच गई थी। जिस अंदाज में कन्हैयालाल को मारा गया, वह तालिबानी तरीका था। इसके बाद सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल कर आरोपियों ने अपने मंसूबे साफ कर दिए। एनआईए की जांच में गौस और रियाज के पाकिस्तानी कनेक्शन के पुख्ता सबूत मिले हैं। इन दोनों ने कराची से लौटने के बाद उदयपुर में युवाओं को भड़काना शुरू कर दिया था। उनके मन में नफरत की आग को भड़का रहे थे।

यह भी जानकारी सामने आई है कि दोनों दावत-ए-इस्लाम नाम के पाकिस्तानी संगठन से जुड़े हैं।

## उपराष्ट्रपति पद के लिए 6 अगस्त को होगा मतदान

**नई दिल्ली:** चुनाव आयोग ने बुधवार को उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव कार्यक्रम की घोषणा कर दी है। एक से अधिक उम्मीदवार होने पर 6 अगस्त को मतदान होगा और उसी दिन नतीजे आयेंगे। उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू का कार्यकाल 10 अगस्त को समाप्त होने जा रहा है। आयोग ने इस संबंध में बुधवार को बैठक की। इस बैठक में मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार और चुनाव आयुक्त अनूप चन्द्र पांडे शामिल थे। बैठक के बाद आयोग ने चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की। उपराष्ट्रपति पद के लिए संसद के दोनों सदनों के सांसद वोट करते हैं।

कुल 788 सांसद उपराष्ट्रपति पद के लिए वोट करेंगे। इसमें राज्यसभा के 233, नामित सदस्य 12 और लोकसभा सदस्य 543 हैं। सभी की कीमत एक वोट होगी। लोकसभा महासचिव इस चुनाव में पीठासीन अधिकारी होंगे। सभी सांसदों को आयोग की ओर से मतपत्र और उस निशान के लिये पेन दिया जाएगा। मतदान संसद भवन में ही होगा।

## खबर संक्षेप

### बाईक की जोरदार टक्कर से महिला की मौत

**सहसों।** सरायइनायत थाना के पुलिस चौकी सहसों क्षेत्र के कसेरूआ कला गांव के सामने बाइक की जोरदार टक्कर से सड़क पार कर रही महिला की मौत हो गई। घटना से घर में कोहराम मचा हुआ है। झूंसी थाना क्षेत्र के कसेरुआ खुर्द गांव निवासी सवारी देवी (44) पत्नी राम बख्स कल्लू मजदूरी का काम करती थी। बुधवार को वह खेत में खाद डालने के लिए उसे खरीदने सहसों गई हुई थी। वहां से शाम 4 बजे वापस लौट रही थी। प्रयागराज-जौनपुर राजमार्ग पर पैदल सड़क पार करते समय झूंसी की तरफ जा रहा बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दिया। मौके पर वह गंभीर रूप से घायल हो गई। आसपास के लोग भाग मौके पर पहुंच गए। जानकारी मिलते ही सहसों पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई। 108 नंबर एंबुलेंस से एसआरएन अस्पताल पहुंचाया गया। जहां पर उसकी मौत हो गई। मृतक के तीन बेटो में से दो का निधन हो चुका है। बचे हुए छोटे बेटे और बेटी का रो-रो कर बुरा है। घटना में बाइक सवार सरायइनायत थाना क्षेत्र के ढुढुही गांव निवासी छोटू पुत्र लल्लन घायल हो गया है। उसे सीएचसी बनी में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है।

# महिला की हत्या कर हत्यारों ने बाहर से दरवाजे में जड़ दिया था ताला

## शव में पड़े कीड़े कई दिन पूर्व हत्या करने का कर रहे थे इशारा, दुर्गंध बाहर आने पर हुआ खुलासा

अखंड भारत संदेश

**कोरांव/रत्योंरा।** कोरांव थाना क्षेत्र के जादीपुर गांव में एक बुजुर्ग महिला की हत्या कर शव उसके ही घर में रख कर हत्यारों ने बाहर से ताला बंद कर दिया। जानकारी के मुताबिक गुलाब कली पत्नी स्वर्गीय मीरू कुशवाहा (60) निवासी बड़ोखरा थाना कोरांव आज के लगभग 15 वर्ष पूर्व जादीपुर में डेढ़ बीघा जमीन खरीदा था। जमीन खरीदने के बाद से ही गुलाब कली जादीपुर में अपने ही जमीन पर कच्चा खपरैल मकान बनाकर गुजर-बसर करती चली आ रही थी। जबकि इकलौता बेटा राजेश अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बड़ोखरा में ही रहता है। राजेश ठेले पर समोसा बनाकर बेचने का काम करता है। इसी से परिवार की जीविका चलाता है। आज के 12 दिन पूर्व बड़ोखरा से मां गुलाब कली जादीपुर आ गई थी। बीते शुक्रवार को माता से राजेश की बातचीत हुई थी। जिसके बाद से फोन स्विच ऑफ बता रहा था। बुधवार को सुबह जादीपुर गांव के बबलू व गायत्री प्रसाद के द्वारा फोन कर बेटे राजेश को यह जानकारी दी गई कि तुम्हारे घर से दुर्गंध आ रही है और बाहर से ताला बंद है। जिसके बाद तत्काल राजेश अपने बेटे के साथ जादीपुर घर पहुंच गया। जहां सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण एकत्रित थे। सूचना पर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई थी। पुलिस की मौजूदगी में राजेश ने घर का ताला तोड़ा जब अंदर घुसा तो मां का दुर्गंध देता शव पड़ा हुआ था। शव को देखने से यह प्रतीत हो रहा था कि बुजुर्ग महिला की हत्या कई दिन पूर्व की गई है, और कीड़े पड़ गए थे। जिसके बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका के बेटे राजेश ने कोरांव पुलिस को दी गई तहरीर में जादीपुर गांव के रहने वाले मारकंडेय सिंह पुत्र शिष्टनारायण व इनके तीन बेटों क्रमशः कौशलेश कुमार, राज कुमार व राजेश कुमार तथा विजय कुमार पुत्र वेंकटेश्वर सिंह व इनके रिश्तेदार हरिपाल सिंह पुत्र छोटेलाल निवासी ग्राम बड़ोखरा पर हत्या का आरोप लगाया है। बेटे राजेश ने पुलिस को दी गई तहरीर में लिखा है कि उपरोक्त लोग इसके पूर्व भी तीन बार मेरे मां के ऊपर हमला कर चुके हैं। 12 दिसंबर 2021 को भी जानलेवा हमला करने व पुलिस को तहरीर देने की बात का जिक्र किया है। समाचार लिखे जाने पुलिस विधिक कार्रवाई में जुटी हुई थी। मामला पंजीकृत नहीं हुआ था।

मृतक महिला की फाइल फोटो

### चार दिन पूर्व शादीपुर घर गया था बेटा राजेश

गुलाब कली की हत्या के बाद बेटे राजेश ने मौके पर पहुंचे थाना प्रभारी धीरेंद्र सिंह को बताया कि 4 दिन पूर्व मैं जादीपुर अपने घर आया हुआ था। किंतु घर में ताला बंद देखा और बर्तन व कपड़े आदि बाहर की चारपाई के नीचे फेंके पड़े थे। बारिश का मौसम होने के कारण बर्तन व कपड़े चारपाई पर रख दिए मैं सोचा कि मां कहीं गई होगी। जब थाना प्रभारी ने पूछा कि तुमने ताला खोला उसने कहा नहीं क्योंकि चाबी नहीं थी। मैं वापस बड़ोखरा चला आया था।

### तंत्र मंत्र के चक्कर में हुई अंतिमा की मौत के बाद दारागंज घाट पर हुआ अतिम सस्कार

**करछना।** प्रयागराज थाना क्षेत्र के डीहा गांव में साईको परिवार ने एक किशोरी को कई दिनों से कमरे में बंद कर दिया था।जिसके चलते उसकी मौत हो गई।चार दिन बीत जाने के बाद जब दुर्गन्ध आने लगी तो पास पड़ोस के लोग खिड़की से देखा तो वह मृत पड़ी थी।मौके पर पहुंची पुलिस को देख परिवार के लोग किशोरी को जिंदा करने की बात कहते हुए पुलिस अंदर जाने से रोकने लगे।यह तमासा देररात तक चलता रहा। डीहा गांव निवासी अभयराज यादव पुत्र रामलखन का परिवार डीहा उपरहार में रहता है।पहले अभयराज यादव तीन बेटे और बेटियों के साथ सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे।अभयराज यादव की पुत्री अंतिमा पांच दिनों से घर में मृत पड़ी थी और परिवार के लोग उसे जिंदा करने के लिए देवी देवताओं की पूजा में जमे रहें।अतिम का दाह संस्कार दारागंज घाट पर किया गया।

## प्रधान पति पर जानलेवा हमले को लेकर आगामी शुक्रवार को प्रधान संघ ब्लॉक में करेंगे तालाबंदी

### अपराधियों की गिरफ्तारी न होने पर प्रधान संघ में भारी आक्रोश

**सोरांव।** बीते 23 जून को प्रधान दंपत्ति के ऊपर हुए जानलेवा हमला व लूटपाट होने पर थाने में 6 लोगों के खिलाफ नामजद एफ आई आर दर्ज किया गया था। लेकिन अभी तक पुलिस की मिलीभगत से अपराधी सीना तान कर बेखौफ घूम रहे हैं। इतना ही नहीं पीड़ित का आरोप है कि अपराधियों द्वारा बराबर जान से मारने की धमकियां दी जा रही है। यदि समय रहते अपराधियों की गिरफ्तारी नहीं हुई तो किसी भी दिन प्रधान पति की हत्या हो सकती है। गौरतलब है कि बीते गुरुवार को सराय बाहर में सरकारी जमीन पर दूसरे गांव के भू माफियाओं द्वारा कब्जा किया जा रहा था। मना करने पर विपक्षियों ने तैस में आकर ग्राम प्रधान मनोरमा देवी संग उनके पति राम गणेश मौर्य पर अचानक जानलेवा हमला कर दिए इतना ही नहीं दबंग भू माफियाओं ने बगल में स्थित कीचड़ में प्रधान पति को फेंक दिए। और सीने पर चढ़कर जान से मारने की नियत से दबाए रखें। किसी तरह प्रधान मनोरमा देवी के शोर मचाने पर आसपास के लोग मौके पर आए और प्रधान पति को बाहर निकाले। सूचना पर पहुंची सोरांव थाने की फोर्स आई और इतने में अपराधी मौका पाकर भाग मौके से गए। पीड़ित की तहरीर पर सोरांव थाने में जानलेवा हमला, छिनैती आदि गंभीर धाराओं में सुमित यादव उर्फ खुशदिल यादव, राजेंद्र कुमार उर्फ पप्पू पटेल, त्रिभुवन पटेल,सतीश पटेल, महेंद्र पटेल, व विशाल के खिलाफ नामजद एफ आई आर दर्ज किया गया है। एक सप्ताह बीत जाने के बाद भी अपराधी पुलिस के पहुंच से बाहर है। जिसको लेकर आगामी शुक्रवार को प्रधान संघ के लोगों ने सोरांव ब्लॉक में तालाबंदी करने की लिखित सूचना उप जिलाधिकारी सोरांव डॉक्टर कंचन, खंड विकास अधिकारी धीरेंद्र कुमार यादव सहित संबंधित विभाग को लिखित तहरीर दिए हैं। उक्त वही प्रधानों का कहना है कि सरकार की मंशा के अनुसार हम लोग काम कर रहे हैं। तब भू माफियाओं द्वारा जान से मारने की धमकी दी जा रही हैं यदि ऐसा होता रहा तो किसी भी दिन किसी भी प्रधान की हत्या हो सकती है। उक्त सूचना प्रधान संघ अध्यक्ष लल्लन पासी ने दी है।

# पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचते ही परिजनों ने किया चक्का जाम

## कोरांव ड्रमंडगंज मुख्य मार्ग पर घंटो बाधित रहा आवागमन, एसडीएम सीओ के आश्वासन के बाद माने परिजन

अखंड भारत संदेश

**रत्योंरा/कोरांव।** कोरांव थाना क्षेत्र के डडिया गजाधरपुर गांव में बीते सोमवार की शाम जमीनी विवाद और रंजिश को लेकर एक युवक की पीट-पीटकर हत्या से आक्रोशित परिजनों ने पोस्टमार्टम शव घर पहुचते ही बुधवार को कोरांव ड्रमंडगंज मुख्य मार्ग पर गजाधरपुर गांव में शव सड़क पर रखकर चक्काजाम कर दिया। जिससे घंटों आवागमन बाधित रहा। जानकारी के मुताबिक गजाधरपुर गांव निवासी अभिनाथ विश्वकर्मा व हजारी के बीच आबादी की भूमि को लेकर चार-पांच वर्ष से विवाद चला आ रहा था। बीते सोमवार को अभिनाथ विश्वकर्मा के बहू की तबीयत खराब थी। जिसका उपचार कराने के लिए बेटा द्वारिका उर्फ भीम कोरांव बाजार आने के लिए जैसे ही घर से अपनी बाइक बाहर निकाला कि अभी पत्नी रीता बाइक पर बैठ भी नहीं पाई थी। अचानक उसके ऊपर हजारी पक्ष के लोग लाठी-डंडों से जानलेवा हमला कर दिया। देखते ही देखते उसकी जमीन पर घसीटते हुए पीट-पीटकर निर्मम हत्या कर दी गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर सोमवार रात को ही पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। बुधवार को सुबह जैसे ही पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा गया। आक्रोशित परिजनों ने कोरांव ड्रमंडगंज मार्ग पर गजाधरपुर गांव में शव सड़क पर रखकर चक्काजाम कर दिया। चक्का जाम की सूचना पर थाना प्रभारी धीरेंद्र सिंह दल बल के साथ पहुंच गए और परिजनों को मनाने लगे किंतु उनकी परिजनों ने एक भी न सुनी। जिसके बाद एसडीएम कोरांव शुभम श्रीवास्तव, तहसीलदार कोरांव डॉ विशाल कुमार शर्मा व क्षेत्राधिकारी मेजा अमिता सिंह भी चक्का जाम स्थल पर पहुंचकर परिजनों से घंटों वार्ता की। जिसके बाद परिजन मृतक के बेटे को सरकारी नौकरी एवं जमीन समेत कई मांगे रखी। मौके पर उपस्थित रहे एसडीएम व तहसीलदार ने परिजनों को गुरुवार को तहसील आने की बात कही और गांव में सरकारी जमीन का पट्टा करने का आश्वासन दिया। जिसके बाद परिजन माने और लगभग 3 घंटे बाद चक्काजाम खत्म हुआ।

## संचारी रोगों के बचाव को एक जुलाई से चलेगा अभियान

**शंकरगढ़।** संचारी रोग अभियान के संचालन और लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से बुधवार को बीआरसी शंकरगढ़ पर बैठक हुई।जिसमें संचारी रोगों से बचाव के लिये चलाये जाने वाले अभियान की रूपरेखा तय की गई। खंड शिक्षा अधिकारी और सीएचसी अधीक्षक डॉ शैलेंद्र सिंह ने संयुक्त रूप से बताया कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान 1जुलाई से 31 जुलाई तक चलाया जाएगा।इस दौरान परिषदीय विद्यालयों में तमाम जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे।बच्चों को साफ, सफाई की आदत डालने के साथ-साथ बच्चों के माध्यम से ही ग्रामीणों को जागरूक किया जाएगा।इसके अलावा विद्यालय में स्वच्छता के संबंध में वाद विवाद, निबंध, पर्यावरणीय स्वच्छता, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। आज आयोजित गोष्ठी में शिक्षकों द्वारा अभिभावकों और बच्चों को संचारी रोगों से बचाव की जानकारी दी गई और इससे बचने के उपाय भी सुझाये गए।इस मौके पर स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी नेम कुमारी, अभिषेक मिश्रा,संजय प्रजापति परिषदीय विद्यालय के शिक्षक व अभिभावक मौजूद रहे।अंत में बेईओ ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

## न्यूज झरोखा

### घूरपूर थाना प्रभारी आईपीएस चिराग जैन की की गई भावभीनी विदाई

**घूरपूर।** तीन माह से घूरपूर थाने के प्रभारी रहे आईपीएस चिराग जैन की बुधवार की शाम विदाई कार्यक्रम हुआ । इस बीच क्षेत्र के सैकड़ो गणमान्यों व पुलिस कर्मियों ने प्रभारी चिराग जैन को माला पहना कर विदाई की । इस मौके पर चिराग जैन ने कहा कि तीन माह के बतौर प्रशिक्षण सत्र में मुझे घूरपूर थाने में पुलिसिंग क्रिया कलाप की विधिवत जानकारी मिली। आगे कहा कि घूरपूर क्षेत्र सामान्य तौर पर बहुत ही शांत और विवेक वान लोगो का क्षेत्र है । इस बीच उन्होंने साथ काम करने वाली पुलिस टीम को बधाई दी और अच्छी पुलिसिंग करने की सीख दी । विदाई के समय चिराग जैन की आंखे नम हो गई ,उन्होंने क्षेत्र की आम जनता और गणमान्य लोगों को धन्यवाद दिया ।

### नौ दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण का हुआ शुभारम्भ

**नैनी।** यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट-एफयूजीएस, नैनी ने रूबिकॉन के सहयोग से अपने बीबीए और बीसीए छात्रों के लिए नौ दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम 'लाइफ स्किल्स' का शुभारम्भ किया। कार्यक्रन का समापन 06 जुलाई को होगा। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 300 से अधिक छात्र भाग ले रहे हैं। यूआईएम एफयूजीएस के प्राचार्य डॉ. देवेंद्र तिवारी ने बताया कि बार्कलेज द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं के रोजगार कौशल में सुधार करना है। इस कार्यक्रम के तहत, छात्रों को उनके सॉफ्ट स्किल्स को बढ़ाने के लिए कॉपोरेट ट्रेनर्स द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि वे साक्षात्कार में सफल हो सकें और अपने पसंद के करियर का चुनाव कर सकें। कार्यक्रम कोआर्डिनेटर वैभव मोटवानी ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद भाग लेने वाले सभी छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। सभी को औद्योगिक क्षेत्र का दौरा, प्लेसमेंट के बाद मेंटरिंग और करियर परामर्श सहायता भी प्रदान की जाएगी।

### बारिश में जलमग्न हुआ मर्रो बाजार का सड़क

**धनूपुर।** धनूपुर क्षेत्र का मर्रो बाजार सिरसा जगदीशपुर मार्ग पर स्थित है प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सिरसा से जगदीशपुर मार्ग का निर्माण किया गया था। मर्रो बाजार में नाली का निर्माण न होने से हल्की सी बारिश में भी पानी सड़क पर इकट्ठा हो जाता है पूरी सड़क जलमग्न दिखाई पड़ती है। आवागमन करने वाले लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है लोग गिरकर चुटहिल होते हैं ग्रामीणों एवं बाजार के निवासियों ने जलभराव की समस्या के निराकरण हेतु जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासन से मांग किया है।

### बारिश में ताल तलैया बनी अनुवां चनेथू महरछा संपर्क मार्ग

**जंघई।** प्रतापपुर क्षेत्र की दर्जनों सड़कें इन दिनो जीर्ण शीर्ण हो गई है ग्रामीणों एवं क्षेत्रवासियों के बार बार प्रार्थना पत्र देने के बावजूद जनप्रतिनिधि या विभागीय अधिकारी, लोकनिर्माण, ग्रामीण अभियंत्रण विभाग ध्यान नही दे रहे हैं।पूर्व मंत्री श्याम सूरत उपाध्याय द्वारा बनवाई गई विभिन्न सड़कों की मरम्मत हेतु वर्षो से कोई ध्यान नही दे रहा है।जिसके कारण सड़क पर आवागमन करने वाले आम नागरिकों छात्रों वकीलों व्यापारीकरण एवं अन्य मुसाफिरों मे आक्रोश है क्योंकि ग्रामीणों की सुनने वाला कोई नजर नही आ रहा है।रधईपुर महरछा से पयागपुर कुंदौरा धाम जाने वाली सड़क एवं क्षेत्र की अन्य जर्जर हो चुकी सड़कों मे अनुवां-चनेथू महरछा, चंपापुर-हरीपुरपट्टी जलालपुर, अनुवां-राचनपुर, महरछा-जंघई आदि सड़कें पूर्ण रुप से क्षतिग्रस्त हो चुकी है लेकिन इनका नवीनीकरण या मरम्मत न होने से सभी आक्रोशित है।



### विनय जायसवाल बने यमुनापार व्यापार मंडल अध्यक्ष

**नैनी।** नैनी बाजार निवासी विनय जायसवाल (बाबा) पूर्व पार्षद को उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल ने अध्यक्ष जमुना पार बनाया गया है जिससे व्यापारियों में भारी खुशी है।विनय जायसवाल बाबा ने कहा कि व्यापारियों की लड़ाई हम हमेशा लड़ते चले आ रहे हैं आगे भी लड़ते रहेंगे। इस दौरान विनय जायसवाल का व्यापारियों ने स्वागत किया स्वागत करने वालों में दशरथ जायसवाल,संतोष केसरवानी, सुरेश तिवारी,सतीश शर्मा, जुगा गुप्ता,राजू साहू, बेटू जायसवाल, राधेश्याम जायसवाल, (बच्चा) प्रियांशु,आदि व्यापारी उपस्थित रहे।

गंगा में बह रहा नाला का पानी

### गंगा में बहाया जा रहा नाले का दूषित पानी

**मेजा रोड।** नगर पंचायत सिरसा स्थित गंगा फेरी घाट पर नाले का दूषित पानी बहाया जा रहा है। गंगा निर्मली करण की योजनाएं जमीन पर नहीं उतर पा रही करोड़ो रुपए खर्च होने के बाद भी ना तो घरेलू और औद्योगिक अवजल के शोधन की व्यवस्था की जा रही और न नालो को गंगा में बहने से रोका जा सका। देखा जाए तो रोजाना सैकड़ों की संख्या में लोग फेरी घाट पर गंगा स्नान के लिए पहुंचते हैं। जहां नाले का दूषित पानी बह रहा है वही लोग आस्था की डुबकी लगा रहे हैं और उसी जल को अपने साथ घरों को ले जा रहे है। सरकार की स्वच्छ गंगा निर्मल गंगा की योजनाएं धरातल पर नहीं दिख रही। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा की ओर से गंगा में एक बूंद भी सीवर का गंदा पानी न जाने की हिदायतें बेअसर रह गई। देखा जाए तो हर दूसरे दिन नया स्लोगन सामने जरूर आ जा रहा है गंगा में गिरने वाले 23 बड़े नालो को बंद करने के निर्देश सिर्फ कागज पर। इस विषय पर जब नमामि गंगे के यमुना पार के जिला संयोजक डॉक्टर अमरेश तिवारी से वार्ता किया तो उन्होंने कहां की मामले को जल्द ही पत्र के माध्यम से शीर्ष नेतृत्व को जानकारी दी जाएगी। नाले को बंद कराया जाएगा जिससे कि हमारी गंगा मां स्वच्छ और निर्मल रहे।

### दो अलग अलग गांवों में मार पीट कई घायल आठ के के खिलाफ मुकदमा दर्ज

**मऊआइमा।** दो अलग अलग गांवों में मामूली बात को लेकर मार पीट हुई। दोनों मामलों में पुलिस ने आठ के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सकरामऊ निवासनीय आनारा देवी पत्नी रामबहादुर का आरोप है कि मामूली बात को लेकर उसे मारा पीटा गया। आनारा देवी ने मऊआइमा थाने में बलराम ,कल्लू ,विशाल, आनन्द के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर ग्राम बकराबाद निवासनीय विमला देवी पत्नी रामबहादुर का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसका नाम मार पीट कर जख्मी कर दिया गया। विमला देवी ने मऊआइमा थाने में पारसनाथ ,सुरेश चन्द्र ,दीपचंद्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

## नमामि गंगे के तहत निकाली गई जागरूकता रैली

### खंड विकास अधिकारी करछना देव कुमार नें हरी झंडी दिखा कर जागरूकता रैली को किया रवाना

अखंड भारत संदेश

**करछना।** प्रयागराज राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन नमामि गंगे ग्रामीण जलापूर्ति विभाग द्वारा विकासखंड करछना में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जोकि खंड विकास अधिकारी देव कुमार एवं एडीओ पंचायत विवेक मिश्र के द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत विकास खंड सभागार में प्रोजेक्टर के माध्यम से वीडियो चलाकर नागरिकों को जागरूक किया गया जिससे कि पेयजल एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता आम जनमानस में भी हो तथा पीने योग्य जल का दोहन रुक सके तथा वर्षा के जल का संरक्षण भी किया जाए जिससे कि लगातार गिरती जा रही वाटर लेवल की स्थिति में भी सुधार हो। खंड प्रेरक स्वच्छ भारत मिशन अतुल मिश्रा द्वारा बताया गया की जल जांच कोर कमेटी तथा सोशल मैपिंग के माध्यम से नमामि गंगे के उद्देश्य को पूरा किया जा रहा है जिससे कि पानी की शुद्धता की जांच तथा वाटर लेवल की स्थिति का पता चल सके। क्योंकि शासन द्वारा जल जीवन मिशन के तहत पाइप लाइन के माध्यम से प्रत्येक ग्राम पंचायत को जोड़ा जा रहा है जिससे कि पानी की सुविधा हर घर नल जल के तर्ज पर पहुंचाया जा सके। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक सुभाष सुभाष सक्सेना अमरीश शर्मा रहे। वहीं मौके पर अशोक सिंह ,अंजली सिंह, रेखा मौर्य ,जितेंद्र कुमार तथा अन्य ब्लॉक कर्मी मौजुद रहे।

# बीसी साखियों को वितरीत किए गए डिवाइस : आदित्य तिवारी

अखंड भारत संदेश

**करछना।** विकासखंड करछना के अंतर्गत राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के बीसी सखी की लाभार्थियों को विकास खंड कार्यालय में डिवाइस तथा यूजर आईडी पासवर्ड प्रदान किया गया जिसके अंतर्गत यह महिलाएं ग्रामीण स्तर पर सूक्ष्म बैंकिंग प्रणाली विकसित करेंगी , उक्त जानकारी ब्लॉक कार्यक्रम प्रबंधक आदित्य तिवारी द्वारा दिया गया। श्री तिवारी ने बताया की प्रदेश सरकार मिशन शक्ति के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के प्रति सामुदायिक जागरूकता विकसित करने के लिए प्रयासरत है चुकी केंद्र सरकार भी वित्तीय समावेशन में महिलाओं की भागीदारी सशक्त करना चाहता है जोकि उक्त परियोजना के माध्यम से संभव हो पा रहा है।

ग्रामीण अंचलों में एक आम नागरिक को न्यूनतम पर न्यूनतम रुपए कि निकासी करने के लिए भी बैंक जाना पड़ता है जोकि अधिकतम गांव के लिए 4 या 5 किलोमीटर की दूरी पर उपलब्ध है चुकी इस प्रकार ग्रामीण अंचल के निर्धन परिवारों को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है परंतु बीसी सखी परियोजना इस कार्य में बहुत ही सहयोगात्मक साबित हो रही है ताकि अति गरीब ग्रामीण जो की अन्य योजनाओं का लाभ जैसे की वृद्धा पेंशन , विधवा पेंशन, दिव्यांग पेंशन , राष्ट्रिय पारिवारिक लाभ आदि योजनाओं की किस्त आसानी से अपने गांव में ही बीसी सखी के माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे। उक्त ट्रेनिंग बैंक ऑफ बड़ौदा के सीएससी द्वारा दिया गया जिसके मुख्य ट्रेनर विकास कुमार, आशुतोष तथा बीएमएम धर्मेंद्र यादव रहे जिन्होंने बीसी साखियों को प्रशिक्षित किया तथा बीएमएम संजय कुमार एवम् जलज शर्मा द्वारा टेक्निकल समस्यायों से निपटने के सुझाव दिए गए। मौके पर बीसी सखी लालती देवी , अर्चना देवी , कंचन देवी , ज्ञानती देवी, मिथिलेश पटेल इत्यादि रहे तथा ब्लॉक कर्मी गुलाम गौस , ब्रिजेश यादव, रविंद्र पटेल ने उक्त प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था में सहयोग किया।

उपस्थित करछना ब्लाक की बीसी सखियाँ

### पत्रकार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने किया एसएसपी से मुलाकात

**लेडियारी।** पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज के प्रांतीय अध्यक्ष पीसी पाण्डेय, जिला अध्यक्ष सुभाष शुक्ला एवं तहसील कोरांव अध्यक्ष केके मिश्रा के साथ तहसील उपाध्यक्ष अजय मिश्रा, अरुण कुमार सिंह, राकेश मिश्रा, इंद्रेश जैसल आदि पत्रकारों ने बुधवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय कुमार पाण्डेय से मुलाकात कर पत्रकार उत्पीड़न व फर्जी मुकदमे को वापस लेने के संदर्भ में बात की। जिस पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने उक्त पत्रकारों को पूरी तरह से आश्वासन देते हुए कहा कि किसी भी पुलिसकर्मी द्वारा पत्रकार के साथ गलत दुर्व्यवहार किए जाने पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पत्रकारों के मान सम्मान का पूरा ध्यान देते हुए समाचार कवरेज में मदद की जाएगी। पत्रकार के उत्पीड़न मामले में जल्द कार्रवाई का आश्वासन भी दिया।

## खबर संक्षेप

### बाल अपचारी समेत हत्या में वांछित अभियुक्तों को पुलिस ने भेजा जेल

**रत्योंरा/कोरांव।** कोरांव पुलिस ने बीते सोमवार को थाना क्षेत्र के डडिया गजाधरपुर गांव में लाठी-डंडों से पीट-पीटकर युवक की हत्या में वांछित बाल अपचारी समेत कुल 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। ज्ञातव्य हो कि जमीनी विवाद को लेकर डडिया गजाधरपुर गांव के रहने वाले द्वारिका उर्फ भीम पुत्र अभिनाथ विश्वकर्मा की पीट-पीटकर निर्मम हत्या कर दी गई थी। जिसके बाद पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज करते हुए कुल छः आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। गिरफ्तार अभियुक्तों में रामसहाय पुत्र हजारी, पन्ना देवी पत्नी राम सहाय, रागिनी विश्वकर्मा पत्नी मोहित लाल, पुनीता देवी पत्नी नेब्बू लाल, सविता पत्नी मदनलाल, कुसुम पत्नी बेनी माधव व एक बाल अपचारी निवासीगण डडिया गजाधरपुर थाना कोरांव शामिल हैं। उक्त अभियुक्तों को गिरफ्तार करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक धीरेंद्र सिंह, कांस्टेबल सोनू यादव, कांस्टेबल यतेंद्र कुमार, महिला कांस्टेबल ज्योति पांडेय, सरोजा गुप्ता, संगीता यादव शामिल रहे।

# डीएम की अध्यक्षता में गोवंश आश्रय स्थल की समीक्षा बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

**गोवंश आश्रय स्थलों पर सभी मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित रहें तथा गोवंश आश्रय स्थलों में लापरवाही या उदासीनता कतई क्षम्य नहीं होगा : जिलाधिकारी**

अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करते जिलाधिकारी संजय खत्री।

**प्रयागराज।** जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में बुधवार को संगम सभागार में गोवंश आश्रय स्थल की समीक्षा बैठक की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी उपजिलाधिकारी एवं खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया है कि अपने-अपने क्षेत्रों में एक वृहद गोवंश आश्रय स्थल का निर्माण कराये, जिसमें हरे चारे, भूसा बैंक सहित सभी मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित रहें। उन्होंने बरसात के मौसम के दृष्टिगत सभी गोवंश आश्रय स्थलों में पानी का निकास तथा गोवंशों के आने-जाने वाले मार्गों पर तथा रहने की जगह पर खडंजा का निर्माण अवश्य कराया जाये, जिससे की गोवंशों को किसी प्रकार की दिक्कते न आयें। उन्होंने कहा है कि इन्फ्रास्ट्रक्चर बेहतर बनवाने का प्रयास करें। प्रधान एवं गो पालकों का प्रशिक्षण अच्छी तरह से कराया जाये तथा सभी गोवंश आश्रय स्थलों पर भूसा, चारा, चोकर आदि की पर्याप्त व्यवस्था रहे तथा गोवंशों का शत-प्रतिशत वैक्सीनेशन तथा ईयर टैगिंग कराया जाये। पशुचिकित्सकों को भी प्रशिक्षण दिया जाये। उन्होंने हाइवे पर पड़ने वाले मार्गों का निरीक्षण करने तथा वहां पर यदि कोई गोवंश पाये, तो उन गोवंशों को भी गो आश्रय स्थलों पर रखा जाये। उन्होंने मा0 मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के अन्तर्गत गोवंशों के सुपुर्दगी की भी समीक्षा की तथा मनरेगा कन्वर्जेस के अन्तर्गत गोवंश आश्रय स्थलों पर वर्मी कम्पोस्ट प्रोजेक्ट की जानकारी ली तथा डीसी मनरेगा को निर्देशित किया कि जहां पर भी वर्मी कम्पोस्ट तैयार है, उसको ले लिया जाये। इसी क्रम में जिलाधिकारी ने वृक्षारोपण की समीक्षा करते हुए गड्ढों की खोदायी की प्रगति की जानकारी ली तथा जहां पर भी औसत से कम है, वहां गड्ढे तैयार करने के निर्देश दिये है। उन्होंने नर्सरी की गुणवत्ता आदि को चेक कराने का तथा वृक्षारोपण के समय पानी की व्यवस्था सुनिश्चित रहे। इस अवसर पर सभी उपजिलाधिकारीगण, खण्ड विकास अधिकारी एवं मुख्य पशुचिकित्साधिकारी आर0पी0 राय सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

### ग्रामीणों ने पशु तस्करों की पिटाई कर किया पुलिस के हवाले

**हनुमानगंज।** सरायइनायत थाना क्षेत्र के लीलापुर कला गांव में चोरी से गाय लाद रहे पशु तस्करों को ग्रामीणों ने दबोज लिया जम कर पिटाई करने के बाद पुलिस को सौप दिया। बताया जाता है कि दो और गाड़िया थी जो भागने में कामयाब रही। वर्षो से गंगा कछार से मवेशी गायब हो रहे है। मामले की कई बार पुलिस से शिकायत भी की गई पर कोई कार्यवाही नही हुई। मंगलवार की रात लीलापुर कला गांव के सामने गंगा तट पर दर्जन भर पशु तकर जिसमे कुछ गांव के भी बताये जा रहे है। कछार से गाय चोरी कर तस्करी के लिए मॉल वाहक में लाद रहे थे। लीलापुर गांव के पूर्व प्रधान विनोद शुक्ला ने बताया कि वह घर पर कुछ ग्रामीणों के साथ बैठे थे उन्हें जनकारी हुई तो वह कुछ ग्रामीणों के साथ घाट की तरफ बड़े तो ग्रामीणों को आता देख पशु तस्कर गाड़ियों को लेकर भागने लगे एक गाड़ी गलती से गांव में घुस गई जिसे लोगों ने पकड़ लिया जिसमे तीन गाय लदी थी। पकड़े गए लोगों से पता चला कि गांव के ही 5 लोगों के सहयोग से वर्षों से लीलापुर, कोटवा, जमुनीपुर, ककरा कछार से जानवर पकड़ कर ले जाते थे। पकड़े गए उतरांव आसिपुर निवासी अनुज यादव व ऊज भदोही निवासी शिवराम यादव को जेल भेज बाकि लोगो की तलाश की जा रही है।

## न्यूज झरोखा

### बारा तहसील गेट पर लगा गंदगी का अंबार

**बारा।** बारा तहसील गेट पर गंदगी का अंबार इस तरह लगा हुआ है मानो कभी साफ-सफाई ही नहीं होती है आपको बताते चलें कि तहसील परिसर में करीब हजारों लोगों का प्रतिदिन आना जाना होता है मगर साफ सफाई के नाम पर सिर्फ गंदगी का अंबार लगा हुआ है । ताज्जुब की बात या है कि प्रतिदिन इस गंदगी को नजरअंदाज कर दिया जाता है जहां एक ओर स्वक्षता का बीड़ा उठाया प्रधानमंत्री जी स्वक्षता का संदेश देते रहते हैं वही तहसील के मेन गेट पर ही गंदगी काम बार देखने को मिलता है लोगों का कहना है कि साफ-सफाई करने वाले अब तो गायब रहते हैं कभी कभार आ गए तो सिर्फ दुकानों पर चाय पानी कर चले जाते हैं । तहसील परिसर में अगर इसी तरह गंदगी का अंबार लगा रहा तो आने वाले बरसात के मौसम में क्षेत्र में बीमारियों का भी असर देखा जा सकता है ।

### बेलन मुख्य नहर में शीघ्र छोड़ा जाए पानी : भोला सिंह

**रत्योंरा।** भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के प्रांतीय मंत्री भोला सिंह ने बेलन मुख्य नहर पानी छोड़े जाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि अगर शीघ्र नहरों में पानी नहीं छोड़ा गया तो भारतीय किसान संघ किसान हित में आंदोलन के लिए बाध्य होगा। जिसकी पूरी जिम्मेदारी बेलन मुख्य नहर के उच्चाधिकारियों एवं जिला प्रशासन की होगी। क्षेत्र में नहरों का जाल होने के बाद सभी नहरों में धूल उड़ रही है। अधिकांशतः किसान अपनी धान की नर्सरी भी नहीं डाल पाए हैं। जो किसान येन केन प्रकारेण अपनी नर्सरी डाल लिए हैं। उनकी अब धान की नर्सरी पानी के अभाव में सूखने के कगार पर है। जिससे किसान निराश व मायूस दिख रहे हैं। कोरांव तहसील क्षेत्र प्रयागराज जनपद का धान का कटोरा कहा जाता है। धान का कटोरा ही जब खाली रहेगा। समय से किसान अपनी नर्सरी नहीं डाल पाएंगे तो स्वाभाविक सी बात है कि समय से धान की रोपाई भी नहीं हो सकेगी। किसान अच्छी उपज एवं पैदावार से वंचित रह जाएंगे। ऐसे में किसान हित में भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह ने बेलन मुख्य नहर में शीघ्र पानी छोड़े जाने की मांग की है।

### चाइनीज मांझे में फसकर अधिवक्ता घायल

**झूंसी।** शास्त्री पुल पर कोर्ट से काम निपटा कर घर लौट रहे अधिवक्ता नितेश कुमार सिंह चाइनीज मांझे की चपेट में आ कर घायल हो गए। अधिवक्ताओं ने चाइनीज मांझे पर सख्ती से रोक लगाने की प्रशासन से मांग की। वास्तु नगर हवेलियां झूंसी निवासी नितेश कुमार सिंह अधिवक्ता है बुधवार को 5 बजे के करीब कोर्ट से बाइक से लौट रहे थे। शास्त्री पुल पर नितेश मंजे की चपेट में आ गए मांझे ने नितेश चेहरे और हाथ में कई घाव कर दिया। राहगीरों की मदद से वह इलाज के लिए हॉस्पिटल गए। राहगीरों की माने तो अधिवक्ता हेलमेट न पहने होते तो मांझे से बड़ा हदशा हो सकता था।

### दो अलग अलग गांवों में मार पीट कई घायल आठ पर मुकदमा

**मऊआइमा।** दो अलग अलग गांवों में मामूली बात को लेकर मार पीट हुई । दोनों मामलों में पुलिस ने आठ के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सकरामऊ निवासनीय आनारा देवी पत्नी रामबहादुर का आरोप है कि मामूली बात को लेकर उसे मारा पीटा गया। आनारा देवी ने मऊआइमा थाने में बलराम ,कल्लू ,विशाल ,आनन्द के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है ।उधर ग्राम बकराबाद निवासनीय विमला देवी पत्नी रामबहादुर का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसका नाम मार पीट कर जख्मी कर दिया गया । विमला देवी ने मऊआइमा थाने में पारसनाथ ,सुरेश चन्द्र ,दीपचंद्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

### एसटीएफ व पुलिस ने अंतरराज्यीय गांजा तस्कर गिरोह के तीन सदस्यों को किया गिरफ्तार

**9 क्विंटल 29 किलो गांजा माया वाहन समेत बरामद, आरोपी भेजे गए जेल**

**रत्योंरा/ कोरांव।** एसटीएफ प्रयागराज की टीम व कोरांव पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। एसटीएफ व पुलिस ने कोरांव थाना क्षेत्र के गाढ़ा गांव से अंतरराज्यीय गांजा तस्कर गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार करते हुए उनके पास से 9 क्विंटल गांजा मय वाहन समेत बरामद कर लिया है। गिरफ्तार अभियुक्तों में हरिकांत सिंह उर्फ बबलू पुत्र दिवाकर सिंह निवासी ग्राम हहोतीपुरवा सोहागी रीवा मध्य प्रदेश, पवन कुमार सिंह पुत्र चंद्र लाल सिंह निवासी छनना मानपुर थाना कोरांव, अनूप मिश्रा पुत्र राम सागर मिश्रा निवासी जियापुर मानपुर थाना कोरांव शामिल हैं। उक्त अभियुक्तों को गिरफ्तार करने वाली टीम में एसटीएफ इंचार्ज अनिल कुमार सिंह अपने हमराहियों के साथ तो चौकी प्रभारी बड़ोखर कैलाश सिंह, कांस्टेबल राहुल गौड़ शामिल रहे। एसटीएफ प्रभारी प्रयागराज ने जानकारी देते हुए बताया कि उपरोक्त अभियुक्त आंध्र प्रदेश से गांजा लाकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ समेत कई अन्य राज्यों में तस्करी करने का काम करते थे। इनका एक साथी राकेश सिंह पुत्र रंजीत सिंह निवासी सोहागी रीवा मध्य प्रदेश जगदलपुर छत्तीसगढ़ में बैठकर कारोबार करता है। गिरोह में शामिल अन्य लोगों को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस टीमें गठित कर दी गई है। शीघ्र ही अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार किया जाएगा।

### गंगा तट पर मिला सुरंग नुमा गड्ढा, लोगो में कौतूहल विषय

**झूंसी।** गंगा तट झुंसी में खुदाई के दौरान गंगोली शिवाला मंदिर के पास मिला सुरंग नुमा गड्ढा लोगो में कौतूहल का विषय बना हुआ है। जोभी सुन रहा है वह सुरँग नुमा गड्ढे को देखने भगा आ रहा है। सुरँग नुमा गड्ढे को लेकर लोगो में तरह तरह की चर्चा में है। दो दिनों से चर्चा में आए सुरँग नुमा गड्ढे की सच्चाई पता लगाने पुरातत्व विभाग से कोई भी नहीं पंहुचा। नमामि गंगे योजना के तहत झूंसी गंगा किनारे सीवर लाइन डालने के लिए पोकलैंड मशीन से खुदाई का काम चल रहा है। दो दिन पहले खुदाई के दौरान गंगोली शिवाला के पास एक सुरंग नुमा गड्ढा दिखा जिसमें से काफी मात्रा में पानी निकला काम कर रहे मशीन के ऑपरेटर ने काम को रोक दिया। वह खजाना मिलने की भी चर्चा है बताया जाता है कि खुदाई कर रही मशीन के साथ ऑपरेटर व कुछ श्रमिक रातों रात गायब हो गए। स्थानीय लोग कुछ स्पष्ट नहीं बता पा रहे हैं पर कुछ लोगों का कहना है कि यहां बहुत से पौराणिक स्थल है जैसे कि उल्टा किला, गंगोली शिवाला, समुद्र कूप कुछ ने तो बताया कि यहाँ बीरबल का भी किला था और पहले महल से सुरँग बनाई जाती थी। जांच के बाद ही यह पता चलेगा कि यहाँ सुरँग है या कोई बड़ा गड्ढा।

# प्रधानाध्यापक समेत चार शिक्षकों का रोका वेतन

अखंड भारत संदेश

**प्राथमिक विद्यालय केशवपुर में रंगाई पुताई न कराने के जुर्म में प्रधानाध्यापक तारों का वेतन, केशवपुर विद्यालय में सहायक अध्यापक अनिता कुमारी, ज्ञान गीता सिंह, सबीहा फरीद और अजय कुमार राय के अनुपस्थित पाए जाने पर अवरुद्ध किया वेतन, शिक्षण गुणवत्ता और छात्र एवं छात्राओं की कम उपस्थिति पर शिक्षकों को लगाई फटकार**

भगवत ब्लॉक के प्रा.वि. मोहिउद्दीनपुर भरेठा में जांच के दौरान बच्चों के साथ एक दृश्य।

**लालगोपालगंज।** परिषदीय विद्यालय पूर्ण रूप से खुल गए हैं। पठन-पाठन के अलावा तमाम तरह की व्यवस्थाओं का अधिकारी सघन जांच कर रहे हैं। इसी क्रम में कौड़िहार द्वितीय के लगभग आधा दर्जन विद्यालयों का औचक निरीक्षण किया गया। जिसमें प्रधानाध्यापक समेत कई शिक्षकों के विरुद्ध कार्यवाही की गई। प्रयागराज के विकासखंड कौड़िहार द्वितीय (भगवतपुर) के परिषदीय विद्यालयों का खंड विकास अधिकारी ओमप्रकाश मिश्रा ने औचक निरीक्षण किया। जांच के दौरान प्राथमिक विद्यालय केशवपुर पहुंचे। जहां रंगाई पुताई नहीं हुई थी। जिसपर प्रधाना अध्यापक मोतीलाल को अविलंब रंगाई पुताई कराने की चेतावनी देते हुए जून माह का वेतन रोक दिया। वहीं विद्यालय में कार्यरत अनीता कुमारी, ज्ञान गीता सिंह, सबीहा फरीद और अजय कुमार राय अनुपस्थित पाए गए। जिसपर बीओ ओपी मिश्रा ने नाराजगी जताते हुए अनुपस्थित शिक्षकों का वेतन अवरुद्ध करने की कार्यवाही की। प्राथमिक विद्यालय मोहिउद्दीनपुर भरेठा में छात्रों की कम उपस्थिति पर चेतावनी दी। प्राथमिक विद्यालय मरदानपुर में शिक्षण गुणवत्ता पर ध्यान दिए जाने की सख्त हिदायत दी। प्राथमिक विद्यालय मनौरी में एक सप्ताह के भीतर रंगाई पुताई पूर्ण कर रिपोर्ट प्रस्तुत किए जाने की चेतावनी दी गई है। लगातार विद्यालयों की सघन जांच से शिक्षकों में खलबली मची है।

# प्रो. रामगोपाल यादव हैं राजनैतिक संत : नरेन्द्र सिंह

अखंड भारत संदेश

साधु संतों को फल वितरित करते नरेंद्र सिंह

**प्रयागराज।** समाजवादी विचारक, राज्य सभा सांसद सपा के प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर रामगोपाल यादव का 76वां जन्मदिन बुधवार को नगर स्थित श्रीपीठम् यज्ञशाला मे पार्टी के प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह ने विद्वान आचार्यों के मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ हवन करके साधुओं व संन्यासियों को भोजन तथा फल वितरित कर अपने नेता के उत्तम स्वास्थ एवं दीघार्यु का आशीर्वाद मांगा। श्रीपीठम् के पीठाधीश्वर १०८ श्री योगिराज रमेश जी महाराज के मार्गदर्शन एवं कई विद्वानों के आचार्यात्व मे सम्पन्न हुए यज्ञ, भंडारा तथा फल वितरण के आयोजक सपा प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह ने ईश्वर से प्रार्थना किया तथा उपस्थित सभी साधु, संन्यासियों से रामगोपाल यादव के उत्तम स्वास्थ एवं दीघार्यु का आशीर्वाद मांगते हुए कहा कि प्रोफेसर रामगोपाल यादव राजनैतिक संत हैं। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन मे वाणी और व्यवहार के संयम का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबको सम्मानजनक सम्बोधन के साथ सबके प्रति संवेदनशील होना प्रोफेसर साहब की सबसे बड़ी सहजता है,नरेन्द्र सिंह ने यह भी कहा कि प्रोफेसर साहब कर्म और मयार्दा के संगम हैं। प्रोफेसर साहब का मानना है कि राजनैतिक व्यक्ति को साधु स्वभाव का होना चाहिए और हर हमेशा जन कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर राम अवतार यादव, हिमांशु कुमार सिंह, शुभम सिंह राना, शिव बाबा निषाद, पीयूष दुबे, अशर्फी पाल, शिव राम पटेल, रविकांत सहित कई सपाई उपस्थित रहे।

### एक जुलाई को धूमधाम से निकलेगी भगवान जगन्नाथ जी की रथ यात्रा, तैयारियां पूरी

**प्रयागराज।** श्री जगन्नाथ महोत्सव समिति प्रयागराज के द्वारा आषाढ़ मास की द्वितीय दिवस 1 जुलाई को सुबह 10 बजे आर्य भवन जीरो रोड से समिति के अध्यक्ष गोवर्धन दास गुप्ता जी एवं रथ यात्रा संयोजक बसंत लाल आजाद के नेतृत्व में बड़ी धूमधाम के साथ भगवान जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाएगी।रथ यात्रा सह संयोजक राजेश केसरवानी ने बताया कि भगवान जगन्नाथ जी की रथ यात्रा में भगवान जगन्नाथ जी अपने भ्राता बलभद्र एवं बहन सुभद्रा के साथ भक्तों को दर्शन देंगे ! रथ यात्रा में भगवान गणेश,लक्ष्मीनारायण, राधे कृष्ण, शिव पार्वती, गरुण, इंद्र महाराज, पांच पांडव, हनुमान जी महाराज की झांकी और मां काली का स्वांग , एवं भगवान जगन्नाथ जी का विजय ध्वज पताका,डीजे पाइप बैंड, आदि शामिल रहेगा ! रथ यात्रा आर्य भवन जीरो रोड से प्रारंभ होकर होकर अपने निर्धारित मार्ग अग्रसेन चौराहा, चमेली बाई धर्मशाला ,जॉनसन गंज, घंटाघर, लोकनाथ , ऊंचा मंडी ,बहादुरगंज, रामभवन, मुट्ठीगंज, हटिया पुलिस बूथ ,बांस मंडी, तिलक मार्ग, सत्तीचौरा, बलुआघाट, कटघर, से होते हुए काशीराज नगर में स्थित प्रयागेश्वर जगन्नाथ मंदिर में जाकर विश्राम लेगी और इस अवसर पर यात्रा मार्ग में व्यापारियों एवं नागरिकों के द्वारा भगवान जगन्नाथ जी पर पुष्प की वर्षा करते हुए स्वागत किया जाएगा और रथ यात्रा में शामिल भक्तों के लिए प्रसाद वितरण की तैयारी की जाएगी।

# 'छोटा परिवार-सुखी जीवन का आधार'

अखंड भारत संदेश

**शंकरगढ़।** छोटा परिवार-सुखी परिवार के सपने को सार्थक बनाने के उद्देश्य से उपकेंद्र स्तर पर उपलब्ध निशुल्क सेवाओं से जनमानस को रूबरू कराने के लिए आरोग्य केंद्र कल्याणपुर के पंचायत भवन कल्याणपुर में सास-बहू और बेटा सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान कल्याणपुर राम मिलन ने कहा कि आज छोटा परिवार सुखी परिवार का आधार बन चुका है, किसी को भी लड़का और लड़की में भेद नहीं करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन कर रहे आरोग्य केंद्र कल्याणपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी अभिषेक जायसवाल ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आज शासन द्वारा अनचाहे गर्भ को रोकने के लिए तमाम निशुल्क उपाय दिए जा रहे हैं। जिसका उपयोग कर जब तक न चाहे गर्भ नहीं धारण किया जा सकता। उन्होंने लोगों से छोटा परिवार रखने व लड़की-लड़के में भेद न करने की अपील की। इस मौके पर उपकेंद्र की एएनएम सिन्धू सिंह ने गर्भ निरोधक गोलियां के प्रयोग, अंतरा इंजेक्शन, कापर टी आदि के प्रयोग के विषय में विस्तार से जानकारी दी, यह भी बताया कि यह सभी चीजें आरोग्य केंद्र व अस्पताल में निशुल्क दी जाती हैं। इस मौके पर एएनएम राखी, आशा संगिनी कंचन सिंह के अलावा उदय भान यादव, हरिशंकर एवं संदीप विश्वकर्मा के साथ सभी आशा व गांव से आए हुए दो दर्जन से ज्यादा जोड़े उपस्थित थे।

### दिव्यांग विद्यालय का ताला तोड़ चोरों ने उड़ाए विद्यालय का सामान

**मेजा रोड।** मेजा के गेदुराही पहाड़ी पर स्थित दिव्यांग विद्यालय का ताला तोड़कर चोरों ने हजारों का माल लेकर रफूचक्कर हो गए। विद्यालय के चौकीदारों ने मेजा पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। मिली जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के गेदुराही पहाड़ी स्थित दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित समेकित विशेष माध्यमिक विद्यालय के चौकीदार रामचंद्र यादव व राम कलेश्वर निवासी गेदुराही ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उनकी ड्यूटी विद्यालय में है। सोमवार की शाम करीब पांच बजे दोनों चौकीदार घर पर खाना खाने चले गए। शाम सात बजे विद्यालय लौटने पर देखा कि विद्यालय के कमरे का ताला टूटा हुआ है और अंदर लगे दस पंखों मे आठ पंखे गायब हैं। काफी खोजबीन व अगल-बगल पुछताछ किया लेकिन कुछ पता नहीं चल सका। जिससे चौकीदारों ने मेजा कोतवाली मे तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

# प्रयागराज के समाज कल्याण अधिकारी के निलंबन पर रोक, हाईकोर्ट ने सरकार से किया जवाब तलब

अखंड भारत संदेश

**प्रयागराज।** इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रयागराज के समाज कल्याण अधिकारी प्रवीण कुमार सिंह के निलंबन पर रोक लगाते हुए मामले में सरकार से जवाब तलब किया है। हाईकोर्ट ने कहा है कि सरकार छह हफ्ते में अपना जवाब दाखिल करें। कोर्ट ने कहा है कि समाज कल्याण अधिकारी जांच में अपना सहयोग करेंगे। यह आदेश न्यायमूर्ति महेश चंद्र त्रिपाठी ने प्रवीण कुमार सिंह की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है।याची की ओर से तर्क दिया गया कि उसे अनियमितता के मामले में प्रमुख सचिव समाज कल्याण उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से 23 मई के द्वारा पारित आदेश के तहत निलंबित कर दिया गया है। याची ने अपने इस निलंबन को गलत बताया। कहा कि उनके द्वारा उनके द्वारा ना तो कोई अनियमितता की गई है और ना ही नियमों का उल्लंघन किया गया है। उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी ईमानदारी और तत्परता से किया है। याची ने अपने निलंबन को गलत बताया और कहा कि प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया।याची की ओर से कहा गया कि उनके निलंबन के मामले में कोई जांच अधिकारी नियुक्त नहीं किया गया और ना ही कोई इंक्वायरी की गई। बिना इंक्वायरी के ही उन्हें निलंबित कर दिया गया। कोर्ट ने भी कहा कि सरकार की ओर से दी गई जानकारी में इंक्वायरी अफसर की नियुक्ति के मामले में कोई तथ्य नहीं दिया गया। कोर्ट ने मामले को विचारणीय मानते सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है।जिला समाज कल्याण अधिकारी प्रवीण कुमार सिंह को निलंबित कर दिया गया है। उन पर जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय में प्रधानाचार्य के रिक्त पदों पर नियमों की अवहेलना करते हुए प्रभार देने का आरोप है। इसके अलावा कागजातों तथा बिल को प्रभारी प्रधानाचार्य का हस्ताक्षर कराए बगैर ही स्वीकृत करने का भी आरोप है।

### डेढ़ लाख करोड़ बैंक फ्रॉड मामले में अनिल अंबानी, टीना सहित अन्य के खिलाफ उत्पीड़न की कर्रवाई पर रोक

**प्रयागराज।** इलाहाबाद हाई कोर्ट ने डेढ़ लाख करोड़ रुपये के बैंक फ्रॉड मामले में उद्योगपति अनिल धीरूभाई अंबानी,उनकी पत्नी टीना अंबानी सहित परिवार व कंपनी के अन्य लोगों के खिलाफ बुलंदशहर के जहांगीराबाद थाने में दर्ज एफआईआर में उत्पीड़न की करवाई पर रोक लगाते हुए सेबी, आरबीआई और स्टेट बैंक सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।कोर्ट ने कहा है की मामला गंभीर है। इसलिए विरोधी पार्टियां जवाब दाखिल करें। कोर्ट ने मामले में सुनवाई के लिए 25 जुलाई की तिथि लगाई है। यह आदेश न्यायमूर्ति सुनीत अग्रवाल और न्यायमूर्ति गौतम चौधरी ने पवन कुमार की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है।कोर्ट में याची ने बताया कि 16 मई को दर्ज एफआईआर विजय माल्या से 10 गुना अधिक सीरियस फ्रॉड किया गया है। सेबी ने जांच की और रिलायंस होम फाइनेंस कंपनी को फ्रॉड घोषित किया है। इस पर 1514 करोड बैंक व 570 करोड लेनदारों के पैसे का घपला करने का आरोप लगाया गया है। याची का कहना है कि स्थानीय पुलिस सही विवेचना नहीं कर सकती। इसलिए केस सी बी आई को स्थानांतरित किया जाय। याचिका में ईडी ( प्रवर्तन निदेशालय) को भी पक्षकार बनाया गया है। याची की अर्जी पर एसीजेएम बुलंदशहर के आदेश पर एफ आई आर दर्ज की गई है।

### अनिल यादव हत्याकांड का पुलिस ने किया खुलासा, जमीन को लेकर हुई हत्या

**धनूपुर।** उतरांव पुलिस ने घाटमपुर में हुई अनिल यादव हत्याकांड का बुधवार को खुलासा कर दिया।जमीन को लेकर एक ढाबा संचालक ने अपराधी किस्म के लोगों को सुपारी देकर अनिल यादव की हत्या कराई थी। मामले में पुलिस ने ढाबा संचालक समेत तीन अन्य अपराधी किस्म के लोगों को दबोच कर हत्याकांड का पटाक्षेप करते हुए बुधवार को जेल भेज दिया है। 23 जून की रात अनिल यादव उम्र 20 पुत्र बासुदेव यादव की गला घोट कर हत्या कर शव को प्राथमिक विद्यालय घाटमपुर के पास फेंक दिया गया था। इस मामले में अनिल यादव के चाचा लालचंद यादव ने चार लोगों के खिलाफ नामजद केस दर्ज कराया था। लेकिन पुलिस जब हत्याकांड की जांच शुरू की तो मामला जमीन विवाद को लेकर था।अनिल यादव की हत्या की बात पुलिस के सामने आई पुलिस के अनुसार घाटमपुर गांव का ही राम सिंह यादव कटहरा बाजार में ढाबा खोल रखा है। ढाबा संचालक ने मृतक युवक अनिल के पिता से जमीन बैनामा कराया था। जिसका पैसे के लेनदेन का मामला चल रहा था। जब वह पैसा मांगने जाता था तो उसे टालमटोल कर दिया जाता था। जिससे खुन्नस खाए राम सिंह यादव ने अनिल यादव को रास्ते से हटाने की योजना बना डाली थी।ढाबा मालिक राम सिंह यादव ने अपराधी किस्म के लल्लन यादव और जगत बहादुर यादव निवासी चकनेंदू , हंडिया और लालू यादव निवासी घाटमपुर को 20-20 हजार रुपए की सुपारी देकर हत्या की योजना बनाई। 23 जून की रात जब अनिल यादव कटहरा बाजार में राम सिंह के ढाबे पर खाना खाने गया था तभी मौका पाकर राम सिंह यादव सुपारी दिए गए अपराधी किस्म के लोगों को बुलाकर रुमाल से अनिल यादव की गला घोंट कर हत्या कर शव को विद्यालय के पास फेंकवा दिया । पुलिस ने जब मुख्य आरोपी राम सिंह यादव को दबोचा तो उसने पुलिस से सारे राज तोते की तरह खोल दिया। पुलिस ने हत्याकांड में शामिल चारों लोगों को दबोच लिया है।पुलिस ने अभियुक्तों की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त एक बाइक और आला कत्ल रुमाल को बरामद कर हत्यारोपी चारों गुनहगारों को जेल भेज दिया।

# सपा जिलाध्यक्ष की 9.83 करोड़ की सम्पत्तियां सीज, हड़कंप

## डिग्री कालेज, बाग व खेत में नोटिस की गई चस्पा

अखंड भारत संदेश

**परियावां, प्रतापगढ़।** दहेंगरी जमालपुर स्थित सुंदरलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय तथा दिलेरगंज स्थित लगभग 12 बीघा खेती योग्य भूमि धरी व 6 बीघा आम की बाग में प्रशासन की जब्ती का नोटिस चस्पा किया गया। साथ में सपा जिलाध्यक्ष छविनाथ के दो वाहन भी जब्त होंगे। समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव के खिलाफ राजनीतिक बदले की भावना से जिला प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए उनके पिता के नाम पर बना सुंदर लाल यादव स्नातकोत्तर महाविद्यालय तथा खेत व बाग समेत 9.83 करोड़ों रुपए की संपत्ति बुधवार को भारी पुलिस बल की मौजूदगी में जब्त कर लिया गया है।

मानिकपुर थाना क्षेत्र के करेटी निवासी छविनाथ यादव समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष तथा कुंडा विधानसभा क्षेत्र के गत विधानसभा चुनाव के सपा प्रत्याशी व कुंडा नगर पंचायत चेयरमैन गुलशन यादव के अनुज भ्राता है। विकास खंड कुंडा की ग्राम पंचायत तथा मानिकपुर थाना क्षेत्र के दहेंगरी जमालपुर में इनके स्वर्गीय पिता सुंदर लाल यादव के नाम पर स्नातकोत्तर महाविद्यालय का भव्य शिक्षा मंदिर स्थापित है, जिसके वह प्रबंधक है। क्षेत्र का सबसे अच्छा महाविद्यालय होने के कारण लगभग ढाई हजार छात्र-छात्राएं शिक्षार्थी है। जनपद में सपा की सक्रिय राजनीति करना व अपने अग्रज भ्राता गुलशन यादव को कुंडा विधानसभा से चुनाव लड़वाना छविनाथ यादव को अब महंगा पड़ रहा है। क्योंकि अब वह अपने राजनीतिक विरोधियों के निशाने पर आ गए हैं। जिसके कारण उनके ऊपर आए दिन बदले की कार्रवाई हो रही है। 15 दिन के अंदर कुंडा कोतवाली में दो मुकदमा पंजीकृत हो चुका है। बुधवार को तो उस समय हड़कंप मच गया। जब उपजिला धिकारी सतीश चंद्र त्रिपाठी, क्षेत्राधिकारी अजीत कुमार सिंह, कुंडा कोतवाली प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार तथा मानिकपुर थाना प्रभारी निरीक्षक मनीष कुमार पांडे भारी संख्या में पुलिस पीएसी लेकर जब दहंगरी जमालपुर स्थित स्नातकोत्तर महाविद्यालय पहुंचे। जहां मुनादी करके लोगों को कार्रवाई की जानकारी दी गई।


डिग्री कालेज के सामने जिला प्रशासन की तख्ती लगाते पुलिस कर्मी।

मानिकपुर प्रभारी निरीक्षक मनीष पांडे ने लाउडस्पीकर से जानकारी देते हुए बताया कि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रबंधक छविनाथ यादव के खिलाफ धारा 2/3 के अंतर्गत तथा धारा 14(1) गैंगस्टर एक्ट के अंतर्गत गाटा संख्या 924,934,935,11 76,1177 व 1178 भूमि पर निर्मित स्वर्गीय सुंदर लाल यादव स्नातकोत्तर महाविद्यालय देहगरी जमालपुर तथा कुंडा ब्लॉक व कोतवाली क्षेत्र के दिलेरगंज गांव की 12 बीघा खेतिहर जमीन व 6 बीघा आम की बाग को जिलाधिकारी के आदेश पर प्रशासन जब्त कर रहा है। तीनों स्थानों पर जिलाधिकारी के आदेश का बोर्ड भी लगा दिया गया है। प्रशासन ने कार्यालय वह प्रवेश द्वार पर ताला लगा कर महाविद्यालय को सीज कर दिया है। प्रशासन की इस कार्रवाई से क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है वही सपाइयों में आक्रोश है कि विद्यालय को सील कर देने से उन छात्रों का भविष्य का क्या होगा? जो विद्यालय में शिक्षा ग्रहण अथवा विद्यालय में प्रवेश लिया है। यह कार्रवाई करने के पहले शासन और प्रशासन को उन छात्र-छात्राओं के भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए था,कि अब उन छात्र-छात्राओं के भविष्य का

# पट्टी में नहीं बरस रहे है मेघ

## भीषण गर्मी और उमस से लोगो का जीना हुआ दुश्वार

अखंड भारत संदेश

**पट्टी, प्रतापगढ़।** बीते दस दिन से भीषण गर्मी और उमस से लोगों का जीना दुश्वार हो गया है। बीच में हल्की फुल्की बूंदाबांदी हुई थी लेकिन फिर से उमस और गर्मी ने लोगों को बेहाल कर दिया है। बुधवार को दिन भर बादल बने रहे लेकिन बारिश नहीं हुई।

पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपास राह रह-रह कर बादल दिखाई दे रहे हैं लेकिन सूरज की रोशनी जब निकलती है तो लोग परेशान हो उठते हैं। बारिश अभी रफ्तार नहीं पकड़ सकी है। इस दौरान चल रही पुरवा हवा उमस के साथ गर्मी को बेदहाशा बढ़ा रही है। बुधवार को दिनभर बादल बने रहे तो वही बुधवार को भी बादल छाए रहे हालांकि तापमान में मामूली अंतर दिखाई दिया लेकिन उमस के कारण लोग परेशान दिखाई दिए। मौसम विभाग के अनुसार अधिकतम पारा 37 सेल्सियस से उछलकर 38 डिग्री सेल्सियस पर जा पहुंचा है। बुधवार की सुबह हालांकि उमस से थोड़ी देर रात जरूर है लेकिन दोपहर होते-होते फिर से गर्मी अचानक बढ़ गई। रह-रहकर बारिश का माहौल तो बन रहा है लेकिन बारिश नहीं हो पा रही है बारिश ना होने का कारण गर्मी से लोग परेशान दिखाई दे रहे हैं।

# गुणवत्ता विहीन हो रहा है न्यायालय कक्ष का निर्माण

## न्यायाधीशों को शिकायत पत्र भेजकर की शिकायत

अखंड भारत संदेश

**लालगंज, प्रतापगढ़।** स्थानीय दीवानी न्यायालय में निमार्णाधीन कक्षों का निर्माण कार्यदायी संस्था द्वारा गुणवत्ता विहीन कराया जा रहा है। मामले की शिकायत संयुक्त अधिवक्ता समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने न्यायाधीशों को शिकायत पत्र भेज कर कार्रवाई की मांग की है।

स्थानीय दीवानी न्यायालय में करोडों की लागत से न्यायालय कक्षों का निर्माण कार्य एक कार्यदायी संस्था द्वारा कराया जा रहा है। आरोप है कि निर्माण कार्य में खूब जमकर अनियमितता की जा रही है। कक्ष निर्माण में चैथे नम्बर की ईट के साथ ही घटिया मोरंग का प्रयोग किया जा रहा है। यही नहीं, नॉन ब्रांड सीमेंट व लोहे का भी प्रयोग हो रहा है। ठेकेदार द्वारा धांधली बड़े पैमाने पर की जा रही है। अधिवक्ताओं के कहने के बावजूद निर्माण कार्य की गुणवत्ता में कोई परिवर्तन नही हुआ। संयुक्त अधिवक्ता समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शहजाद अंसारी ने कार्यदायी संस्था द्वारा की जा रही अनियमिता की शिकायत जिला एवं सत्र न्यायाधीश समेत प्रशासनिक जज उच्च न्यायालय इलाहाबाद से की है। उपाध्यक्ष ने शिकायत पत्र में कहा है कि मामले की जाँच कराकर दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई के साथ ही मानक के अनुरूप निर्माण कार्य कराया जाए।

## उत्पीड़न पर खफा वकीलों ने किया न्यायिक कामकाज का बहिष्कार

**लालगंज, प्रतापगढ़।** जिला मुख्यालय पर साथियों के पुलिस व प्रशासनिक उत्पीड़न से नाराज स्थानीय वकीलों ने भी बुधवार को न्यायिक कामकाज का बहिष्कार किया। संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश की अध्यक्षता में हुई बैठक में कहा गया कि जिले के अधिवक्ता विकास को फर्जी मुकदमें में नामजद किया गया है। वहीं एक अन्य साथी अधिवक्ता का भी पुलिस की लापरवाही से उत्पीड़न हो रहा है। बैठक का संचालन महामंत्री शेषनाथ तिवारी ने किया।

# पालीथिन के विरुद्ध शपथ लेने के बाद-गाजे-बाजे के साथ निकली जागरुकता रैली, तीन जुलाई तक चलेगा अभियान

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** प्लास्टिक पालीथिन के विरोध में नगर पालिका द्वारा चलाये गये पांच दिवसीय जागरुकता अभियान के पहले दिन बुधवार को प्रातः कम्पनी गार्डेन में नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह की मौजूदगी में बड़ी संख्या में लोगों ने प्लास्टिक के इस्तेमाल न करने की शपथ ली।

इसके बाद कम्पनी गार्डेन से चैक घंटाघर तक गाजे-बाजे के साथ रैली निकालकर जागरुकता अभियान का आगाज किया गया।

पालीथिन के विरुद्ध शपथ दिलातीं नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह।

शपथ ग्रहण व रैली में कम्पनी गार्डेन में प्रातः टहलने वाले सैकड़ों लोग शामिल हुए। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह ने कहा कि हम सबने यह ठाना है, बेल्हा को पालीथिन मुक्त बनाना है। जागरुकता अभियान कार्यक्रम में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह, प्रशांत सिंह, सपाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, मिथिलेश सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह व राजेश बिंद, स्वच्छ भारत मिशन के आशीष मिश्रा व वरुण सिंह आदि रहे। रैली में आगे-आगे बैण्ड बज रहा था तथा पीछे नगर पालिकाध्यक्ष, अधिशाषी अधिकारी सहित सभी कर्मचारी तथा प्रातःकाल टहलने वाले लोग भी शामिल थे। लोगों में पालिथिन न करने के प्रति उत्साह पैदा करने की कोशिश की गई, जिसमें लगभग 400 लोग शामिल हुए। बता दें कि यह जागरुकता अभियान तीन जुलाई तक चलेगा।

# पुलिस के सामने रेल कर्मियों का अग्निवीर के खिलाफ प्रदर्शन

## जीआरपी ने प्रदर्शन करने पर लगाई थी रोक, मेंस यूनियन दफ्तर के सामने जमकर हुई नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** अग्निवीर योजना का विरोध थम नहीं रहा है। बुधवार को नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन शाखा प्रतापगढ़ ने रोक के बावजूद जोरदार तरीके से प्रदर्शन किया। पुलिस फोर्स के सामने नारेबाजी की गई। एसएस को ज्ञापन सौंपा गया।

सेना में चार साल की भर्ती योजना के विरोध में प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन परिसर में मेंस यूनियन दफ्तर के सामने रेल कर्मियों ने नारेबाजी की। अध्यक्ष मोहम्मद शफीक ने प्रदर्शन का नेतृत्व किया। शाखा मंत्री अनिल शुक्ला ने कहा कि सरकार की अग्निवीर योजना नौजवानों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। यूनियन के केंद्रीय नेतृत्व के आह्वान पर देश भर आज इसके विरोध में प्रदर्शन हो रहे हैं। इस मौके पर ओपी राव, भरत यादव, अजय आनंद, बबिता पांडेय, वीके तिवारी, मनीष पांडे, राजकिशोर, मोहम्मद अनीश, संतोष तिवारी सहित काफी संख्या में रेल कर्मचारी विरोध प्रदर्शन में शामिल रहे। खास बात यह है कि रेलवे ने अग्निवीर के खिलाफ रेलवे प्लेटफार्म और परिसर में प्रदर्शन करने पर रोक लगाई है। धारा 144 लगी हुई है। इसके बाद भी मेंस यूनियन ने सकुर्लेटिंग एरिया दफ्तर के सामने आरपीएफ, सिविल पुलिस एलआईयू की मौजूदगी में विरोध प्रदर्शन किया। एसओ जीआरपी ने बताया कि धारा 144 लगी है। विरोध प्रदर्शन पर पाबंदी है। जो भी इसका उल्लंघन करेगा। उसके खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। शाखा मंत्री अनिल शुक्ला ने कहा कि उन्होंने अपने यूनियन दफ्तर के सामने प्रदर्शन किया है। हालंकि प्रदर्शन के दौरान कुछ रेल कर्मी सामने नहीं आ रहे थे। उन्हें डर था कि कहीं उनकी फोटो न आ जाए। एसएस मोहम्मद शमीम ने बताया कि यूनियन की तरफ से ज्ञापन मिला है।


अग्निवीर के खिलाफ प्रदर्शन करत रेल कर्मचारी।

## मीटिंग में छाया रहा अवैध रेलवे क्वार्टरों का मुद्दा

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** रेलवे हाउसिंग एरिया कमेटी की बैठक में अवैध क्वार्टरों का मुद्दा जोर शोर से छाया रहा। यूनियन और एसोसिएशन के नेताओं ने इन क्वार्टरों में फर्जी रेलवे भर्ती बोर्ड का दफ्तर और चकलाघर चलने का भी आरोप लगाया गया। नेताओं ने इन क्वार्टरों को खाली कराने के साथ बिजली, पानी का कनेक्शन काटने और जिन लोगों ने किराए पर उठा रखा है उनके खिलाफ कार्रवाई करने की मांग डीईएन और आईओडब्ल्यू से की है। मजदूर यूनियन के शाखा अध्यक्ष मोहम्मद अफजल खां ने इस तरह के क्वार्टरों को खाली कराने की मांग की। बैठक में मेंस यूनियन की तरफ से मंत्री अनिल शुक्ला, अजय आनंद, मजदूर यूनियन की तरफ से मंत्री धर्मेंद्र दूबे, अफजल खां और ओबीसी एससीएसटी एसोसिएशन से राजाराम यादव मौजूद थे। अधिकारियों ने नेताओं की समस्या का निदान करने का भरोसा दिलाया।

# जल संरक्षण व प्रबन्धन में जन जन को निभानी होगी भूमिकाः समाज शेखर

## 16 जुलाई से जिले में मनाया जाएगा भू जल सप्ताह

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** जिला भू गर्भ जल प्रबन्धन परिषद् के नामित सदस्य समाज शेखर ने सभी सामाजिक कार्यकताओं तथा संगठनों से आगामी बरसात से पहले व बरसात में सभी जल स्त्रोतों, गडही, गडढों में अधिकतम जल भरण हेतु अभियान चलाकर जन सहयोग तथा लोक भागीदारी से जल जन विकास अभियान के तहत जल संरक्षण व प्रबन्धन का कार्य करने की अपील की है।

सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने भू गर्भ जल विभाग के सहायक अभियन्ता रवि शंकर पटेल व लघु सिचाई विभाग के सहायक अभियन्ता विक्रमाजीत के साथ आगामी बरसात व भू जल सप्ताह के अवसर पर जल संरक्षण व प्रबन्धन हेतु जन भागीदारी पर चर्चा करते हुए व्यक्त किया। वहीं भू गर्भ जल विभाग के रवि शंकर पटेल ने कहा कि आगामी 16 जुलाई से 22 जुलाई तक जनपद में भव्यता के साथ भू जल सप्ताह मनाया जायेगा। जिसमें सम्बन्धित विभागों, पंचायतों, स्कूल कालेजों के साथ साथ जन भागीदारी हेतु प्रयास किया जायेगा।


जल विभाग के सहायक अभियंता के साथ समाज शेखर।

## करंट की चपेट में आने से युवती की मौत, कोहराम

**लालगंज, प्रतापगढ़।** करंट की चपेट में आने से युवती की आकस्मिक मौत हो गयी। उदयपुर थाना क्षेत्र के पिपरी मुस्तफाबाद निवासी हंसराज यादव की पुत्री रेखा देवी 30 बुधवार की सुबह करीब आठ बजे घर पर चावल सफाई हेतु पंखा लगा रही थी। अचानक वह पंखे के करंट की चपेट में आ गयी। मृतका के शोर मचाने पर परिजन वहां पहुंचे और पंखे का बटन बंद किया। इस बीच युवती की सांसे थम गयी। बताया जाता है कि युवती लालगंज के एक स्कूल में जीएनएम कोर्स कर रही थी। इस समय उसका दूसरा वर्ष का सेमेस्टर था। वहीं मृतका रेखा की शादी पांच वर्ष पूर्व राहाटीकर के पूरे पुनीत लाल गांव में अरविंद यादव के साथ हुई थी। पति अरविंद इस समय हरियाणा में नौकरी किया करता है। सूचना मिलने पर मृतका के ससुरालीजन पहुंचे और उसका शव लेकर अपने घर चले गये। इधर एसओ एहसानुलहक का कहना है कि पुलिस को अभी तक घटना की जानकारी नही है। जानकारी कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

# राजस्थान के मुख्यमंत्री का युवाओं ने फूंका पुतला

राजस्थान के मुख्यमंत्री का पुतला फूंकते भाजयुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता

अखंड भारत संदेश

**प्रतापगढ़।** राजस्थान के उदयपुर में कन्हैया लाल की कट्टरपंथियों द्वारा दिनदहाड़े की गई हत्या के विरोध में अम्बेडकर चैराहे पर भाजयुमो के पूर्व जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता के नेतृत्व में युवाओं ने राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का पुतला दहन किया गया। इस दौरान पूर्व भाजयुमो जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता ने कहा उदयपुर की इस नृशंस घटना की जिम्मेदार गहलोत सरकार है। राजस्थान के मुख्यमंत्री इस घटना को हत्याकांड कहते हैं। जब कोई हत्याकांड का वीडियो बनाता है और उसे वायरल करता है यह सामान्य विवाद में नहीं होता है। इस दौरान भाजपा कार्यकताओं ने अशोक गहलोत मुदार्बाद, कांग्रेस सरकार मुदार्बाद के नारे लगाये। इस अवसर पर भाजपा जिला सह मीडिया प्रभारी सिद्धार्थ सिंह रघुवर, भाजयुमो मंडल अध्यक्ष अवनीश पाण्डेय सूरज, सदर मंडल अध्यक्ष राहुल ओझा, आशुतोष मिश्रा, शिवम् तिवारी, रिशभ विश्वकर्मा, पवन गुप्ता, अभिषेक पाल, सूरज गुप्ता, सत्यम तिवारी, जितेन्द्र गौड़, शोभित कुमार, विपिन सिंह, संतोष मोदनवाल आदि उपस्थित रहे।

## बाजार गई महिला से छेड़छाड़ कर नकदी व मोबाइल छीना

**परियावां, प्रतापगढ़।** नवाबगंज थाना क्षेत्र के सधई का पुरवा अस्थान निवासी राजकुमारी पत्नी सन्तराम पटेल में नवाबगंज पुलिस को दिए गए तहरीर में आरोप लगाया है कि गांव के सरहंग व दबंग व्यक्ति ने मंगलवार को कुसुवापुर बाजार जाते समय लगभग साढ़े पांच बजे मेरे साथ छेड़छाड़ करने लगे। विरोध करने पर मेरा मोबाइल व एक हजार रुपया नकदी छीन लिया जिससे मैं बाजार से सामान नही खरीद सकी जब मैं अपना पैसा व मोबाइल मांगने आरोपी के घर पहुँचा तो मेरे साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया और शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दिया। बताते है कि अस्थान चैकी इंचार्ज पीड़ित महिला के पास घटना की जांच करने पहुचे मौके पर आरोपी नहीं मिला।

# सात जन्मों का रिश्ता सात दिनों में टूटा

## पत्नी ने पति पर लगाया पेट मे एक किडनी होने का आरोप

अखंड भारत संदेश

**पट्टी, प्रतापगढ़।** कहते है सात विवाह सात जन्मों का रिश्ता होता है। आपसी विश्वास और प्रेम का अनूठा पवित्र रिश्ता कैसे टूटता है इसकी भी बानगी कभी कभी देखने को मिलती है। ऐसा ही एक मामला सामने आया है। पति के पेट मे एक किडनी होने का आरोप लगाकर एक पत्नी ने सात जन्मों का रिश्ता महज सात दिनों में तोड़ दिया। पंचायत में मामला नही सुलझा तो पीड़ित पति ने थाने में तहरीर देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। उधर पत्नी का कहना है कि पति का मेडिकल कराने के बाद अगर पेट मे दो किडनी निकली तो वह ससुराल चली जायेगी।

पड़ोसी जनपद जौनपुर के थाना सिंगरामऊ अंतर्गत कैथोला गांव का एक युवक जेसीबी चलाने का कार्य करता है। वह पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत अकारीपुर गांव में जेसीबी का काम एक साल पहले शुरू किया तो यहां की रहने वाली एक युवती से उसकी आंखें चार हो गई। फिर धीरे-धीरे बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ा तो सात जन्मों के बंधन में बंध जाने का फैसला दोनों ने ले लिया। इसके बाद घरवालों की रजामंदी के बाद बीते 8 जून 2022 को धूमधाम से दोनों वैवाहिक बंधन में बंध गए। युवती अपनी ससुराल पहुंची तो पति के पेट में लगा हुआ चीरा देखकर पूछताछ किया। पहले तो पत्नी से आना-कानी किया लेकिन गहराई से पूछताछ किया तो जिसमें उसे पता चला कि उसके पति की एक किडनी नहीं है। इस पर एक सप्ताह बाद वह अपने मायके अकारीपुर चली आई। उसने घरवालों को सारी बात बताई। इधर एक सप्ताह बाद ससुरालीजन युवती को ससुराल ले जाने के लिए उसके मायके आए तो उसने वहां जाने के लिए साफ मना कर दिया और पेट में किडनी ना होने का दावा किया। उसने यह भी कहा कि अगर उसके पेट में दो किडनी निकल आए तो वह खुशी से ससुराल चली जाएगी। इस पर दोनों पक्षों में अकार पुर गांव में पंचायत भी हुई लेकिन पंचायत में मामला नहीं निपटा तो ससुरालीजन विवाहिता को ससुराल ले जाने के लिए आसपुर देवसरा थाना में शिकायती पत्र देकर मामले में उचित कार्यवाही की मांग की है।

# विवाहिता की मौत को लेकर प्रशासन असमंजस में, पीएम रिर्पोट का इंतजार

अखंड भारत संदेश

**लालगंज, प्रतापगढ़।** संदिग्ध परिस्थितियों में नगर पंचायत के घुइसरनाथ रोड पर विवाहिता की मौत को लेकर दूसरे दिन बुधवार को भी प्रशासन असमंजस मे दिखा।

हालांकि पुलिस ने मंगलवार की देर शाम ही विवाहिता का शव पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवा दिया था। देर शाम तक उसके शव का पीएम कराने में ससुराल तथा मायके पक्ष के लोग जिला मुख्यालय पर मौजूद बताये गये। घुइसरनाथ रोड स्थित व्यापारी गणेश जायसवाल की पत्नी बबिता जायसवाल 35 की मंगलवार को संदिग्ध दशा में मौत हो गयी।

अस्पताल से बबिता की मौत घोषित होने के बाद ससुरालीजन उसका शव लेकर घर चले आये। तब तक मृतका के मायके पक्ष के लोग भी यहां पहुंच गये और उसकी मौत को पुलिस से हत्या बताने लगे। इधर मृतका के अनाथ हुए बेटे नैतिक 11 व नितिन 09 का घटना के बाद से ही रो रो कर बुरा हाल है। ससुराल पक्ष के लोग बबिता की मौत हृदयगति रूकने से बता रहे हैं। प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल का कहना है कि पीएम रिर्पोट का इंतजार किया जा रहा है, मायके पक्ष से मृतका के किसी नजदीकी परिजन द्वारा तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी। इधर नगर के व्यापारी की पत्नी के निधन पर व्यापारियों में भी दुख का माहौल देखा जा रहा है। जनप्रतिनिधियों को भी व्यापारी के घर पहुंचकर घटना को लेकर संवेदना जताते दिखे।

## खबर संक्षेप

### देवर और भांजे ने महिला और बेटे को बेरहमी से पीटा

**कौशाम्बी।** चरवा थाना क्षेत्र के कमाल पुर सुधवर गांव में एक महिला व उसके बेटे को महिला के देवर वा उसके भांजे ने बेरहमी से पीटा है महिला ने मामले की शिकायत थाना पुलिस से की है घटना 28 जून की है। घटनाक्रम के मुताबिक सविता गुप्ता पत्नी ज्ञान चन्द्र कमालपुर सुधवर थाना चरवा 28 जून को शाम 7.30 बजे महिला घर पर थी इसी बीच महिला का देवर और उसका भांजा पहुंचा और बच्चों के विवाद में महिला को घसीट कर बेरहमी से पीट दिया है बीच-बचाव करने पहुंचे उसके बेटे को भी दोनों युवकों ने बेरहमी से पीटा है। महिला का कहना है देवर सोनू साहू पुत्र बैजनाथ बंदूक लेकर घर पहुँचा और भांजा सौरभ पुत्र विजय प्रकाश निवासी इ-दिरा नगर बमरौली थाना पुरामुफ्ती हाथ में तमंचा लिए हुए था 28 जून को दोनो गाली गलौज करते हुए घर के अन्दर घसीट ले गए और बाल पकड़कर पटक कर बुरी नियत से ब्लाउज फाड़ डाले महिला का कहना कि जब वह चिल्लायी तो बीच बचाव करने लड़का हर्षित गुप्ता मौके पर पहुंचा तो दोनों ने उसे भी बेरहमी से पीटा है।

# संचारी रोगों पर नियन्त्रण को लेकर 11 विभाग मिलकर करेंगे काम : सीएमओ

अखंड भारत संदेश

**विशेष संचारी रोग नियन्त्रण अभियान को लेकर समन्वय समिति की बैठक सम्पन्न, संचारी रोगों पर वार के लिए अभियान एक जुलाई से**

संचारी रोग की बैठक करते सीएमओ

**कौशांबी।** मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में बुधवार को विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान की द्वितीय अन्तर्विभागीय समन्वय समिति की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ॰ केसी राय ने की मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि जनपद में संचारी रोग एवं दिमागी बुखार पर नियंत्रण के लिए 11 विभिन्न विभाग आपसी समन्वय एवं सहयोग से अपने-अपने दायित्व का निर्वहन करेंगे। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग विभिन्न विभागों के बीच समन्वय के लिए नोडल विभाग के तौर पर कार्य करेगा।

**अभियान का वृहद् स्तर पर सभी ब्लॉक में प्रचार-प्रसार किया जायेगा :** नोडल अधिकारी डॉ. डी एस यादव ने बताया कि अभियान के अंतर्गत आशा, आंगनबाड़ी व आशासंगिनी घर-घर जायेंगी और भ्रमण के दौरान बुखार, क्षय रोग के लक्षण, खांसी तथा सांस लेने में दिक्कत वाले रोगियों और कुपोषित बच्चों की लाइन लिस्टिंग कर सूची बनाएंगी सूची को ए.एन.एम के माध्यम से ब्लॉक मुख्यालय को भेजेंगी। जांच एवं उपचार की व्यवस्था के साथ लक्षण युक्त मरीज के लिए निःशुल्क परिवहन के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था सहित अन्य गतिविधियों पर कार्य किया जाएगा बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग कुपोषित तथा अति कुपोषित बच्चों को आंगनबाड़ी कार्यकताओं के माध्यम से पोषण पुनर्वास केंद्रों पर उपचार एवं पोषण के लिए भेजें। जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि सभी विभागों से समन्वय स्थापित कर माइक्रोप्लान तैयार किया गया है शिक्षा विभाग ने अभी तक अपना प्लान नही दिया हैं जिसके लिए उन्हें सूचना दी गयी हैं ताकि उनका भी माइक्रोप्लान मिल सके उन्होंने बताया कि विशेष संचारी रोग नियंत्रण / दस्तक अभियान एक जुलाई से 31 जुलाई तक चलाया जायेगा`बैठक में उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डीएमसी, यूनिसेफ, डबल्यूएचओ के प्रतिनिधि के साथ-साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

**विभागों की मुख्य गतिविधियां और जिम्मेदारी :** शिक्षा विभाग का कार्य अभिभावकों, शिक्षकों एवं छात्रों का व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर दिमागी बुखार एवं संचारी रोगों से बचाव हेतु संवेदीकरण करना होगा क्लोरिनेशन डेमो पेयजल उबालना, साबुन से हाथ धोना, शौचालय का प्रयोग करना आदि के बारे में पोस्टर व निबंध लेखन के माध्यम से छात्रों में जागरूकता फैलाई जाएगी। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की ओर से कई रोगों के उपरांत दिव्यांग बच्चों का सर्वे करना उन्हें आवश्यक सहायक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना एवं जिला पुनर्वास केंद्र का सुदृढ़ीकरण करना रहेगा। नगर विकास विभाग का कार्य शुद्ध पेयजल का प्रयोग, खुली नालियों को ढकने की व्यवस्था, नालियों की साफ-सफाई, कूड़े का निस्तारण, शहरी क्षेत्रों में छिड़काव एवं फॉगिंग करना होगा इसके साथ ही खुले में शौच से क्षेत्र को मुक्त करना संबंधी विषयों पर मोहल्ला निगरानी समितियों के माध्यम से जागरूकता फैलाना रहेगा।

## न्यूज झरोखा

### कोखराज ग्राम में मनरेगा के तहत हुए कार्यो की हुई जांच

**कोखराज।** कौशांबी सिराथू बिकास खण्ड के कोखराज ग्राम पंचायत में मनरेगा योजना के तहत कराए गए कार्यो की जांच करने अधिकारी गांव पहुंचे हैं और गांव की गलियों में घूमकर मनरेगा योजना के तहत कराए गए कार्यों की जांच की है। मनरेगा योजना से कराए गए कार्यों की जांच के दौरान चकरोड बाबूजी के खेत से कच्चा निर्माण पाया गया कोखराज पुल से गैस एजेंसी तक पक्का नाला निर्माण नफीस के खेत तक कच्चा निर्माण राजा तालाब की सिल्ट सफाई, आवास की निर्माण सत्यापन आदि कोखराज के 12 पुरवा में ग्रामीणों के साथ बैठकर जांच अधिकारियों ने मनरेगा योजना से कराए गए कार्यो की लोगों से जानकारी ली जिसमें सभी कालोनियों का पूर्ण भुगतान पाया गया।

### साइबर अपराधों की रोकथाम के लिए गोष्ठी आयोजित

**कौशाम्बी।** साइबर अपराध आम जनमानस के लिए खतरा बनता जा रहा है इससे बचाव के तौर-तरीकों पर आम जनमानस व्यापारियों को पुलिस सचेत कर रही है पश्चिम शरीरा थाना में साइबर अपराधों से रोकथाम के लिए पुलिस द्वारा गोष्ठी आयोजित की गई है पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी के कुशल निर्देशन में पश्चिम शरीरा थाना में नगर के संभ्रांत लोगों के साथ गोष्ठी कर साइबर क्राइम सेल टीम व थाना प्रभारी पश्चिम शरीरा द्वारा विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों के रोकथाम से संबंधित जानकारी दी गई व साइबर फ्रॉड से बचाव के तरीकों के बारे में उपस्थित व्यापारियों नगर वासियों को विस्तार से बताया गया।

### बैंक और एटीएम की पुलिस ने की चेकिंग

**कौशांबी।** बैंक और एटीएम की सुरक्षा के साथ-साथ बैंक और एटीएम पहुंचने वाले ग्राहकों की सुरक्षा को लेकर थाना पुलिस ने चेकिंग अभियान चलाया है चेकिंग अभियान के दौरान बैंक और एटीएम पहुंची पुलिस ने संदिग्ध लोगों की जांच पड़ताल की जिले के विभिन्न थाना पुलिस ने अपने अपने क्षेत्र में पड़ने वाले बैंक और एटीएम में चेकिंग कर स्थिति का जायजा लिया है। पुलिस अधीक्षक कौशांबी के निर्देशन में थाना कौशांबी पुलिस द्वारा अपने क्षेत्र में पड़ने वाले बैंक और एटीएम के आस-पास सघन चेकिंग कर बैंक में लगे सीसीटीवी, सायरन व ड्यूटीरत कर्मियों को चेक करते हुये संदिग्ध व्यक्तियों वाहनों की चेकिंग की गयी।

### महिलाओं बालिकाओं को पुलिस ने किया जागरूक

**कौशाम्बी।** महिलाओं बालिकाओं पर बढ़ रहे अपराधों को रोकने के लिए पुलिस द्वारा उन्हें जागरूक करने के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे महिलाएं बालिकाएं सुरक्षित रहें और अपराध करने वालों को कानून के दायरे में लाकर जवाब दें जिले के विभिन्न थाना पुलिस द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में मिशन शक्ति योजना के तहत महिलाओं बालिकाओं को जागरूक करते हुए उन्हें सुरक्षा के तरीके से अवगत कराया है। मिशन शक्ति के तहत सराय अकिल थाना एण्टी रोमियो पुलिस टीम द्वारा क्षेत्र में भ्रमण कर महिलाओं बालिकाओं से मिलकर वार्ता कर महिला सशक्तिकरण के बारे में जागरूक किया गया साथ ही पैंपलेट बांटकर महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नम्बरों की जानकारी दी गयी।

मंझनपुर कस्बे का भ्रमण करती पुलिस

# आधे घंटे की बारिश में सड़कों गलियों में बहने लगी कीचड़ गन्दगी

अखंड भारत संदेश

**अधिक बारिश हुई तो मंझनपुर कस्बा बन जाएगा ताल तलैया लोगों का घरों से निकलना हो जाएगा मुश्किल, नगर पालिका से बेहतर तो गांव था ग्रामीणों ने कहा हमें वापस कर दो गांव**

नगरपालिका मंझनपुर के कोरों में जलजमाव का दृश्य

**कौशाम्बी।** पहली बारिश शुरू होते ही आधे घंटे की बरसात के बाद मंझनपुर नगर पालिका परिषद के कस्बे के अंदर से लेकर गांव क्षेत्र की सड़कों पर गंदगी कीचड़ बहने लगी है पूरा मंझनपुर नरक में तब्दील हो गया है करोड़ो की रकम खर्च के बाद भी जल निकासी की समुचित व्यवस्था नगर पालिका परिषद द्वारा नहीं की जा सकी है जबकि नगरपालिका क्षेत्र में विकास सड़क नाली पुलिया के निर्माण के नाम पर कई करोड़ रुपए का भारी-भरकम बजट एक वर्ष के अंतराल में नगर पालिका ने खर्च कर दिया है लेकिन आधे घंटे की बारिश में नगर पालिका की धांधली की पोल खुल गई है यदि अधिक बारिश हो गई तो मंझनपुर कस्बा ताल तलैया बन जाएगा लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो जाएगा लेकिन करोड़ों के बजट खर्च करने के बाद भी जल निकासी की समुचित व्यवस्था नगरपालिका नहीं बना सका है पूर्व में कई बार अधिकारियों को नगर पालिका की समस्या से लोगों ने अवगत कराया समाचार पत्र के माध्यम से भी अधिकारियों को नगर की समस्या उनके संज्ञान में लाने का प्रयास किया गया लेकिन एक वर्ष के बीच नाली सड़क पुलिया के निर्माण में कई करोड़ की रकम खर्च किए जाने के बाद नगरपालिका के कस्बे में जल निकासी की व्यवस्था न बन पाने से नगर पालिका के जिम्मेदारों के भ्रष्टाचार की कहानी खुलकर सामने आने लगी है लेकिन भ्रष्ट अधिकारियों पर अभी तक शासन प्रशासन ने कार्रवाई नहीं की है। नगर पालिका परिषद मंझनपुर में शामिल किए गए कोरों अम्बावा समदा हाजीपुर पतौना पाता मंगरोहनी भेलखा ओसा भड़ेसर घना का पूरा आदि गांव में कई वर्ष बीत जाने के बाद भी नगरपालिका जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं कर सका है जिससे आधे घंटे की बरसात के बाद नालियों का कीचड़ और गंदगी गलियों में बहने लगा है लोगों को नर्क जैसी स्थिति में जीवन गुजारने को विवश होना पड़ रहा है ग्रामीणों का कहना है कि नगर पालिका से अच्छा तो हमारा गांव था और हमें फिर से गांव वापस कर दिया जाए कोरों की बस्ती में व्यवस्था नहीं होने के कारण गंदा पानी रास्ते में जमा है तेज बारिश में दो से तीन फुट पानी सड़क पर भर जाने की उम्मीद है इस समय सड़क पर जलभराव रहने के कारण लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है स्थानीय लोगों को की मानें तो जलभराव से गंदा पानी घरों में घुस जाता था। ग्रामीणों का कहना है कि समस्या समाधान की मांग को लेकर पहले कई बार सम्बन्धित विभागीय अफसरों व जनप्रतिनिधियों से मांग भी की गई लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई।

## पानी की समस्या को लेकर आप के नेतृत्व में एसडीएम से मिले नगरवासी

**कौशाम्बी।** सिराथू नगर पंचायत के वार्ड नंबर 1 में पानी की व्याप्त समस्या और जल निकासी से परेशान नगर वासियों ने आम आदमी पार्टी के नेताओं के साथ एसडीएम सिराथू से मुलाकात की है और उन्हें ज्ञापन देते हुए पानी की समस्या का समाधान कराए जाने की मांग की है। नगर वासियों ने उप जिला अधिकारी सिराथू से कहा कि हमारे वार्ड में विगत 6 माह से नागरिक पानी की समस्या से जूझ रहे हैं लोगो के नलों में 6 महीने से पानी का आना बंद है नगर पंचायत के अधिकारियों को ज्ञापन देने के बाद बार-बार शिकायत करने के बाद भी अभी तक लोगों के नलों में पानी नहीं आया व्यवस्था इतनी खराब है की पूरी गर्मी बीत रही है लेकिन नगर प्रशासक मूकदर्शक बना हुआ है लोगों की पीड़ा से उनका कोई सरोकार ही नहीं रह गया लोग पानी के लिए समरसेबल वालों के यहां लाइन लगाकर के पानी ढोते हैं अथवा दूर दराज के हैंडपंपों का सहारा लेते हैं वार्ड में नगर के बीच में तालाब होने के कारण उस तालाब का पानी बरसात में जब ओवरफ्लो हो जाता है और सात वर्षों से लोगों के घरों में तालाब का पानी प्रवेश करने लगता है ऐसी स्थिति में लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ता है फिर भी नगर प्रशासक और तहसील प्रशासन इस बाबत आज तक कोई कदम नहीं उठा सका आम आदमी पार्टी कार्यकताओं ने उप जिला अधिकारी से जिम्मेदार विभागों से जल समस्याओं के निदान के लिए आग्रह किया ताकि लोगों को परेशानी का सामना ना करना पड़े इस अवसर पर विधानसभा संगठन निर्माण प्रभारी पार्टी नेता विष्णु कुमार जयसवाल ने भी उप जिला अधिकारी से समस्या के निदान के लिए लापरवाह विभागों के प्रति सख्त कठोर कदम उठाते हुए जनता के हित में आदेशित करने की मांग की इस अवसर पर जितेंद्र चौरसिया अजय कुमार सरोज राज शेखर श्रीवास्तव रवि यादव जया सिंह अर्कवंशी राहुल कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

# ठेकेदार द्वारा बनाई गई घटिया सड़क धसी नाली गायब

अखंड भारत संदेश

भरवारी में धंसी सड़क और नाली

**भरवारी कौशाम्बी।** नगर पालिका परिषद भरवारी के बस स्टॉप स्थित सेवा सदन अस्पताल को जाने वाली मुख्य सड़क को नगर पालिका के ठेकेदार द्वारा बनवाई गई है यह सड़क बनने के बाद ही धस गई है इस सड़क पर सेवा सदन अस्पताल को जाने वाले गम्भीर मरीजो के साथ ही साथ दर्जनों दुकानदारो का प्रति दिन आना जाना लगा रहता है यदि नगर पालिका के जिम्मेदारों द्वारा सड़क को दुबारा सही ढंग से नही बनवाया गया तो किसी भी वक्त कोई भी वाहन पलट सकता है जिससे बड़ी घटना घट सकती है यदि समय रहते सड़क को दुरुस्त नही किया जाता है तो गम्भीर बीमारियों से ग्रसित मरीजो को आने जाने में काफी दिक्कत होगी दूसरी बात यह है कि उक्त सड़क अपने आप मे बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इस सड़क से प्रतिदिन गुजरने वाले लोग हजारो की संख्या में होते है। साथ ही उक्त सड़क पर सेवा सदन अस्पताल के साथ साथ कौशाम्बी इंडियन गैस एजेंसी बैंक गेस्ट हाउस पूर्व चेयर मैन का भी आवास है तथा कई कारखाना व रिहायशी लोग इसी क्षेत्र में रहते है सबसे बड़ी बात यह है सड़क धस जाने व नाली बिल्कुल से गायब हो जाने से आवागमन बाधित होने के साथ साथ सड़क पर पानी भर जाता है जिससे लोगो मे जबरदस्त आक्रोश ब्याप्त है लोगो ने कहा कि इतनी जल्दी सड़क धस गई जिसकी जांच होनी चाहिए सड़क धंस जाने के बाद आक्रोश ब्यक्त करने वालो में सुशील कुमार हिमांशु राम जी अतिन कुमार राज कुमार चंद्र बोष वेद प्रकाश डॉक्टर प्रेम प्रकाश शर्मा पल्लू केशरवनी आदि लोगो ने यथा शीघ्र सड़क की मरम्मत करवाने की मांग अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका भरवारी गिरीश चंद्र से की है।

## चार बैल के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार तीन फरार

**पश्चिम सरीरा कौशांबी।** पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के बैरम पुर पुलिस चौकी इंचार्ज उपनिरीक्षक जनार्दन सिंह अपने हमराहियों के साथ मंगलवार की देर शाम सेंगराहा पुलिया के पास वाहनों की चेकिंग कर रहे थे इसी बीच एक पिकअप आती दिखाई पड़ी जिसके अभिलेखों की जांच के लिए पुलिस ने पिकअप को रोक लिया पुलिस के रोकते ही आलम गुंडा नौशाद तीन आरोपी निवासी महंगाव थाना चरवा पिकअप से कूद कर भाग गए मौके पर सुशील कुमार रैदास पुत्र श्रीनाथ रैदास निवासी कशिया थाना कोखराज को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है पिकअप वाहन में चार बैल साड़ लादकर चारों आरोपी जा रहे थे पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है पकड़े गए आरोपी सुशील कुमार रैदास पुत्र श्रीनाथ रैदास को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

## राजस्थान से आए लोगों को शादी का झांसा देकर दलालों ने ठगा

**शादी कराने के नाम पर दलाल ने लिया 80 हजार शादी के बाद लड़की फरार**

**कौशांबी।** जिले की लड़कियों को राजस्थान में शादी कराने के नाम पर दलाल सक्रिय हैं और कौशांबी के दलाल राजस्थान के लोगों को यहां की लड़कियों से शादी कराने के नाम पर रकम वसूल लेते हैं लेकिन राजस्थान के लोगों के साथ लड़कियों की शादी के मामले में लड़कियों की रजामंदी नहीं होती है दलाल के माध्यम से लड़कियों के परिजन भी रकम वसूल लेते हैं जिससे लड़कियां दबाव के चलते शादी कर रही हैं इसी तरह का एक मामला फिर सामने आया है जानकारी के मुताबिक अजय कुमार पुत्र बद्री प्रसाद राजस्थान के जिला गंगा नगर के गली एक रवि चौक पुरानी आबादी निवासी है अजय कुमार पुत्र बद्री प्रसाद को कौशांबी जिले के करारी थाना क्षेत्र के इब्राहिमपुर गांव के एक दलाल शादी कराने के लिए मिले दलाल ने अजय कुमार को कौशांबी के शिक्षित सभ्य लड़की से शादी कराने की बात कही जिस पर अजय कुमार तैयार हो गए लड़की से शादी करने के लिए राजस्थान से अजय कुमार अपने रिश्तेदारों के साथ कौशांबी पहुंचे और मंझनपुर के एक गेस्ट हाउस में वह रिश्तेदार परिजनों के साथ ठहरे हैं अजय कुमार को लड़की दिखाई गई बताया जाता है कि लड़की से फेरे भी करा दिया गया है दलाल ने लड़की की शादी के नाम पर 80 हजार रुपए अजय कुमार से ले लिए हैं लेकिन लड़की इस शादी के लिए तैयार नहीं थी शादी करने के बाद जब लड़की को राजस्थान के अजय कुमार ले जा रहे थे तो वह बेचैनी महसूस करने लगी और अजय कुमार के चंगुल से छूट कर भाग निकली लड़की के भाग जाने के बाद अजय कुमार परेशान हो गए हैं वह दलाल को ढूंढ रहे हैं उनके मोबाइल नंबर पर फोन कर रहे हैं लेकिन लड़की के गायब होने के बाद दलाल के पास मौजूद 3 मोबाइल नंबर बंद हो गया है जिससे अजय कुमार और उनके रिश्तेदारों की बेचैनी बढ़ गई है हालांकि अभी तक मामला पुलिस तक नहीं पहुंचा है दोपहर बाद से अजय कुमार पश्चिम सरीरा में अपने संपर्क के लोगों के पास पहुंचकर लड़की और दलाल की खोज करने का प्रयास कर रहे हैं।

## मंझनपुर पुलिस फोर्स के साथ कोतवाल ने किया कस्बे में पैदल भ्रमण

**कौशांबी।** पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा के निर्देशन में मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह के साथ मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने कस्बा क्षेत्र के विभिन्न मोहल्लों में पैदल भ्रमण कर सुरक्षा का एहसास कराया शाम होते ही मंझनपुर कोतवाली पुलिस पैदल गस्त पर प्रतिदिन सड़कों पर निकल जाती है और कई किलोमीटर तक पैदल गस्त कर पुलिस लोगों को सुरक्षा का एहसास कराती हैं पुलिस का कहना है कि पुलिस उनके हर सुख दुख में साथ खड़ी है कस्बा मंझनपुर में पैदल गस्त करके दुकानदारों एवं व्यापारियों से संपर्क करके उनकी सुरक्षा व्यवस्था एवं यातायात व्यवस्था के संबंध में बातचीत करके उन्हें आश्वस्त कराया। प्रतिदिन की तरह बुधवार की शाम को मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने मंझनपुर कस्बे के विभिन्न मोहल्लों चौराहो में पैदल भ्रमण किया इस दौरान उन्होंने यातायात के नियमों का पालन करने का लोगों को निर्देश दिया सड़क और पटरियों पर वाहनों को खड़ा करने वालो को कठोर कार्यवाही की चेतावनी दी साथ ही उन्होंने कहा कि पटरियों को अतिक्रमण मुक्त रखा जाए उन्होंने कहा कि वाहनों को सड़क पर खड़ा करने से यातायात बाधित होता है जिससे वाहन चालक अपने वाहनों को सड़क पर ना खड़ा करें निर्धारित स्थान पर वाहन खड़ा करें वाहनों को सड़क के किनारे पार्किंग में ही खड़ा किया जाए वाहन चालकों को नियमों का पालन करने का उन्होंने निर्देश दिया

# मेरी प्लास्टिक मेरी जिम्मेदारी के तहत निकाली गई जन जागरूकता रैली

अखंड भारत संदेश

**मेरी प्लास्टिक मेरी जिम्मेदारी के तहत एकत्र किया जाए सिंगल यूज प्लास्टिक, सिंगल यूज प्लास्टिक मानव और पशु जीवन के लिए बेहद खतरनाक है इससे पर्यावरण होता है प्रदूषित**

प्लास्टिक के विरोध में जागरूकता फैलाते नगरवासी

**कौशांबी।** केंद्र सरकार की स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त अभियान के अंतर्गत बुधवार को नगर पालिका परिषद मंझनपुर द्वारा कस्बे में वृहत जन जागरूकता रैली का आयोजन सड़कों पर किया गया है इस दौरान लोगों को सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग के बाद उसे नष्ट करने का सुझाव दिया गया है जन जागरूकता रैली के माध्यम से लोगों को जागरूक करते हुए कहा गया है कि सिंगल यूज प्लास्टिक मानव और पशु जीवन के लिए बेहद खतरनाक है इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है पर्यावरण को बचाने के लिए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद किया जाए इस दौरान कस्बे के दुकानदारों को भी सुझाव दिया गया कि सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद कर दें वरना उन पर कठोर कार्यवाही की जाएगी जन जागरूकता रैली के माध्यम से आम जनमानस से अपील की है कि मेरी प्लास्टिक मेरी जिम्मेदारी के तहत सिंगल यूज प्लास्टिक को एकत्र किया जाए जन जागरूकता रैली के माध्यम से सड़कों पर पड़े सिंगल यूज प्लास्टिक को एकत्र करने का अभियान चलाया गया है सिंगल यूज प्लास्टिक के एकत्रीकरण और प्रतिबंध को प्रभावी तरीके से लागू किए जाने के उद्देश्य नगर की सड़कों पर वृहद जन जागरूकता रैली निकाली गई है रैली में नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अधिकारी कर्मचारी और सफाई कर्मी मौजूद रहे।

## शौच करने गया बालक गायब

**कौशाम्बी।** कोखराज थाना क्षेत्र के जलील पुर गांव का अनुज उर्फ नितिन तिवारी उम्र लगभग 16 वर्ष पुत्र कैलाश नाथ बुधवार की सुबह शौच करने को कह कर घर से बाहर निकला लेकिन देर शाम तक बालक वापस घर नहीं पहुंचा है परिवार वालो ने गायब बालक को काफी खोजबीन किया लेकिन उसके बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है जिससे परिजन परेशान हो गए हैं और स्थानीय पुलिस को परिजनों ने तहरीर दिया है गायब बालक के भाई अनुराग उर्फ रिंकू पुत्र कैलाश नाथ तिवारी ने पुलिस को दिए तहरीर में बताया कि उसका भाई अनुज उर्फ नितिन तिवारी सुबह से गायब है जिसकी हुलिया लंबाई लगभग 4 फीट 4 इंच वा कपड़ा काला कलर शर्ट वा लोवर नीले कलर तरंग गौरवा पैर में चप्पल सफेद कलर लखानी की पहन कर घर से निकला है जिसका पता नहीं चल रहा है।

# अध्यक्ष पद के 2 प्रत्याशियों को मिले बराबर मत हेड और टेल से घोषित हुआ परिणाम

अखंड भारत संदेश

**अभिसार भारतीय अध्यक्ष महामंत्री जिया रिजवी कोषाध्यक्ष मो० यासीन जिला उपाध्यक्ष इंतजार रिजवी संगठन मंत्री अरविंद तिवारी आय व्याय मंत्री अमर नाथ झा चुने गए**

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्लब के निर्वाचित पदाधिकारी

**कौशाम्बी।** इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रेस क्लब के चुनाव में अभिसार भारतीय जिला अध्यक्ष पद पर विजई हुए हैं उनके जीत के बाद समर्थकों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया है बुधवार को कलेक्ट्रेट सूचना ऑफिस ने प्रशासन की मौजूदगी में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का मतदान संपन्न हुआ अध्यक्ष पद पर अभिसार भारतीय और अली मुक्तेदा दो प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे थे समय 11:00 से 3:00 तक मतदान संपन्न कराया गया।जिसमें कुल 30 लोगो ने मतदान किया अध्यक्ष पद के दो प्रत्यासियों को बराबर बराबर मत मिले।जिसके बाद जिला सूचना अधिकारी द्वारा सिक्के से हेड और टेल करके परिणाम घोषित हुआ।जिसमे अभिसार भारतीय विजयी घोषित हुए दूसरे प्रतिद्वंदी अली मुक्तेदा को हार का सामना करना पड़ा।महामंत्री पद पर जिया रिजवी, कोषाध्यक्ष मो० यासीन ,जिला उपाध्यक्ष इंतजार रिजवी,संगठन मंत्री अरविंद तिवारी आय व्याय मंत्री अमर नाथ झा चुने गए है।

# बच्चों पेट खराब होने पर दिखाई देते हैं ये 5 संकेत, जानें बचाव के उपाय

खराब पेट के कारण आपके बच्चों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ पेट संपूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी है। आपके शारीरिक, मानसिक, त्वचा और यहां तक कि बालों के स्वास्थ्य के लिए भी पेट का स्वस्थ होना बहुत जरूरी है। लेकिन अक्सर देखा जाता है कि बच्चे पाचन संबंधी समस्याओं का सामना बहुत अधिक करते हैं। दरअसल पेट को स्वस्थ रखने में पाचन तंत्र की अहम भूमिका होती है, लेकिन छोटे बच्चों का पाचन कमजोर होता है। जिससे उन्हें पाचन से जुड़ी समस्याएं अधिक होती हैं। मैटरनल चाइल्ड न्यूट्रिशनिस्ट रमिता कौर की मानें तो खराब पेट आपके बच्चे की इम्यूनिटी को कमजोर बनाता है। क्योंकि 80त्न तक इम्यूनिटी बनाने का काम आपके पेट में होता है। इसलिए बच्चों के पेट को स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है। बच्चों की गट हेल्थ खराब होने पर कई संकेत और लक्षण देखने को मिलते हैं। इस लेख में हम आपको बच्चों में खराब पेट के संकेत और बचाव के उपाय बता रहे हैं।

**1. फाइबर रिच फूड्स खिलाएं**

अगर आप बच्चे को पेट संबंधी समस्याओं से बचाना चाहते हैं, तो आपको उनके आहार में साबुत अनाज, दालें, नट्स, बीज, फल और सब्जियां शामिल करने की कोशिश करनी चाहिए। फाइबर पाचन को बेहतर बनाने में मदद करता है। जिससे पेट में गैस, ब्लोटिंग, कब्ज, उल्टी-दस्त, कब्ज जैसी समस्याएं नहीं होती हैं।

**2. आहार में प्रोबायोटिक्स शामिल करें**

बच्चों को प्रोबायोटिक्स खिलाना उनकी आंतों के लिए बहुत फायदेमंद होता है, क्योंकि यह आपके आंत में अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ावा देते हैं। जिससे यह पाचन को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। इसलिए बच्चों के आहार में दही, छाछ के साथ ही फर्मेंटेड फूड्स जैसे केफिर आदि को शामिल करने की कोशिश करें।

**3. भोजन के दौरान छोटी-छोटी मील दें**

कोशिश करें कि आप बच्चों को जब भोजन कराएं तो दिन में 3 बड़े भोजन की बजाए उन्हें थोड़ी-थोड़ी मात्रा में भोजन दें, लेकिन कई बार भोजन कराएं। इससे उनके पेट और पाचन तंत्र को रिफ्रेश करने में मदद मिलती है और पेट संबंधी समस्याएं नहीं होती हैं।

**4. बच्चों को पर्याप्त पानी पिलाएं**

मजबूत और बेहतर पाचन के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन बहुत जरूरी है। इसलिए बच्चों को पानी और तरल पदार्थों का अधिक सेवन कराएं। आप उन्हें ऐसे फड्स भी दे सकते हैं जिनमें पानी की मात्रा भरपूर होती है। उन्हें नारियल पानी पिलाएं, तरबूज, खरबूजा, खीरा आदि जैसे पानी से भरपूर फूड्स खिलाएं।

**5. फिजिकल एक्टिविटी भी है जरूरी है**

बच्चों को पेट संबंधी समस्याओं से बचाने और पाचन को दुरुस्त रखने के लिए बच्चों को शारीरिक रूप से सक्रिय रखना बहुत जरूरी है। उन्हें बाहर खेलने और कुछ सिंपल एक्सरसाइज करने के लिए प्रोत्साहित करें।

# खाद्य मुद्रास्फीति नहीं 'लालचस्फीति' से महंगाई

मुंबई के इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च (आईजीआईडीआर) की छात्र-पत्रिका के लिए साक्षात्कार में मुझसे पूछा गया कि खाद्य मुद्रास्फीति को नाथने हेतु क्या उपाय हो सकते हैं। यह प्रश्न कोई नया नहीं है, क्योंकि हर किसी के मन में यही सवाल होता है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से लेकर किसी टीवी चैनल के वार्ता पैनलों पर या अखबारों में मुद्रास्फीति पर खबरें देखें तो यह ऊपर उठती खाद्य मुद्रास्फीति है, जिसे विकास-गाथा में खलनायक की तरह पेश किया जाता है।

हमारे दिमागों में यह भर दिया गया है, चूंकि भोजन एक मूल आवश्यकता है, इसलिए इसकी कीमतों में बढ़ोतरी को मैक्रो-इकोनॉमिक सूचकांक के 4 फीसदी अंतराल (दो फीसदी ऊपर या दो प्रतिशत नीचे) के अंदर बनाए रखना जरूरी है। इसलिए जब कभी नए फसल खरीद मूल्य घोषित किए जाते हैं, साल में दो मर्तबा यानी रबी और खरीफ की फसल के लिए, तब-तब मीडिया में बढ़ती खाद्य मुद्रास्फीति का हौवा उठ खड़ा होता है। इस साल भी, जब खरीफ फसलों का मूल्य घोषित हो रहा था, एक सवाल बार-बार टीवी चैनलों (और अखबारों में भी) चला हुआ था कि क्या इससे खाद्य मुद्रास्फीति पैदा नहीं होगी? हालांकि, खरीफ की 14 में 11 जिन्सों के लिए मूल्य घोषित हुए, वे मुद्रास्फीति वाले मूल्य से भी कम थे, फिर भी फसल खरीद मूल्य में मामूली बढ़ोतरी को मुद्रास्फीति पर दबाव के लिए जिम्मेवार मानकर अंगुलियां उठाई जा रही थीं।

यह सर्वविदित है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में खाद्य वस्तु वाला अवयव लगभग 45 प्रतिशत है। लेकिन कई बार हैरानी होती है कि मकान- चाहे अपना हो या किराए का- वहां रहने के खर्च पर किसी परिवार की मासिक आय का एक बड़ा हिस्सा खप जाता है, इस तत्व को क्यों नहीं मुद्रास्फीति सूचकांक की गणना करते वक्त शामिल किया जाता। इसी तरह पर्यटन-तफरीह, धीरे-धीरे ऊपर उठती तेल कीमतें, हवाई, रेल एवं टैक्सी सेवा के गतिशील मूल्य, जिन पर होने वाला खर्च किसी औसत परिवार के रसोई-व्यय से कहीं अधिक होता है, उन्हें भी मुद्रास्फीति सूचकांक की गणना करते वक्त क्यूं नहीं गिना जाता। कुछ दिन पहले, जिस रोज श्रीनगर से अधिकांश उड़ानें स्थगित कर दी गई थीं, जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने लगातार बढ़ते हवाई यात्रा किराए को खुली लूट बताया था। अधिकांश लोग मुम्बई-दिल्ली के बीच एकतरफा हवाई किराया यानी 25000 रुपये को अत्यधिक नाजायज बताते हैं। इसलिए, मुद्रास्फीति असल में कौन-सी चीज बनाती है, उसका पुन: निर्धारण होना चाहिए और महंगाई के लिए जिम्मेवार विभिन्न अवयवों के मुताबिक उनकी हिस्सेदारी तय की जाये।

यहां जो मैं कहना चाहता हूं, वह यह है कि टैक्सी सेवा उपलब्ध करवाने वाले मंच (ओला या उबर) सुबह के वक्त- यहां तक कि 6 बजे के ठीक-ठाक उजाले में भी- किराया बढ़ाकर लेते हैं, लेकिन वहीं जब टमाटर के दाम 20 से 40 रुपये हो जाएं तो आसमान टूट पड़ता है, जबकि टमाटर के बढ़े दाम का भार भी किसी परिवार पर चीनी की एक किलोग्राम कीमत जितना भी नहीं पड़ता। भरे दिन में भी ओला-उबर कई बार 'सर्ज' लगा किराया वसूलते हैं, लेकिन गुस्सा सिर्फ टमाटर के दाम बढ़न? पर बनता है। तो इस तरह हमारे दिमागों को पट्टी पढ़ा दी गई है। हमें यकीन दिलवाया जाता है कि मूल्य उत्पादन-आपूर्ति में फर्क आने से बढ़े हैं लेकिन सामान्यत: हम लोग अहसास ही नहीं कर पाते कि एक तीसरा छिपा अवयव भी हैङ्कहेराफेरी। ऐसे मौके भी हैं जब प्याज़ के उत्पादन में महज 4 प्रतिशत की कमी होने पर देश के कई हिस्सों में खुदरा मूल्य 600 गुणा से ज्यादा बढ़ा दिए गए।

इस बारे में तमिलनाडु में जैविक खेती करने वाले एमजे प्रभु की बात सुनें- 'मैं अपने बगीचे से प्रति नारियल 8 रुपये बेचता हूं, बिचौलिया आगे इसे 28 रुपये में तो गली का रेहड़ी वाला या दुकानदार प्रति नारियल भाव 50 से 55 रुपये वसूलता है। यह आपूर्ति शृंखला चलाने वालों का लालच है, जिसकी वजह से नारियल का भाव खेत से उपभोक्ता के बीच 7 गुणा बढ़ जाता है। अतएव खाद्य-मुद्रास्फीति का ज्यादा संबंध खेत में लगी कीमत से न होकर बीच वालों की मुनाफाखोरी से है।'

किसी सुपर मार्किट में जाएं और कीमतों का विश्लेषण करें, तो एक नया चलन बड़े पैकेटों पर साफ दिखाई देता है। सामान्यत: अर्थशास्त्र नियम कहता है कि बड़े पैमाने पर प्रसंस्करण कर बनाए खाद्य पदार्थों की कीमतें अपेक्षाकृत कम होती हैं। लेकिन गौरतलब है कि पिछले तीन महीनों में बड़े पैकेटों की श्रेणी में 62 प्रतिशत उत्पादकों ने मूल्य बढ़ा दिया। क्यों? किसी को नहीं पता। उदाहरणार्थ टाटा गोल्ड चायपत्ती के 100 ग्राम वाले पैकेट की खुदरा कीमत 40 रुपये है तो 500 ग्राम वाला 310 रुपये में मिल रहा है, जबकि आदर्श स्थिति में 500 ग्राम टाटा गोल्ड चायपत्ती 200 रुपये में मिलनी चाहिए। तेजी से बिकने वाली रोजमर्रा की अधिकांश वस्तुएं- मसलन साबुन, टुथपेस्ट व हेयर ऑयल इत्यादि- इनके मामले में, जहां कहीं लोकप्रिय ब्रांडों ने कीमतें नहीं बढ़ाई तो चतुराई से पैकेट के भार में कमी कर दी। जहां उपभोक्ता को अपनी जरूरी वस्तुओं के लिए बारम्बार 10 प्रतिशत अधिक दाम चुकाने पड़ रहे हैं वहीं इन्हें बनाने वाली कंपनियों की रिपोर्टों में मुनाफा वृद्धि साल-दर-साल 40 फीसदी की कुलांचें भर रही हैं।

यह वैश्विक चलन है। अमेरिका में कॉर्पोरेट जगत का मुनाफा पिछले 70 सालों में सबसे अधिक रहा जबकि वार्षिक मुद्रास्फीति दर मई माह में 8.6 फीसदी छू गई, जो कि पिछले 41 सालों की सबसे ज्यादा है। रोजमर्रा की वस्तुओं का व्यापार करने वाली 2000 अमेरिकी कंपनियों का मुनाफा कोविड महामारी से पहले की अवधि के मुकाबले कहीं ज्यादा रहा है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार खाद्य वस्तु बनाने वाले अरबपतियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। हैरानी यह है कि जहां कृषि से होने वाली कमाई में कहीं भी इजाफा नहीं हुआ वहीं खुदरा कीमतें पहले ही बहुत ज्यादा बढ़ा दी गईं। यहां तक कि रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने से पहले ही अनुमान के आधार पर वैश्विक कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई, जिन्होंने वर्ष 2007-08 में बनी खाद्य किल्लत के समय के मूल्यों को भी पछाड़ दिया।

इसलिए महंगाई के लिए खाद्य मुद्रास्फीति को जिम्मेवार ठहराना सरासर नाइंसाफी है। ऐसे अवसर कम हैं जब किसानों को अदा की कीमतों में बढ़ोतरी से खुदरा खाद्य मूल्यों में अप्रत्याशित उछाल आया हो, सिवाय जब आपूर्ति कम हुई हो। यह सीधा-सीधा बिचौलियों का लालच है, जिसमें कृषि-संबंधी वस्तुओं का व्यापार करने वाली महाकाय कंपनियां भी शामिल हैं, जो हेराफेरी से जब चाहे कीमतें बढ़ा देती हैं। ओईसीडी-आईसीआरआईईआर का अध्ययन बताता हैं कि 2000-2016 के बीच 16 सालों में किसानों को 45 लाख करोड़ का घाटा हुआ है। इस अवधि में जब भारतीय किसानों को अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों से 16 फीसदी कम दाम मिल रहा था तब कायदे से खाद्य मुद्रास्फीति ऋणात्मक रहनी चाहिए थी, किंतु वह अपने पुराने स्तर पर बनी रही। अतएव यही समय है जब खाद्य मुद्रास्फीति का नाम बदलकर 'लालचस्फीति' कर दिया जाए।

## सम्पादकीय

# किताब की आब

सोशल मीडिया के कोलाहल के बीच नई पीढ़ी के बच्चों में किताबों के प्रति कम होता सम्मोहन गंभीर चिंता का विषय है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे स्कूली पाठ्यक्रम की पुस्तकों तक सीमित होते चले गये हैं। बस्ते का बोझ उन्हें विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर कम देता है। वहीं शिक्षकों ने भी यह जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाई कि वे नयी पीढ़ी को विषय से अतिरिक्त पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकें। विडंबना यह भी कि समाज के संपन्न तबके व नीति-नियंताओं की संतानें महंगे पब्लिक स्कूलों की ओर उन्मुख हो गईं। वहां यदि पुस्तकों का रुझान रहा भी है तो विदेशी लेखकों की पुस्तकों को तरजीह दी गई, जिनमें परिवेश विदेश का है, संस्कार विदेश के हैं और जीवनशैली तथा नायक भी विदेश के हैं। हो सकता है आने वाले वक्त में किसी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी का प्रश्न होगा कि प्रेमचंद कौन हैं? ऑनलाइन गेम्स और आभासी दुनिया के प्रतिनिधि सोशल मीडिया में सेल्फी संस्कृति व कृत्रिम लोक व्यवहार में डूबी पीढ़ी को भारतीय साहित्य व विभिन्न विधाओं की पुस्तकें पढ़ने का वक्त मिलेगा कहना कठिन है। लेकिन फिर भी हमारी कोशिश होनी चाहिए कि भारतीय माटी और मातृभाषा में रचे गये साहित्य से भी नई पीढ़ी रूबरू हो। इसकी पहल शिक्षकों, अभिभावकों व हमारे नीति-नियंताओं को करनी चाहिए। ऐसे में पढ़ने-लिखने के संस्कार विकसित करने की दिशा में हिमाचल के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर की वह पहल प्रेरक है, जिसमें वे खुद स्कूलों में जाकर बच्चों को पाठ्यक्रम से अलग पुस्तकें भेंट करते हैं और उनमें पढ़ने-लिखने के संस्कार विकसित कर रहे हैं। इनमें वे पुस्तकें शामिल हैं जिनमें देश, समाज और संस्कृति के लिये महान योगदान देने वाले नायकों का जिक्र है। राज्यपाल न केवल पुस्तकें देते हैं बल्कि खुद उनकी प्रतिक्रिया भी आमंत्रित करते हैं। एक छात्र ने उन्हें पत्र लिखकर बताया कि उसे नहीं मालूम था कि पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकें भी उन्हें पढ़नी चाहिए।

निस्संदेह, पुस्तकें विद्यार्थियों की दृष्टि को समृद्ध करती हैं। एक पुस्तक में कालखंड व जीवन के घनीभूत अनुभवों का समावेश होता है। पुस्तकें विद्यार्थियों में जहां पढ़ने केसंस्कार विकसित करती हैं, वहीं इनसे भाषायी संस्कारों का भी विकास होता है। उनमें यह सोच विकसित करती हैं कि विषम परिस्थितियों में कैसा व्यवहार करना चाहिए। इससे विद्यार्थी देशकाल की चुनौतियों से भी रूबरू होते हैं। उनकी सोच विकसित होती है और वे आदर्श नागरिक बनने की ओर अग्रसर होते हैं। स्कूली पाठ्यक्रम से उपजी एकरसता तोड़ने का काम भी पुस्तकें करती हैं। इसमें दो राय नहीं है कि हमारे मौजूदा समाज में शिक्षा के मायने बदल गये हैं। एक बेहतर नागरिक के निर्माण की जो भूमिका होती थी, उसकी जगह गलाकाट स्पर्धा और आर्थिक प्राथमिकताओं ने ले ली है। जीवन मूल्यों व आदर्शों का हमारे जीवन में तिरोहित होना कालांतर सामाजिक विद्रूपताओं को जन्म देता है। समाज में हिंसक व्यवहार और अपराधों का बढ़ना भी हमारे जीवन मूल्यों का पराभव ही है। निस्संदेह शिक्षा का लक्ष्य महज अंकों की होड़ ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थी में मानवीय मूल्यों व संस्कारों का विकास भी है। देश में बढ़ते यौन और बाल अपराधों में वृद्धि चिंता का विषय है। निस्संदेह देशकाल-परिस्थिति किसी बालमन के भटकाव का प्राथमिक कारण हो सकता है लेकिन वह शिक्षा भी जरूरी है जो बच्चों में विवेक पैदा कर सके। जीवन व्यवहार के मूल्य हर युग में एक जैसे ही होते हैं।

# जनता को ही नकारना होगा दल-बदलुओं को

देश के पक्ष-विपक्ष के नेताओं को आज ऐसी किसी समस्या की चिंता नहीं जैसी आमजन को है। आमजन महंगाई से त्रस्त है। दवाई और पढ़ाई सबको उपलब्ध नहीं, इससे वे पीड़ित हैं, पर यही पीड़ा माननीयों को नहीं सहनी पड़ती। एक बार विधायक या सांसद बन गए तो उनके सारे परिवार को चिकित्सा सुविधा देना सरकारों का मानो कर्तव्य ही बन जाता है। महंगाई भी नेताओं को तंग नहीं करती, क्योंकि वेतन और भत्ते इतनी मात्रा में मिल जाते हैं कि हर चीज उन्हें सस्ती लगती है।

देश के बहुत लोग रात को भूखे सोते हैं। फुटपाथ पर ही जन्म लेते और मर जाते हैं। बढ़ती जनसंख्या और उस पर कोई भी सरकारी नियंत्रण न होना गरीब की मुसीबतें बढ़ा रहा है। देश के नेताओं के सामने दो ही समस्याएं हैं। सत्तापक्ष सत्ता बनाए रखने के लिए तथा दूसरी पार्टियों से सत्ता छीनने के लिए लगातार प्रयास करता है और विपक्षी दल हाथों से निकली राजसत्ता पुन: प्राप्त करने के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तैयार हो जाता है। नेताओं को तो बस सड़कों पर आकर नारे लगाने का कोई बहाना चाहिए। जनता की कठिनाइयों का कारण वे जनप्रतिनिधि हैं जो येन-केन प्रकारेण धनबल से, बाहुबल से, छल-धोखे से चुनाव तो जीत जाते हैं और उसके बाद वे ज्यादा सत्ता या धन पाने के लिए मार्केट में बिकने को पूरी तरह तैयार रहते हैं। आश्चर्य यह भी है कि जो लोग करोड़ों रुपये रिश्वत में देकर वोट खरीदते हैं उनके भी चुनावी खर्च विवरण को इस देश का चुनाव कमीशन स्वीकार कर लेता है।

इन दिनों पंजाब की भगवंत मान सरकार भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों को नियंत्रित करने के लिए उन लोगों को कानून के घेरे में ले रही है जो कभी कानून के स्वामी थे, अधिकारी भी और विधायक, सांसद, मंत्री रहे लोग भी, पर सरकारों को उत्तर यह देना होगा कि भ्रष्टाचार में उनकी भी भूमिका अनदेखी क्यों होती है जो आज एक दल का डंडा और झंडा हाथ में उठाकर जनता से वोटों की भिक्षा मांगते हैं व कुछ दिन बाद वह झंडा फेंक कर किसी दूसरी पार्टी का चुनाव चिन्ह अपने गले में बड़ी शान से ओढ़ते हैं, उस पार्टी में सांस घुटने की बात कहते हैं।

विडंबना है कि खरीद-फरोख्त के डर से विधायक कभी कर्नाटक के सुखद आवासों में भेजे गए, कभी राजस्थान में उनके लिए वातानुकूलित कक्ष आरक्षित हो गए। जो व्यक्ति संदिग्ध चरित्र का हो उसे तो कोई अपने यहां चपरासी भी नहीं रखता, पर जिनका संदिग्ध व्यवहार है या जिनके बिकने की आशंका है उन्हें हवाई जहाजों में उड़ाकर ये सत्तापति सुरक्षित रखने के लिए ले जाते हैं तो क्या ऐसे अविश्वसनीय जनप्रतिनिधियों का कोई आत्मसम्मान शेष रह जाता है? आश्चर्य है कि जिन्हें भेड़-बकरियों की तरह हवाई जहाजों में बंद कर किसी स्थान में रखा जाता है वे हंसते भी है, मुस्कुराते भी हैं, मनोरंजक कार्यक्रमों का आनंद भी लेते हैं और मीडिया के सामने इस तरह प्रस्तुत किए जाते हैं जैसे ये लोकतंत्र की शान हों। आज लोकतंत्र की दुर्गति और जनता की दयनीय स्थिति के जिम्मेवार यही जनप्रतिनिधि हैं जो धन के लिए या अधिक सत्ता पाने के लिए किसी भी मार्केट में बिकने को तैयार रहते हैं। इन दिनों पंजाब में कुछ पूर्व मंत्रियों और एक-दो वर्तमान मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। वे पकड़े भी गए, जेल में भी पहुंचे। यद्यपि कानूनी प्रक्रिया में उन्हें अपराधी या निर्दोष घोषित होने में बहुत समय लगेगा। प्रश्न है कि अगर कोई ठेकेदार से कमीशन लेने वाला या स्वास्थ्य विभाग के लिए खरीद-फरोख्त करने वाला भ्रष्ट माना जाता है तो जनता के वोट लेकर जनता को धोखा देने वाला क्या माना जाए? बंगाल के एक नेता को तो सांस घुटने की बीमारी हो गई। इतनी ज्यादा जितनी शायद कोरोना मरीज को भी नहीं होगी। जैसे ही उसने दल बदला उसका सांस सही चलने लगा।

चुनाव आयोग से आशा तो यह रखी जाती है कि जो चुनावी उम्मीदवार धनबल और बाहुबल का असीमित प्रयोग करते हैं, चुनाव आयोग की सारी संहिताओं की धज्जियां उड़ा देते हैं उन्हें चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित किया जाए। जो दल बदलू हैं उनकी सदस्यता भी समाप्त की जाए, पर शायद ये शक्तियां चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र में नहीं। भारत सरकार को संसद में कानून बनाकर यह घोषित करना चाहिए कि जो दल बदलता है उसकी सदस्यता समाप्त हो जाएगी। जिस पार्टी का झंडा और डंडा ये दल बदलू उठा रहे हैं उसकी ओर से पुन: चुनाव लड़ें, तब सदस्य बन सकते हैं। तो फिर जनता को आगे आना होगा। सार्वजनिक तौर से दल-बदलुओं को नकारें। उनका अपने क्षेत्र में प्रवेश बंद करें और मांग यह करें कि जो दंड धोखेबाज को मिलता है वही दंड उनको मिलना चाहिए जो एक पार्टी से चुनाव जीतकर जनता को विश्वास दिलाकर अपने स्वार्थों के लिए विश्वास तोड़ते हैं और यह आवाज उठे कि इनको माननीय क्यों कहा जाता है, जो जनता को अमाननीय हैं, वे माननीय कैसे?

## नस्ली टिप्पणी करना पड़ा भारी, रेड बुल ने रिजर्व ड्राइवर विप्स का अनुबंध रद्द किया

**मिल्टन केन्स (इंग्लैंड)।** फार्मूला वन टीम रेड बुल ने आनलाइन गेमिंग स्ट्रीम के दौरान नस्ली टिप्पणी करने के लिए फार्मूला वन टेस्ट और रिजर्व ड्राइवर जूरी विप्स का अनुबंध रद्द कर दिया है। एस्टोनिया के 21 साल के विप्स को रेड बुल ने पिछले हफ्ते उनके द्वारा इस्तेमाल भाषा की जांच लंबित रहने तक निलंबित किया था। विप्स ने इसके लिए काफी मांगी थी। रेड बुल ने ट्वीट किया, 'जूरी विप्स से जुड़ी आनलाइन घटना की जांच के बाद ओरेकल रेड बुल रेसिंग ने अपने टेस्ट और रिजर्व ड्राइवर के रूप में जूरी का अनुबंध रद्द कर दिया है।' ट्वीट के अनुसार, 'टीम नस्लवाद के किसी भी प्रारूप को माफ नहीं करती।'

## उमरान मलिक को आखिरी ओवर क्यों सौंपा, हार्दिक पांड्या ने बताई वजह

**डबलिन।** हार्दिक पांड्या की अगुआई वाली भारतीय क्रिकेट टीम ने मंगलवार को आयरलैंड के खिलाफ दूसरे टी20 इंटरनेशनल मैच में जीत दर्ज करते हुए सीरीज 2-0 से अपने नाम की। मैच के दौरान अंतिम ओवर उमरान मलिक ने फेंका और मैच को बचाने में कामयाब रहे। मैच के बाद कप्तान पांड्या ने खुलासा किया कि मलिक को ही क्यों अंतिम ओवर दिया गया था। पांड्या ने कहा, मैं अपने समीकरण से सारा दबाव दूर रखने की कोशिश कर रहा था। मैं वर्तमान में रहना चाहता था और मैंने उमरान का समर्थन किया। उसके पास गति है, उसकी गति के साथ 18 रन बनाना हमेशा कठिन होता। उन्होंने कुछ अद्भुत शॉट खेले, उन्होंने बहुत अच्छी बल्लेबाजी की, उन्हें श्रेय दिया और हमारे गेंदबाजों को उनकी नब्ज पकड़ने का श्रेय दिया।इस 28 वर्षीय कप्तान ने आयरलैंड में खेलने और भारतीय प्रशंसकों से भारी समर्थन प्राप्त करने की भी बात कही।

उन्होंने कहा, भीड़ में उनके पसंदीदा लड़के दिनेश और संजू थे। दुनिया के इस पक्ष का अनुभव करने का शानदार अनुभव। हमारे लिए बहुत समर्थन आया है, हम उनका मनोरंजन करने की कोशिश करते हैं और आशा करते हैं कि हमने ऐसा किया। हर किसी को धन्यवाद जिन्होंने हमारा समर्थन किया। पांड्या ने कहा, एक बच्चे के रूप में अपने देश के लिए खेलना हमेशा एक सपना होता है। नेतृत्व करना और पहली जीत हासिल करना खास था, अब सीरीज जीतना भी खास है। दीपक और उमरान के लिए खुशी है।

## शाहिद अफरीदी का कटा ट्रैफिक चालान, ट्विट कर लिखा- हमारे हाईवे बहुत अच्छे हैं

**कराची।** पाकिस्तान के चर्चित क्रिकेटर शाहिद अफरीदी का पाकिस्तान हाईवे अथॉरिटी ने गाड़ी ओवरस्पीड चलाने के कारण चालान काट दिया। घटना के वक्त अफरीदी लाहौर से कराची जा रहे थे। अफरीदी ने अपने चालान कटने की पुष्टि और एक अपील भी ट्विट कर दी। उन्होंने लिखा- पाकिस्तान के हाईवे बहुत अच्छे हैं और यहां स्पीड लिमिट 120 किमी. प्रति घंटा होनी चाहिए। हुआ यूं कि अफरीदी अपने किसी काम के लिए कराची जा रहे थे। नैशनल हाईवे पर उन्हें अचानक पुलिस ने रोक लिया। पता चला कि हाईवे पर लगे स्पीडोमीटर्स में अफरीदी की कार ओवरस्पीड थी। वायरलैंस होने पर कार रोकी गई और अफरीदी पर ओवरस्पीड का 1500 रुपए का जुर्माना लगाया गया। साथ ही पाकिस्तान पुलिस ने अफरीदी को समझाइश दी। हालांकि अफरीदी इस घटनाक्रम से काफी खुश दिखे। उन्होंने ट्विट कर पुलिस अधिकारियों को बधाई दी। अफरीदी की पुलिसकर्मियों के साथ खिंचवाई फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गई। इसी एक ट्विट को शेयर करते हुए अफरीदी ने लिखा- नैशनल हाईवे और मोटरवे पुलिस (एन.एच.एम.पी.) के पुलिसकर्मियों के साथ बढ़िया मुलाकात हुई। मैंने पाया कि वह काफी प्रोफेशनल थे। इसी के साथ अथॉरिटी से मेरा विनम्र निवेदन है कि पाकिस्तान के हाईवे बहुत अच्छे हैं यहां पर स्पीड 120 किमी. प्रति घंटा होनी चाहिए।

### कन्हैया लाल हत्याकांड में बोले इरफान पठान

## किसी निर्दोष के जीवन को नुकसान पहुंचाने का मतलब इंसानियत को चोट पहुंचाने जैसा है

**उदयपुर।** राजस्थान के उदयपुर में हुए कन्हैया लाल हत्याकांड की लगातार देश के सेलेब्रेटी आलोचना कर रहे हैं। इस हत्याकांड की खेले के दिग्गज भी कड़ी निंदा कर रहे हैं। टीम इंडिया के पूर्व ऑल राउंडर इरफान पठान ने कन्हैया लाल हत्याकांड में बड़ा बयान दिया है। 37 साल के पूर्व खिलाड़ी ने इस घटना को इंसानियत को चोट पहुंचाने वाला बताया है। पठान ने एक सोशल पोस्ट करते हुए इसे शर्मसार करने वाली घटना बताया। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटना को अंजाम देने वाला किसी भी धर्म को मानने वाला हो, यह सही नहीं है। ऐसी घटना से मानवता को चोट पहुंचती है। इरफान ने लिखा कि कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस (धर्म) पर विश्वास करते हैं। किसी निर्दोष के जीवन को नुकसान पहुंचाने का मतलब इंसानियत को चोट पहुंचाने जैसा है।

**क्या है मामला**

बता दें कि उदयपुर में मंगलवार को दिनदहाड़े टेलर कन्हैयालाल साहू की निर्मम हत्या कर दी गई है। आरोपियों ने इस वारदात का वीडियो भी बनाया और प्रधानमंत्री मोदी को भी धमकी दी। हत्या के बाद जहां उदयपुर में इंटरनेट सेवा बंद कर दी थी। दरअसल कन्हैयालाल के 8 साल के बेटे ने मोबाइल से नूपुर शर्मा के समर्थन में सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दी थी. इसके बाद कुछ ल... कुछ लोग नाराज हो गए और तीन आरोपियों ने युवक की उसकी ही दुकान में घुसकर धारदार हथियार से बेरहमी से हत्या कर दी।

**कन्हैया लाल हत्याकांड की इरफान पठान ने की आलोचना**

## अजीत अगरकर की दो टूक- इंग्लैंड के खिलाफ इन 2 गेंदबाजों को मिले मौका

**मुंबई।** भारतीय टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ शुक्रवार से पांचवां टेस्ट मैच खेलना है। मैच को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। न्यूजीलैंड को 3-0 से हराकर इंग्लैंड के हौसले बुलंद है। इसी बीच भारतीय पूर्व तेज गेंदबाज अजित अगरकर ने इंग्लैंड के बल्लेबाजों को रोकने के लिए मोहम्मद सिराज और शार्दुल ठाकुर को क्रमशः तीसरे और चौथे तेज गेंदबाज के रूप में भारतीय टीम में होने की बात कही है। जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी का खेलना तय है जबकि दूसरे तेज गेंदबाजी विकल्पों में सिराज, ठाकुर, प्रसिद्ध कृष्णा और उमेश यादव शामिल हैं।

अगरकर ने कहा कि सिराज ने पिछले साल अच्छा प्रदर्शन किया जब भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ शुरूआती 4 टेस्ट खेले थे। उसके प्रदर्शन में काफी निखार आया है और उसे बाहर करने की कोई वजह नहीं है। उन्होंने कहा कि शार्दुल 8वें नंबर पर अच्छी बल्लेबाजी भी कर लेता है और सीमर्स की मददगार विकेट पर वह काफी प्रभावी रहता है। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि इन दोनों को टीम में होना चाहिए वरना पुछल्ले बल्लेबाजों की सूची लंबी हो जाएगी। चार तेज गेंदबाजों को चुनने पर शार्दुल की संभावना लगती है।

अगरकर ने कहा कि आईपीएल में खराब प्रदर्शन का असर भारतीय टीम में सिराज के चयन पर नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आईपीएल की तुलना इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट से नहीं की जा सकती। पिछले 12 महीने में टेस्ट क्रिकेट में उसका प्रदर्शन देखो। गेंद पुरानी होने पर वह लंबे स्पैल डाल सकता है और उसके पास रफ्तार भी है। वह तीसरे तेज गेंदबाज के तौर पर टीम में नहीं हुआ तो मुझे हैरानी होगी।

## विंबलडन में उलटफेर:पहले दौर में हारीं 23 बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सेरेना विलियम्स, नडाल जीते

हार्मोनी टेन ने सेरेना को विजयी वापसी से रोका

**लंदन।** दुनिया के सबसे पुराने टेनिस टूर्नामेंट में रात पहले ही दौर में बड़ा उलटफेर देखने को मिले। यहां 23 ग्रैंड स्लैम चैंपियन सेरेना विलियम्स हारकर बाहर हो गईं। वहीं, दुनिया की नंबर-1 महिला टेनिस खिलाड़ी इगा स्वातेक विम्बलडन के दूसरे राउंड में पहुंच गईं। पोलैंड की स्वातेक ने क्रोएशिया की जाना फेट को महज 74 मिनट में 6-0, 6-3 से मात दी। 5वीं सीड मारिया सक्कारी, 12वीं सीड जेलेना ओस्तापेंको, 13वीं सीड बारबरा क्राजिकोवा, चौथी सीड पाउला बाडोसा, पूर्व नंबर-1 सिमोना हालेप, पूर्व चैंपियन पेत्रा क्विातोवा और 18 साल की कोको गॉफ दूसरे राउंड में पहुंच गईं। पुरुष सिंगल्स में एलेक्स डि मिनॉर, स्टीव जॉनसन, डेविड गॉफिन, जैक सॉक, मैक्केंजी मैक्डोनाल्ड, क्रिस्टियन गेरिन, रिचर्ड गास्केट ने भी दूसरे राउंड में जगह बनाई।

इस बीच, पिछली बार के रनरअप इटली के मातेओ बेरेटिनी को कोरोना हो गया और वे टूर्नामेंट से हट गए। इतना ही नहीं, टूर्नामेंट के कुछ मैच सस्पेंड करने पड़े। जबकि कुछ कैंसिल हुए।

**मुगरुजा उलटफेर की शिकार-** चैंपियनशिप की नौवी सीड खिलाड़ी गरबाइन मुगुरुजा को उलटफेर का शिकार होना पड़ा है। उन्हें जर्मनी की गैर वरीय खिलाड़ी जी मिनेन ने 6-4 से हराया। पहले सेट के बाद मुगुरुजा ने गेम छोड़ दिया।

**एक साल बाद वापसी कर रही थीं सेरेना**

अमेरिकी स्टार सेरेना विलियम्स पहले की दौर का मुकाबला हार गईं। उन्हें फ्रेंच प्लेयर हार्मोनी टेन ने 7-5, 1-6, 7-6 से हराते हुए सेरेना को एक साल बाद विजयी वापसी से रोक लिया। वे पिछले सीजन में चोट के चलते हट गई थीं।

**नडाल की संघर्षपूर्ण जीत**

दूसरी सीड राफेल नडाल को पहले दौर में संघर्षपूर्ण जीत मिली है। दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी राफेल नडाल ने अर्जेंटीना के फ्रांसिसको सेरेंडीना को 6-4, 6-3, 3-6, 6-4 से हराया।

## टी20 विश्व कप से पहले इंग्लैंड के खिलाफ सात टी20टी मुकाबलों की मेजबानी करेंगे लाहौर और कराची

**कराची।** पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने ऑस्ट्रेलिया में टी20 विश्व कप से ठीक पहले इंग्लैंड के खिलाफ होने वाली सात टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच की श्रृंखला के लिए सिर्फ दो या तीन बड़े स्थलों के इस्तेमाल का फैसला किया है।

बोर्ड के सूत्रों के अनुसार शुरुआत में पीसीबी चाहता था कि फैसलाबाद और मुल्तान जैसे छोटे अंतरराष्ट्रीय स्थलों सहित अधिक स्थलों पर मैच हों लेकिन अब उसने यह योजना टाल दी है। सूत्र ने पुष्टि की कि स्थलों और तारीखों का अस्थाई मसौदा इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) को भेजा गया है और पीसीबी को जुलाई-अगस्त में ईसीबी के प्रतिनिधिमंडल के पाकिस्तान आने की उम्मीद है। दौरे की अस्थाई तारीख 15 सितंबर से दो अक्टूबर के बीच है। सूत्र ने कहा, 'कराची और लाहौर श्रृंखला में दो मुख्य स्थल होंगे और रावलपिंडी को बैक अप के रूप में शामिल किया गया है। लेकिन इंग्लैंड की टीम 17 साल बाद पाकिस्तान आ रही है और ऐसे में उम्मीद है कि कराची और लाहौर में भी मुकाबलों के लिए काफी दर्शक पहुंचेंगे।' पीसीबी ने टी20 विश्व कप के बाद नवंबर में इंग्लैंड के खिलाफ तीन टेस्ट की श्रृंखला की मेजबानी भी योजना भी बनाई है जिसके मुकाबले मुल्तान और फैसलाबाद जैसे छोटे अंतरराष्ट्रीय स्थल पर होंगे।

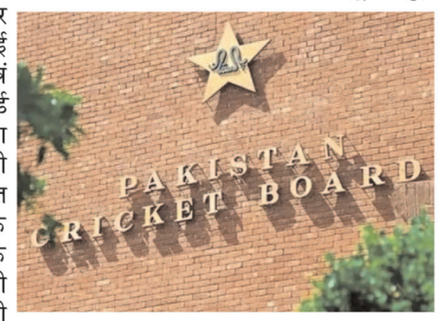


## मोईन अली ने माना, भविष्य में अच्छे लीडर बन सकते हैं रवींद्र जडेजा

**लंदन।** चेन्नई सुपरकिंग्स के लिए आईपीएल 2022 अच्छा नहीं रहा और टीम के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा के लिए तो ये किसी बुरे सपने की तरह था। जडेजा को आईपीएल 2022 की शुरूआत में महेंद्र सिंह धोनी से कप्तानी मिली लेकिन लगातार 7 मैच हारने के बाद जडेजा ने धोनी को कप्तानी सौंप दी। कप्तानी के दबाव के कारण उनके प्रदर्शन पर भी असर देखने को मिला। हालांकि इसके बावजूद मोईल अली को जडेजा पर भरोसा है और उनका मनना है कि जडेजा भविष्य में एक अच्छे लीडर बन सकते हैं।

मोईन अली ने कहा, वह (जडेजा) कप्तानी के मामले में अनुभवहीन है और सीएसके का नेतृत्व करना इस साल उसके लिए कठिन था क्योंकि हम एक टीम के रूप में अच्छा नहीं खेल रहे थे। लेकिन उनके पास अच्छा दिमाग है और वह संभावित रूप से भविष्य में एक अच्छे नेता हो सकते हैं। मोईन अली ने एमएस धोनी और रवींद्र जडेजा के कप्तान के रूप में समानताओं के बारे में बताया। उन्होंने कहा, मैं उसके अधीन खेला हूं। मैंने एमएस धोनी के नेतृत्व में भी खेला है। विशेषताओं के मामले में दोनों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं है - बहुत शांत, अपने खिलाड़ियों के प्रति बहुत वफादार। शानदार कप्तान, शानदार खिलाड़ी।

इंग्लैंड के कप्तान इयोन मॉर्गन के संन्यास के प्रभाव के बारे में पूछे जाने पर मोईन ने अपने विश्व कप विजेता कप्तान की बहुत प्रशंसा की और कहा कि बेन स्टोक्स के तहत इस समय इंग्लैंड जिस निडरता से खेल रहा है, उसकी शुरुआत मॉर्गन ने सफेद गेंद के प्रारूप में की थी। उन्होंने कहा, हम उससे पहले (2015 विश्व कप) सफेद गेंद के क्रिकेट में भयानक थे। उन्होंने खिलाड़ियों की सोच बदली। दरअसल इंग्लैंड अब टेस्ट क्रिकेट में जिस तरह खेल रहा है, वह वास्तव में उसकी वजह से है। उन्होंने दिखाया कि अगर आपके पास मानसिकता है तो आप निडर क्रिकेट खेल सकते हैं, जो हम अभी खेल रहे हैं।

**जडेजा को आईपीएल 2022 की शुरूआत में महेंद्र सिंह धोनी से कप्तानी मिली लेकिन लगातार 7 मैच हारने के बाद जडेजा ने धोनी को कप्तानी सौंप दी।**

## रोमांचक मुकाबले में जीती टीम इंडिया:दूसरे टी-20 में आयरलैंड को 4 रन से हराया, सीरीज में 2-0 से किया क्लीनस्वीप; हुड्डा का शतक

**मेलाहाइड।** हार्दिक पांड्या ने अपने कप्तानी अभियान की शानदार शुरूआत करते हुए आयरलैंड को दो टी-20 मैचों की सीरीज में क्लीन स्विप कर दिया। पहला टी-20 सात विकेट से जीतने के बाद भारत ने 4 रनों से जीत दर्ज कर सीरीज क्लीन स्विप की। हालांकि यह जीत भारत के लिए इतनी आसान भी नहीं थी। डबलिन के मैदान पर भारत ने पहले खेलते हुए दीपक हुड्डा के 104 तो संजू सैमसन के 71 रनों की बदौलत सात विकेट खोकर 225 रन बनाए थे। जवाब में आयरलैंड ने तेजतर्रार शुरूआत की। पॉल स्टर्लिंग ने 18 गेंदों में 40 तो कप्तान एंड्रयू बलबर्नी ने 37 गेंदों में 60 रन बनाए। अंत के ओवरों में हेक्टर ने 39 तो डॉकरेन ने तेजतर्रार पारी खेलकर मैच रोमांचक मोड़ तक पहुंचा दिया। आखिरी ओवर में 17 रन चाहिए थे। भारतीय टीम आखिरकार वापसी करने में सफल रही और 4 रनों से मैच जीत लिया।

**भारत (पहली पारी)**

**ईशान किशन 3 रन बनाकर आऊट**

भारतीय टीम ने ओपनिंग क्रम को एक बार फिर बदला। ईशान किशन के साथ इस बार संजू सैमसन को मौका दिया गया। संजू अच्छे टच में दिखे लेकिन ईशान महज 3 रन बनाकर आऊट हो गए। ईशान ने पहले टी-20 में टीम इंडिया को अच्छी शुरूआत दी थी। उन्होंने महज 11 गेंदों में तीन छक्कों की मदद से 25 रन बनाए थे।

**आयरलैंड ने दो मौके गंवाए**

भारत की ओर से संजू सैमसन और दीपक हुड्डा ने तेजी से रन बनाने जारी रखे। हालांकि इस दौरान वह विकेट गंवाने से बचे भी। दीपक हुड्डा को पांचवें ही ओवर में ही पगबाधा आऊट दे दिया गया था लेकिन उन्होंने डीआरएस ले लिया। गेंद लैंथ स्टंप से बाहर पिच हुई थी इस कारण उनकी विकेट बच गई। इसी तरह नौवें ओवर में डैनले को सैमसन ने सीधा शॉट मारा। गेंद गेंदबाज के हाथ से लगकर छिटक गई।

**दीपक हुड्डा के बल्ले से निकला शतक**

दीपक हुड्डा ने डबलिन के मैदान पर लगातार दूसरे टी-20 में प्रभावित किया। उनके बल्ले से शतक निकला। खास बात यह रही कि दीपक का यह महज पांचवां टी-20 मुकाबला है। उन्हें पहले दो टी-20 मुकाबलों में बल्लेबाजी करने का मौका नहीं मिला था। लेकिन इस सीरीज में उन्होंने जोरदार वापसी की। पहले टी-20 में भी उन्होंने नाबाद 47 रन बनाए थे। संजू सैमसन के बल्ले से भी 71 रन निकले। दोनों ने भारत के लिए किसी भी विकेट के लिए रिकॉर्ड पार्टनरशिप भी की।

**आयरलैंड (दूसरी पारी)**

**आयरलैंड के ओपनर्स चमके, 5 ओवर में 65 रन**

बड़ा लक्ष्य मिलने के बाद आयरलैंड के सलामी बल्लेबाज पॉल स्टर्लिंग और कप्तान एंड्रयू बालबर्नी ने टीम को तेजतर्रार शुरूआत की। खास तौर पर पॉल स्टर्लिंग ने भारतीय तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की गेंदों पर जमकर रन बरसाए। दोनों ने पहले 5 ओवर में ही टीम का स्कोर 65 पर ला खड़ा किया। स्टर्लिंग 40 रन बनाकर पवेलियन लौटे। बता दें कि डबलिन की इसी पिच पर टी-20 आई में 252 रन भी बन चुके हैं।

**स्पीडस्टर उमरान मलिक पर सबकी नजरें**

आईपीएल 2022 में 157 किमी. प्रति घंटा की रफ्तार से गेंद फेंककर चर्चा में आए उमरान मलिक पहले टी-20 में प्रभावित नहीं कर पाए थे। उनके एक ओवर से ही 18 रन गए थे। लेकिन दूसरे टी-20 में उन्होंने सधी हुई शुरूआत की। उन्होंने पहले ही ओवर में केवल छह रन दिए। लेकिन दूसरी ओवर में 14 रन लुटा दिए। उमरान ने आखिरी ओवर फेंका और अपनी टीम की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**आयरिश कप्तान ने लगाई तेजतर्रार फिफ्टी**

पॉल स्टर्लिंग के आऊट होने के बाद भी आयरिश कप्तान एंड्रयू बलबर्नी ने रन बनाने की गति को धीमा नहीं पडने दिया। बलबर्नी शुरूआत में सिर्फ छक्के लगाने में डील कर रहे थे। उन्होंने जब तक पहला चौका लगाया, छह छक्के लगा चुके थे। उन्हें रोकना टीम इंडिया के लिए मुश्किल लग रहा था। आखिरकार हर्षल पटेल ने उन्हें पवेलियन की राह दिखाई। बलबर्नी ने 37 गेंदों में तीन चौके और सात छक्कों की मदद से 60 रन बनाए।

**टेक्टर ने फिर दी टक्कर**

आयरलैंड के लिए एक बार फिर से हैरी टेक्टर रन बनाते हुए नजर आए। 17वें ओवर तक वह 39 रन बनाकर खेल रहे थे जबकि आयरलैंड को 18 गेंदों में महज 38 रनों की जरूरत थी। तभी उनकी विकेट गिर गई। टेक्टर को भुवनेश्वर कुमार ने दीपक हुड्डा के हाथों कैच आऊट कराया।

बता दें कि टेक्टर ने पहले टी-20 में भी शानदार अर्धशतक लगाया था। उनकी बल्लेबाजी से हार्दिक भी प्रभावित दिखे थे। हार्दिक ने मैच के बाद टेक्टर को अपना बल्ला भी दिया था।

## हॉकी प्लेयर बीरेंद्र लाकड़ा दोस्त की हत्या केस में फंसे, मृतक था बचपन का दोस्त

**नई दिल्ली ।** टोक्यो ओलिम्पिक कांस्य पदक विजेता भारतीय हॉकी टीम के सीनियर सदस्य रहे बीरेंद्र लाकड़ा पर अपने बचपन के दोस्त आनंद टोप्पो की हत्या में शामिल होने का आरोप लगा है। लाकड़ा के दोस्त को फरवरी में भुवनेश्वर में उसके फ्लैट के भीतर मृत पाया गया था। अब दोस्त के पिता बंधन ने आरोप लगाया है कि पुलिस लाकड़ा को बचाने की कोशिश कर रही है क्योंकि एक समय वह डीएसपी के पद पर थे।

**4 महीने से एफआईआर दर्ज नहीं हो रही**

बंधन ने कहा कि पिछले 4 महीने से वह एफआईआर दर्ज नहीं करा पा रहे और राज्य पुलिस ने उनकी मदद नहीं की जिससे उन्हें सार्वजनिक रूप से मामला रखना पड़ रहा है। लाकड़ा एशिया कप में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान भी रहे हैं। बंधन टोप्पो ने कहा कि हम और बीरेंद्र पड़ोसी हैं और आनंद उसके बचपन का दोस्त था। 28 फरवरी को बीरेंद्र ने हमें फोन किया कि आनंद बेहोश है और वह उसे अस्पताल ले जा रहा है। बाद में उसने कहा कि आनंद नहीं रहा। उन्होंने कहा कि हमने उससे पूछा कि क्या हुआ लेकिन उसने इतना ही कहा कि भुवनेश्वर आ जाओ। हम अगले दिन वहां पहुंचे और हमें स्थानीय पुलिस थाने ले जाया गया जहां अधिकारी ने कहा कि आनंद ने खुदकुशी की है लेकिन कोई सुसाइड नोट नहीं मिला।

**मित्रतें करने के बाद आनंद का शरीर दिखाया**

उन्होंने कहा कि हमें काफी मिन्नतें करने के बाद आनंद का शरीर दिखाया गया। उसके गले पर हाथ के निशान थे और पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इसे खुदकुशी बताया गया। लाकड़ा हाल ही के वर्षों में हत्या के आरोप का सामना करने वाले दूसरे खिलाड़ी और ओलंपिक पदक विजेता है। इससे पहले पहलवान सागर धनकड़ की हत्या के आरोप में दो बार के ओलंपिक पदक विजेता सुशील कुमार जेल में हैं। आनंद को इंफोसिटी के आयुष रेडियम के फ्लैट नंबर 401 में मृत पाया गया। यह मकान लाकड़ा का है। खबरों में कहा गया है कि लाकड़ा और मनजीत टेटे नामक एक लड़की उस समय वहां मौजूद थी लेकिन मृतक के पिता का कुछ और कहना है। उन्होंने कहा कि उस समय फ्लैट में चार लोग थे। एक तीसरा व्यक्ति भी था जिसे बचाया जा रहा है। मैंने एफआईआर दायर करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने कहा कि आत्महत्या है। कुछ दिन बाद मैं डीसीपी दफ्तर गया लेकिन 4 महीने इंतजार के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई तो मैंने मीडिया के सामने जाने का फैसला किया।

**मुझे ओडिशा पुलिस पर भरोसा नहीं : पिता-**उन्होंने कहा कि मुझे अपने बेटे के लिए इंसाफ चाहिए। मुझे ओडिशा पुलिस पर भरोसा नहीं है जो लाकड़ा को बचाने की कोशिश कर रही है। मैं स्वतंत्र जांच चाहता हूं। सूत्रों के अनुसार यह मामला प्रेम त्रिकोण का है हालांकि लाकड़ा और आनंद दोनों विवाहित थे। यह पूछने पर कि आनंद का मनजीत से कोई रिश्ता था, बंधन ने सीधा जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं पता लेकिन वे भुवनेश्वर में साथ पढ़े थे। अगर ऐसा कुछ होता तो मुझे पता होता। आनंद ने कभी कुछ नहीं बताया।

## प्रधानमंत्री मोदी और ट्रूडो ने हिंद-प्रशांत व जलवायु परिवर्तन सहित कई मुद्दों पर चर्चा

**जर्मनी:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने जी7 शिखर सम्मेलन से इतर यहां जलवायु परिवर्तन पर सहयोग, कोविड-19, मुक्त-खुला एवं समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र और यूक्रेन संकट समेत कई मुद्दों पर चर्चा की। ट्रूडो के कार्यालय ने मंगलवार को यह जानकारी दी। मोदी और ट्रूडो ने दक्षिणी जर्मनी में शिखर सम्मेलन के सुरम्य स्थल 'स्कलॉस एलमौ' में मुलाकात की।प्रधानमंत्री ट्रूडो के कार्यालय ने एक बयान में कहा कि नेताओं ने कनाडा और भारत के बीच बढ़ते व्यापार संबंधों के साथ-साथ दोनों देशों के लोगों के बीच लंबे समय से जारी संबंधों का स्वागत किया।

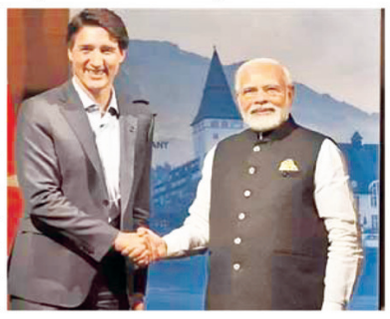

बयान के मुताबिक प्रधानमंत्रियों ने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास, कोविड-19 महामारी के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया और स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने जी-7 में चर्चा किए गए महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया, जिसमें लचीला लोकतंत्र और खाद्य सुरक्षा शामिल है। बयान में कहा गया है कि उन्होंने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण पर भी चर्चा की। भारत और अमेरिका समेत कई अन्य वैश्विक शक्तियां क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य गतिविधियों के संदर्भ में एक स्वतंत्र, खुले और संपन्न हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने की आवश्यकता के बारे में बात कर रही हैं। दोनों प्रधानमंत्रियों ने कनाडा और भारत के बीच द्विपक्षीय और जी-20, दोनों ही स्तर पर सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर चर्चा की।

## करतारपुर गलियारा पाकिस्तान की धार्मिक स्वतंत्रता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता : बाजवा

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा ने ब्रिटिश सिख सैनिकों के 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल को बताया कि ऐतिहासिक करतारपुर गलियारा धार्मिक स्वतंत्रता और सद्भाव के प्रति पाकिस्तान की अटूट प्रतिबद्धता की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। मेजर जनरल सेलिया जे हार्वे, उप कमांडर फील्ड आर्मी ब्रिटिश के नेतृत्व में समूह ने रावलपिंडी में सेना मुख्यालय में जनरल बाजवा से मुलाकात की। बैठक के दौरान, बाजवा ने प्रतिनिधिमंडल से कहा कि पाकिस्तान सभी धर्मों का सम्मान करता है और सेना के अनुसार देश में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने की आवश्यकता को भी मानता है। उन्होंने कहा कि करतारपुर गलियारा धार्मिक स्वतंत्रता और सद्भाव के प्रति पाकिस्तान की अटूट प्रतिबद्धता की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। उल्लेखनीय है कि नवंबर 2019 में, पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने औपचारिक रूप से एक समारोह में गुरु नानक के 550वें प्रकाशोत्सव के उपलक्ष्य में करतारपुर गलियारे का उद्घाटन किया था, जिससे भारतीय सिख तीर्थयात्रियों को पाकिस्तान में अपने धर्म के सबसे पवित्र स्थलों में से एक की यात्रा बिना वीजा के करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रतिनिधिमंडल ने लाहौर का दौरा किया जहां गणमान्य व्यक्तियों ने वाघा बॉर्डर पर ध्वज समारोह देखा। उन्होंने लाहौर किला, अल्लामा इकबाल मकबरा और बादशाही मस्जिद का भी दौरा किया। अपने प्रवास के दौरान, ब्रिटिश सिख सैनिकों ने देश के कई धार्मिक स्थलों का दौरा किया और ओरकजई जिले में भी गए तथा समाना किला, लॉकहार्ट किला और सारागढ़ी स्मारक भी देखा।

## इमरान खान ने शहबाज़ सरकार पर लगाया ''लोगों को पीड़ा'' देने का आरोप

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान ने मंगलवार को कहा कि उनकी सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के दबाव के बावजूद महंगाई का बोझ जनता पर नहीं डाला। इमरान ने शहबाज़ सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि सरकार ने खुद की सहूलियत के लिए लोगों को 'पीड़ा' दी है।

खान पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष हैं। उन्होंने देश की समग्र राजनीतिक और आर्थिक स्थिति पर चर्चा करने के लिए अपनी पार्टी की एक बैठक के दौरान यह टिप्पणी की। बैठक में दो जुलाई को इस्लामाबाद में महंगाई विरोधी रैली आयोजित करने से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

# पत्रकारों को मिले निडर होकर अपनी बात कहने की अनुमति, जुबैर की गिरफ्तारी पर यूएन का बयान

**संयुक्त राष्ट्र ।** भारत में ऑल्ट न्यूज के सह संस्थापक मोहम्मद जुबैर की गिरफ्तारी पर संयुक्त राष्ट्र का बयान सामने आया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस के प्रवक्ता ने कहा, पत्रकार जो कुछ भी लिखते हैं, ट्वीट करते हैं या कहते हैं, उसके लिए उन्हें जेल नहीं भेजा जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि लोगों को निडर होकर अपनी बात कहने की अनुमति दी जाए। दरअसल, मोहम्मद जुबैर को 2018 के एक मामले में सोमवार को दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उन पर हिंदू देवता के खिलाफ आपत्तिजनक ट्वीट करने का आरोप है।

**पत्रकारों को मिले बात कहने की इजाजत**

जुबैर की गिरफ्तारी संबंधी एक सवाल पर पाकिस्तानी पत्रकार को जवाब देते हुए प्रवक्ता स्टीफेन दुजारिक ने कहा, दुनिया में कहीं पर भी यह बेहद जरूरी है कि लोगों को खुलकर अपनी कहने की अनुमति दी जाए। पत्रकारों को मुक्त होकर और किसी भय के बिना अपनी बात कहने की इजाजत होनी चाहिए। उन्होंने कहा, पत्रकार जो कुछ भी कहते हैं, लिखते हैं या ट्वीट करते हैं इसके लिए उन्हें जेल नहीं भेजा जाना चाहिए। यह दुनिया में हर जगह लागू होता है।

**प्रेस की स्वतंत्रता का स्तर नीचे गिरा**

वाशिंगटन में सीपीजे के एशिया कार्यक्रम समन्वयक स्टीवन बटलर ने कहा, पत्रकार मोहम्मद जुबैर की गिरफ्तारी से भारत में प्रेस की स्वतंत्रता का स्तर और नीचे चला गया है। सरकार ने सांप्रदायिक मुद्दों से जुड़ी खबरें प्रकाशित करने वाले प्रेस के सदस्यों के लिए एक असुरक्षित शत्रुतापूर्ण माहौल बना दिया है। उन्होंने कहा, अधिकारियों को तत्काल और बिना किसी शर्त के जुबैर को रिहा करना चाहिए और उन्हें बिना किसी दखलंदाजी के अपनी पत्रकारिता करने देना चाहिए।

## WHO की रिपोर्ट में खुलासा : मंकीपॉक्स से नाइजीरिया में पहली मौत, दुनिया में अब तक मिले 3413 मामले

**नाइजीरिया।** विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नाइजीरिया में मंकीपॉक्स से पहली मौत होने की पुष्टि की है। जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया के 50 देशों में अब तक मंकीपॉक्स के 3413 मामले मिले हैं। इनमें से नाइजीरिया में 41 संक्रमित हैं।

भारत के लिए राहत की बात यह है कि यहां अभी मंकीपॉक्स का एक भी मरीज नहीं है। उत्तर प्रदेश-महाराष्ट्र सहित करीब सात राज्यों से जीनोम सीक्वेंसिंग के लिए भेजे गए सैंपल में कोई पॉजिटिव रिपोर्ट नहीं मिली है। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार 17 से 22 जून के बीच आठ नए देशों में 1310 मामले सामने आए हैं। भारत में बीते माह स्वास्थ्य मंत्रालय ने प्रत्येक संदिग्ध सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग कराने का आदेश दिया था। पुणे स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी (एनआईवी) की लैब में सैंपल भेजने के लिए कहा गया था। एक मई से 23 जून के बीच 16 सैंपल की जांच की गई, जिनमें एक में भी मंकीपॉक्स संक्रमण की पुष्टि नहीं हुई है।

**दो सप्ताह में आठ सैंपल, सभी फेल**

एनआईवी निदेशक डॉ. प्रिया अब्राहम ने बताया कि दो सप्ताह में आठ सैंपल आए, लेकिन सभी फेल हो गए। किसी व्यक्ति के संक्रमित होने का संदेह होने के लिए बीते 21 दिन के दौरान उनकी यात्रा विवरण होना आवश्यक है। इसके अलावा सूजन, बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द और गहरी कमजोरी जैसे लक्षण महसूस किए जा रहे हैं तो उसे तत्काल जांच करानी चाहिए।

**इन देशों में सबसे ज्यादा मामले**

रिपोर्ट के अनुसार, ब्रिटेन में 793, स्पेन में 520, पुर्तगाल में 317, नीदरलैंड में 167, जर्मनी में 521, फ्रांस में 277, अमेरिका में 147 और कनाडा में 210, बेल्जियम में 77, इटली में 85 और स्विट्जरलैंड में 46 मरीज अब तक मंकीपॉक्स संक्रमित मिल चुके हैं।

## पाक ने भारतीय युवाओं को अग्निपथ योजना के खिलाफ भड़काने की थी कोशिश, सोशल मीडिया पर खेला जा रहा था गंदा खेल

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान को भारत के निजी मसलों में बेवजह कूदने की आदत है, हाल ही में जब केंद्र सरकार की सेना में भर्ती के लिए अग्निपथ योजना को लेकर विरोध थम गया है, तो पाकिस्तान अभी भी देश के युवाओं को सोशल मीडिया के जरिए भड़काने की कोशिश कर रहा है।

अग्निपथ योजना को लेकर देश भर में कई जगहों पर विरोध प्रदर्शन हिंसक हो गए थे, इस दौरान कई सार्वजनिक संपत्तियों में आग लगा दी गई। जबकि ये विरोध सरकार द्वारा योजना के संबंध में आशंकाओं को दूर करने के लिए कई संशोधनों और समर्थन उपायों की घोषणा के साथ थम गया, लेकिन इस विरोध को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक समांतर अभियान चलाया जा रहा है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान की डिजिटल मीडिया टीम भारत में अग्निपथ के विरोध को हवा दे रही है।

यह उल्लेख करना भी महत्वपूर्ण है कि अतीत में भी ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जब पाकिस्तान में नफरत फैलाने वाले भाषण फैलाने के लिए ट्विटर अकाउंट बनाए गए थे। कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का विरोध हो या नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का विरोध, रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान भारत विरोधी कथा का केंद्र बिंदु और उत्पत्ति का बिंदु रहा है। एक मीडिया रिपोर्ट के दस्तावेजों के अनुसार जब अग्निपथ विरोध पर ट्वीट करने की बात आती है, तो पाकिस्तान से ऑपरेट होने वाले पांच ट्विटर अकाउंट सबसे अधिक सक्रिय थे।

## ऑस्ट्रेलिया में धार्मिक झुकाव कम:भारतीयों की आबादी 48फीसदी बढ़ी, आधे से ज्यादा कम हुई ईसाईयों की आबादी

**कैनबरा।** ऑस्ट्रेलिया में भारतीयों की आबादी सबसे तेजी से बढ़ रही है। यह खुलासा ऑस्ट्रेलियन ब्यूरो ऑफ स्टैटिस्टिक्स की ओर से जारी आंकड़ों से हुआ है। 2016 के बाद से ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों की आबादी लगभग 48 प्रतिशत बढ़ी है।

ताजा जनगणना के मुताबिक 2021 में 1 जून को देश में 6,73,352 लोग रह रहे थे जो कि 2016 की संख्या (4,55,389) से 47.86 प्रतिशत ज्यादा थे। विदेश में जन्मे इन लोगों में भारतीयों की संख्या सबसे ज्यादा बढ़ी है। भारत ने चीन और न्यूजीलैंड को पीछे छोड़ दिया है और अब ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बाद तीसरे नंबर पर आ गया है।

**दोगुनी हुई नेपालियों की भी संख्या**

आस्ट्रेलिया की लगभग आधी आबादी (48.6फीसदी) ऐसी है, जिनके माता या पिता में से कम से कम कोई एक विदेश में जन्मा था। 2017 की जनगणना के बाद से देश में 10 लाख से ज्यादा (1,020,007) अप्रवासी आकर बसे हैं। सबसे ज्यादा विदेशी भारत से आए हैं। उनकी संख्या में 2,17,963 लोगों की वृद्धि हुई है। दूसरी सबसे ज्यादा वृद्धि नेपाली मूल के लोगों की है, जो दोगुनी से भी ज्यादा (123.7 फीसदी) है। 2016 के बाद से 67,752 ज्यादा लोग नेपाल से ऑस्ट्रेलिया पहुंचे।

44% लोग ईसाई | 39% लोग किसी धर्म को नहीं मानते | 2.7% हिंदू लोग

***ताजा जनगणना के मुताबिक 2021 में 1 जून को देश में 6,73,352 लोग रह रहे थे जो कि 2016 की संख्या (4,55,389) से 47.86 प्रतिशत ज्यादा थे। विदेश में जन्मे इन लोगों में भारतीयों की संख्या सबसे ज्यादा बढ़ी है।***

**ईसाईयों की संख्या कम हुई** -पहली बार आधे से भी कम ऑस्ट्रेलियाई (44फीसदी) नागिरकों ने खुद को ईसाई बताया है। 2016 में ये संख्या 50फीसदी थी। जबकि 50 साल पहले ऑस्ट्रेलिया में 90फीसदी ईसाई थे। हालांकि, देश में आज भी ईसाई ही सबसे ज्यादा हैं। कुल आबादी में हिंदू 2.7फीसदी हैं। 39फीसदी लोग ऐसे लोग भी हैं, जो किसी धर्म को नहीं मानते। इनकी संख्या 9फीसदी बढ़ी है।

## 8 साल के बच्चे ने बच्ची को गोली मारी: पिता की गन ढूंढकर लाया और गोली चला दी; एक साल की मासूम की मौत

**फ्लोरिडा।** अमेरिका के फ्लोरिडा के एक मोटल में 8 साल के बच्चे ने 1 साल की बच्ची को गोली मार दी। इस दौरान 2 साल की एक अन्य बच्ची भी घायल हो गई। बच्चे ने गलती से अपने पिता की गन से गोलियां चला दीं। पुलिस ने इस मामले में बच्चे के पिता को अरेस्ट कर लिया है।

**बेटे ने पहले बंदूक ढूंढी**

एस्कैम्बिया काउंटी के शेरिफ चिप सिमंस ने कहा- घटना पिछले हफ्ते की है। लड़के के पिता रॉड्रिक ड्वेन रान्डेल ने गन पेनसाकोला मोटल के एक कमरे की अलमारी में छिपाकर रखी थी। जैसे ही वो कमरे से बाहर निकले, उनके बेटे ने बंदूक ढूंढ ली और गोलियां चला दीं। दोनों बच्चियां उसके पिता की प्रेमिका की थीं। घटना में मारी जाने वाली बच्ची का नाम केसी बास था।

**पिता ने की सबूत छिपाने की कोशिश**

सिमंस ने कहा- घटना के बाद रॉड्रिक ने सबूतों के साथ छेड़छाड़ की। उसने कमरे पड़ी ड्रग्स और गन को दोबारा छिपाने की कोशिश की। एक हफ्ते की जांच के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। लड़के के पिता पर गन रखने, लापरवाही बरतने और सबूतों से छेड़छाड़ करने के आरोप लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि घायल बच्ची के जल्द ठीक होने की उम्मीद है।

**पेरेंट्स की लापरवाही के और भी मामले**

शेरिफ चिप सिमंस ने बताया कि शहर में पहले भी ऐसे मामले सामने आ चुके हैं, जहां माता-पिता की लापरवाही से बच्चों को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने बताया कि हाल ही में एक महिला ने अपने 1 साल के बेटे को बंद कार में छोड़ दिया था। कार घंटों धूप में खड़ी रही। महिला बेटे को छोड़कर एक बार में चली गई थी। कार के खिड़की-दरवाजे सब बंद थे। गर्मी की वजह से बच्चे की तबीयत खराब हो गई थी।

## कोलंबिया की जेल में आग, 51 कैदियों की मौत, 24 घायल

**बोगोटा।** पश्चिमी कोलंबियाई शहर तोलुआ की एक जेल में मंगलवार को आग लगने से 51 कैदियों की मौत हो गई और 24 अन्य घायल हो गए। घायलों में गार्ड्स भी शामिल हैं। यह हादसा तब हुआ, जब कैदियों ने दंगा करने के बाद गद्दों में आग लगा दी।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार तड़के क्षमता से ज्यादा कैदियों से ठसाठस भरी कोलंबियाई जेल के अंदर आग लग गई। कोलंबिया के न्याय मंत्री विल्सन रुइज ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि लगभग 2 बजे (स्थानीय समयानुसार) कैदियों के बीच लड़ाई छिड़ गई। एक कैदी ने विवाद के दौरान एक गद्दे में आग लगा दी। इसके बाद आग की लपटें पूरे जेल में फैल गईं। रुइज ने कहा, 'आग की लपटें बहुत तेज थीं। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए दमकलकर्मियों के आने का इंतजार करना पड़ा।' उन्होंने कहा, 'इस जेल में कैदी या तो मामूली सजा काटते हैं या अपनी कैद के आखिरी कुछ महीनों में रहते हैं। कोलंबिया की जेलों में इस समय बहुत भीड़भाड़ है।

## कैपिटल हिल हिंसा पर नया खुलासा:ट्रम्प जानते थे कि उनके समर्थकों के पास हथियार हैं, फिर भी उन्होंने भीड़ को उकसाया

**क्रेमेनचुक ।** अमेरिका में 6 जनवरी 2021 को कैपिटल हिल (अमेरिकी संसद) पर पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के समर्थकों के हमले को लेकर बुधवार को सुनवाई हुई। इसे 2020 के राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों को पलटने की कोशिश माना गया था। मामले की सुनवाई कर रही अमेरिकी कांग्रेस कमेटी के सामने ट्रंप की सहयोगी कैसिडी हचिंसन ने गवाही दी।

कैसिडी की गवाही ट्रम्प के खिलाफ रही। उन्होंने कहा कि हिंसा के दौरान डोनाल्ड ट्रम्प जानते थे कि उनके समर्थकों के पास हथियार हैं। वे समर्थकों का साथ देने के लिए कैपिटल हिल जाना चाहते थे। भीड़ में शामिल होना चाहते थे।ट्रम्प ने सीक्रेट एजेंट पर हमला किया था

इतना ही नहीं ट्रम्प को जब एक सीक्रेट सर्विस एजेंट ने कैपिटल हिल ले जाने मना किया तो उन्होंने उसका गला पकड़ लिया। इसके अलावा उन्होंने अपने सीक्रेट सर्विस लिमोसिन ड्राइवर की जगह खुद स्टीयरिंग व्हील संभालने की कोशिश की।

कैसिडी हचिंसन ने कहा कि तत्कालीन प्रेसिडेंट ट्रम्प जानते थे कि हिंसा होगी, लेकिन उन्होंने इस स्थिति को नजरअंदाज कर दिया।

कैसिडी हचिंसन ने कहा कि तत्कालीन प्रेसिडेंट ट्रम्प जानते थे कि हिंसा होगी, लेकिन उन्होंने इस स्थिति को नजरअंदाज कर दिया।

**गुस्साए ट्रम्प किसी की बात सुनने तैयार नहीं थे**

हचिंसन ने कहा- ट्रम्प के हेड ऑफ सिक्योरिटी स्टाफ बॉबी एंगल ने मुझसे कहा कि बीस्ट (अमेरिकी राष्ट्रपति की गाड़ी) में जब ट्रम्प बैठे तो वह कैपिटल हिल जाना चाहते थे। उन्हें बताया गया कि वहां नहीं जा सकते हैं, वहां बहुत खतरा है। इस पर वो गुस्सा हो गए और कहा कि मैं राष्ट्रपति हूं और मुझे कैपिटल लेकर चलो।

**अब तक हुई सुनवाई की प्रमुख बातें**

ट्रम्प को बताया गया था कि उनके समर्थकों के पास हथियार हैं। वे ये जानते थे कि हिंसा होगी। इसके बाद उन्होंने कहा- मुझे फर्क नहीं पड़ता की उनके पास हथियार हैं। वो (समर्थक), मुझे चोट नहीं पहुंचाएंगे। उन्होंने हथियारों से लैस समर्थकों को कैपिटल हिल जाने को कहा।

सांसदों की समिति ने अपनी रिपोर्ट में आरोप लगाया कि 6 जनवरी 2021 को कैपिटल हिल में हिंसा कोई दुर्घटना नहीं थी। यह ट्रम्प का अंतिम स्टैंड था। ट्रम्प ने दंगों को अंजाम दिया और तख्तापलट की कोशिश की।

व्हाइट हाउस 3 धड़ों में बट गया था। एक ग्रुप ट्रम्प से हिंसा रोकने के लिए कह रहा था। इस ग्रुप में उनकी बेटी इवांका ट्रम्प शामिल थीं। दूसरे ग्रुप में ट्रम्प के कुछ एडवाइजर थे। वो मामले को लेकर न्यूट्रल थे। वो जानते थे कि एक्शन लिया जाना चाहिए, लेकिन ट्रम्प तुरंत कार्रवाई नहीं करेंगे। तीसरा ग्रुप डिफलेक्टिंग-ब्लेम कैटेगरी का था। इसमें वाइट हाउस के पूर्व चीफ ऑफ स्टाफ मार्क मीडोज शामिल थे। इस ग्रुप का कहना था कि जो हिंसा कर रहे थे वो ट्रम्प समर्थक नहीं थे।

**इस मामले में कोर्ट भी ट्रम्प को मान चुका है दोषी**

कैपिटल हिल हिंसा मामले में अमेरिकी अदालत ने अप्रैल 2-22 में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ फैसला सुनाया था। अदालत ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कांग्रेस में बाधा डालने और अपनी चुनावी हार को उलटने के लिए अपने वाइस प्रेसिडेंट माइक पेंस पर दबाव डाला। ऐसा करके उन्होंने गुंडागर्दी की। ट्रम्प को शायद पता था कि चुनावी धोखाधड़ी के उनके आरोप निराधार थे और इसलिए यह साजिश गैरकानूनी थी।

## रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव: बाइडेन ने यूरोप में बढ़ाए अमेरिकी सैनिक व हथियार

**मैड्रिड।** रूस और यूक्रेन के बीच लगातार जारी युद्ध का परिणाम अमेरिकी एवं यूरोपीय रक्षा तैनाती पर दिखने लगा है। अब अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूरोप में अमेरिकी सैनिक और हथियार बढ़ाने का निर्णय लिया है।

मैड्रिड में आयोजित ट्रांस अटलांटिक गठबंधन के शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने यूरोप में नाटो बलों के अमेरिकी सुदृढ़ीकरण की घोषणा करते हुए कहा कि नाटो जमीन, हवा और पानी, सभी जगहों और सभी दिशाओं में मजबूत किया जाएगा। नाटो महासचिव जेन्स स्टोल्टेनबर्ग के साथ बैठक में उन्होंने कहा कि यूरोप में तैनात किये जा रहे अतिरिक्त बलों में नए साजोसामान और सैनिक शामिल किए गए हैं। बाइडेन की घोषणा के मुताबिक रोटा, स्पेन में अमेरिकी नौसैनिक विध्वंसकों के बेड़े को चार से बढ़ाकर छह कर दिया गया है। पोलैंड में 5वीं सेना कोर का स्थायी मुख्यालय स्थापित किया जा रहा है।

रोमानिया में एक अतिरिक्त रोटेशनल ब्रिगेड की बात कही गयी, जिसमें तीन हजार सैनिकों और दो हजार कर्मियों की कॉम्बैट टीम शामिल है। इसके अलावा बाल्टिक देशों में बढ़ी हुई रोटेशनल तैनाती, ब्रिटेन के लिए एफ-35 स्टील्थ प्लेन के दो अतिरिक्त स्क्वाड्रन के साथ जर्मनी और इटली में अतिरिक्त वायु रक्षा और अन्य क्षमताओं का एलान भी किया गया।

बाइडेन ने कहा कि हम अपने सहयोगियों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करने जा रहे हैं कि नाटो हर क्षेत्र में सभी दिशाओं से आने वाले खतरों का सामना करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि हम आगे बढ़ रहे हैं, यह साबित करते हुए कि नाटो की अब पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है और यह पहले की तरह ही महत्वपूर्ण है। नाटो महासचिव स्टोल्टेनबर्ग ने टिप्पणी की कि नाटो का विस्तार यूक्रेन पर हमला करने वाले रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन की उम्मीद के विपरीत है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।